THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_186004
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/D23H Accession No. G.H.293

Author दास्तावस्की।

Title हिज एक्सलेन्सी।

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिज़ एक्सलैंसी

[हास्य-व्यंग्य-भरा उपन्यास]

मूल लेखक

दास्तवस्की

अनुवादक

उपेन्द्रनाथ अश्क

भैरवप्रसाद गुप्त

प्रकाशक

नीलाभ प्रकाशन गृह

५ खुसरो बाग़, इलाहाबाद-१.

दो रुपये आठ आने

प्रकाशक
नीलाभ प्रकाशन गृह, ५ खुसरो बाग़ रोड, इलाहाबाद १.
मुद्रक
जॉब प्रिंटर्स, ६६ हिवेट रोड, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

बड़े उपन्यासों के साथ-साथ रूस के अमर कथाकार दास्तवस्की ने लघु उपन्यास और बड़ी-छोटी कहानियाँ भी लिखीं। 'हिज़ एक्सलेंसी' एक लघु उपन्यास है, जो दास्तवस्की की गहरी अन्तर्दृष्टि; घोर व्यंग; दलितों के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति और अभिजातवर्ग के खोखले आदर्शवाद पर उसकी गहरी पकड़ का परिचय देता है। दास्तवस्की शेक्सपियर ही की तरह ट्रेजडी का मास्टर समझा जाता है। उसके उपन्यासों में ऐसे स्थल भी आते हैं कि मन उदासी से अभिभूत हो उठता है। 'हिज़ एक्सलेंसी' जहाँ उदास करता है, वहाँ हँसाता भी है। शुरू से आखिर तक उसका व्यंग अचूक और पैना है, लेकिन उपन्यास पढ़ चुकने के बाद लगता है कि ट्रेजडी यहाँ भी कम नहीं। पूरी कहानी की हास्यास्पदता में गहरी वेदना, कुछ अजीब-सा दर्द और ट्रेजडी छिपी हुई है। अपनी प्रतिभा से

आक्रान्त, अपने शानदार ऐवानों की विलासिता का आनन्द उठाते हुए जो लोग समझते हैं कि वे ग़रीबों के दुख-दर्द को जानते हैं, उनकी तकलीफ़ को समझते हैं, उनके स्तर पर उतर सकते हैं, उन्हें अपने साथ मिला सकते हैं और उनसे मिल सकते हैं, वे कैसे घोर भ्रम में हैं, इसकी पोल अपने इस उपन्यास में बड़े ही दिलचस्प ढंग से दास्तवस्की ने खोली है।

गत वर्ष हमने अमरीका के प्रसिद्ध उपन्यासकार स्टीनबेक का उपन्यास 'ये आदमी ये चूहे' हिन्दी पाठकों के सम्मुख रखा था। इस वर्ष हम दास्तवस्की का यह उपन्यास हिन्दी पाठकों को दे रहे हैं और आशा करते हैं कि वर्ष के खत्म होते-न-होते हम 'चेखव' का लघु-उपन्यास 'रंगसाज़' भी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर देंगे, जो उस महान कथाकार के कलम से निकला, जिसका प्रभाव संसार भर के लेखकों पर है।

यदि सहृदय पाठकों का सहयोग हमारे साथ रहा, तो हम आशा करते हैं कि पूर्व और पश्चिम के उच्चतम साहित्य का अनुवाद अधिकारी विद्वानों-द्वारा प्रस्तुत कर, हम हिन्दी पाठकों के सम्मुख रखेंगे।

पाठकों के मनोरंजन और जानकारी के लिए हम 'हिज़ एक्सलेंसी' के लेखक, रूस के उस अमर कलाकार की संक्षिप्त जीवनी भी साथ में प्रस्तुत कर रहे हैं, जो एक बार मौत को छू कर लौटा, तो अमरत्व पाकर ही फिर उसके पास गया।

प्रकाशक

दास्तवस्की

'मन्द भाग्य और गरीब लेखक, जिसे उसके
प्रशंसकों ने शाहों की तरह दफ़नाया'

१८४६, सर्दियों की सुबह, दिसम्बर का महीना, आसमान पर गहरे बादल घिरे थे और बाहर बर्फ़ गिर रही थी, मास्को जेल की एक तन्हा कोठरी में अट्ठाइस वर्ष का एक युवा लेखक बैठा था। अभी एक घंटा पहले उसे मौत की सज़ा का हुक्म सुनाया गया था। इस एक घंटे के बीच उसने क्या-क्या न सोचा था, समय के इस छोटे-से पुल के नीचे से स्मृतियों के कौन-से दरिया न गुज़र गये थे!

उसने एक बड़े विपन्न घराने में जन्म लिया था। पिता उसके अस्पताल में डाक्टर थे। परिश्रमी और धर्म-परायण। लेकिन इतने ग़रीब थे कि अपने पाँच बच्चों के साथ दो कमरों में ज़िन्दगी गुज़ारने को विवश थे। युवक बचपन ही से बीमार और शरमीला था, पर उसकी मेधा गजब की थी। स्कूल की अन्तिम परीक्षा में वह तीसरे नम्बर पर रहा था। लेकिन जिस चीज़ ने उसे अपने क्षेत्र में लोकप्रिय बना दिया था, वह उसकी यह सफलता न थी, बल्कि यह कि उसने स्कूल के दिनों से ही एक उपन्यास लिखना आरम्भ किया था, जो पूरा होने पर प्रसिद्ध कवि नेक्रासोव की पत्रिका में छपा, जिसमें तालस्ताय, तुर्गनेव, आदि प्रतिष्ठित साहित्यिकों की कृतियाँ छपती थीं। और यों अपनी पहली कृति ही से वह रूस के साहित्य-क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया था।

घोर ग़रीबी में दिन गुज़ारने के कारण ग़रीबों के प्रति एक अपार हमदर्दी और अत्याचार के प्रति एक असीम विद्रोह युवक के हृदय में था। अपने साथियों के साथ वह देश की तत्कालीन समस्याओं की चर्चा करता था और वे लेखनी-द्वारा देश में जागरूकता उत्पन्न करने के सपने लेते थे।

लेकिन तभी जब उसके मित्र उसके उज्ज्वल भविष्य के सपने देख रहे थे और स्वयं उसकी महत्वाकांक्षाएँ आसमान में तरारे भर रही थीं, सम्राट ज़ार के हुक्म से उसे और उसके उन्नीस साथियों को क्रांतिकारी सरगर्मियों में भाग लेने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिया गया।

आठ महीने जेल की यातना सहने के बाद, सर्दियों की उस सुबह उसे अपने भाग्य का पता चला था।

सज़ा कब दी जायगी, उसे यह न बताया गया था। लेकिन अभी मुश्किल से एक घंटा बीता था कि उसकी कोठरी का दर्वाज़ा फिर खुला, जेलर अंदर आया और उसने उसे उठकर साथ चलने का आदेश दिया।

युवक उसके पीछे-पीछे बाहर आया। बाहर अहाते में उसके उन्नीस साथी पहले से मौजूद थे। चार-चार की टोलियों में, एक-एक सिपाही के पहरे में, उन्हें गाड़ियों पर बैठाया गया और गाड़ियाँ चल दीं।

"हम कहाँ जा रहे हैं ?" युवक ने सिपाही से पूछा।

"मुझे बताने का हुक्म नहीं !" सिपाही ने रुखाई से उत्तर दिया।

युवक ने गाड़ी की खिड़की से देखने का प्रयास किया, लेकिन बाहर गिरती बर्फ ने खिड़की के शीशों को धुँधला दिया था।

कुछ देर बाद गाड़ियाँ मास्को के प्रसिद्ध सिमोनोस्की चौक में रुकीं। चौक के मध्य एक बड़ा चबूतरा बना था, जिस पर अपराधियों को गोली मारने के लिये टिकटियाँ लगी थीं...

कमीज़ों के अलावा उन्हें और सब कपड़े उतारने का हुक्म दिया गया और सख्त पहरे में, तीन-तीन की टोलियों में उन्हें चबूतरे पर ले जाया गया।

कुछ क्षण बाद शेरफ आया। जेब से उसने उनकी मौत का परवाना निकाला, और उसे ऊँची आवाज़ में पढ़कर सुनाया और अन्तिम शब्द बीस बार दुहराये, "सज़ा दी जाती है कि गोली मार दी जाय"....."सज़ा दी जाती है कि गोली मार दी जाय" "सज़ा दी जाती है....."

तेज़ नुकीली कील की तरह ये शब्द उस भावुक युवक के दिमाग़ में धँसते चले गये। लेकिन तभी अचानक सामने आकाश में बादल छट गये, बर्फ़ गिरना बन्द हो गयी और बादलों के पीछे से मुस्कराते हुए सूरज की किरणें सामने गिरजा घर के सुनहरी गुम्बद को चूमने लगीं।

युवक ने उस सूरज को और उन किरणों को देखा और उसे लगा कि यह सब तमाशा है, वे उन्हें मारेंगे नहीं और उसने अपनी यह शंका अपने साथी के कानों में फुसफुसा दी।

साथी ने उत्तर नहीं दिया, केवल चबूतरे पर एक कतार में पड़े बीस ताबूतों की ओर इशारा कर दिया, जिन्हें एक बहुत बड़े कपड़े से ढँक दिया गया था।

युवक की आशा पर पानी फिर गया। लेकिन डर का कोई आसार उसने अपने चेहरे पर प्रकट नहीं होने दिया। पहली टोली के तीन साथी टिकटियों से बाँध दिये गये, उनके सिरों पर थैले-से डाल दिये गये। सिपाहियों ने बन्दूकें तान लीं और गोली दाग़ने का हुक्म सुनने को तैयार खड़े थे। दूसरी टोली में पहले

उसी का नम्बर था। युवक के पास जीवन के शायद चन्द ही मिनट शेष थे। उसने जल्दी से अपने दोनों साथियों को चूमा, अपने भाई और उसके बच्चों की याद की और फिर अपने साथियों से कुछ इधर-उधर की बातें करता रहा, पर रह-रह कर उसकी दृष्टि सूरज की चमकती किरणों में जगमगाते गिरजे के गुम्बज पर जा अटकती। उसे लगा कि किरणें शायद किसी अज्ञात देश से आ रही हैं, जहाँ कुछ ही क्षणों में वह भी जाने वाला है।

तभी कुछ शोर-सा मचा, सिपाहियों ने अपनी बन्दूकें झुका लीं और पीछे हट गये, युवक ने देखा, एक घुड़सवार सफेद रूमाल हिलाता सरपट भागा आ रहा है। वह सम्राट का हुक्म लाया था। अपराधियों की जान बख्श दी गयी थी। मौत की सज़ा को सम्राट ने सायबेरिया में आठ वर्ष कठिन कारावास के दण्ड से बदल दिया था।

यही युवक रूस का प्रसिद्ध उपन्यासकार दास्तवस्की था।

दास्तवस्की का स्वास्थ्य कभी अच्छा न रहा था, इस घटना का उस पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। सम्राट ज़ार, जैसा कि बाद में मालूम हुआ, युवकों को सबक़ देना चाहता था—ऐसा सबक़, जिसे वे उम्र भर याद रखें! गोली से उड़ा देने का हुक्म तो उसका एक मज़ाक था! लेकिन वह मसल है न कि 'किसी की जान गयी, आपकी अदा ठहरी!' उन बीस अपराधियों में कोई भी ऐसा न था, जिसे इस क्रूर मज़ाक से सख्त हानि न पहुँची हो। दास्तवस्की ने स्वयं एक जगह लिखा है कि जब उसके साथियों को टिकटियों से उतारा गया, तो एक पागल हो चुका था और फिर जीवन भर होश में नहीं आ सका। एक दूसरे के फेफड़े, उस सरदी में केवल कमीज़

पहने खड़े रहने से, ख़राब हो गये और वह बाद में यक्ष्मा से मर गया। स्वयं दास्तवस्की आधी-आधी रात को उठ-उठ बैठता रहा और उसे लगता रहा, जैसे उसने अभी-अभी शेरफ़ को सज़ा का हुक्म पढ़ते सुना है।

उस ज़माने में सायबेरिया की जेलों में अलग-अलग कोठरियों की व्यवस्था न थी। दास्तवस्की को बड़े क्रूर, बर्बर और भयानक अपराधियों का संगति में रहना पड़ा और वहीं उसने जीवन का निम्नतम स्तर देखा। अपने जेल जीवन में ही दास्तवस्की ने अपना उपन्यास 'मुर्दों का घर' लिखा था।

इस उपन्यास के बारे में तालस्ताय ने एक बार अपने और दास्तवस्की के साझे मित्र स्टारख़ोव को लिखा—

> 'कुछ दिन पहले मैं बीमारी के कारण आराम लेने को विवश हो गया। आराम की उस मजबूरी को दास्तवस्की के उपन्यास 'मुर्दों का घर' ने सुखद बना दिया। यद्यपि मैंने इसे पहले भी एक बार पढ़ा था, लेकिन मैं इसका अधिकांश भूल गया था। सारे आधुनिक साहित्य में, पुश्किन समेत, मुझे इससे अच्छी कोई पुस्तक नहीं लगी। खूबी लेखनी की नहीं, बल्कि दृष्टिकोण की है, जो आश्चर्यजनक तौर पर सच्चा, स्वभाविक और क्रिश्चियन है—सचमुच ऊँचा उठाने वाला! बहुत दिनों से मुझे किसी पुस्तक को पढ़ने में इतना सुख नहीं मिला।'

आठ वर्ष का दंड भोगने के बाद उसने अपने प्रसिद्ध उपन्यास "अपराध और सज़ा' 'आपमानित,' 'बुद्धू', 'भुताहे' और 'ब्रदर्ज़ करमाज़ॉव' लिखें। इनमें से 'अपराध और सज़ा' और 'ब्रदर्ज़ करमाज़ॉव' संसार के प्रसिद्धतम उपन्यासों में गिने जाते हैं।

दास्तवस्की ने अपने जीवन में घोर दुख और आतंक देखा, लेकिन जैसे मौत के आतंकमय वातावरण में भी उसकी दृष्टि

सूरज की किरणों से चमकते सुनहरी गुम्बद पर लगी रही थी, उसी तरह क्रूरतम अपराधियों और अत्यन्त विपन्न लोगों के बीच रहकर भी, जहाँ मानव की निम्नतम प्रवृत्तियों को निकट से देखने का उसे अवसर मिला, दास्तवस्की की दृष्टि ऊँचे आदर्शों पर लगी रही। आग में पड़कर सोना जिस प्रकार कुन्दन बन जाता है, उसी प्रकार दास्तवस्की का साहित्य उस दुख, आतंक और यातनाओं की आग में से महान बनकर निकला।

दास्तवस्की ने अधिकांश जीवन क्योंकि घोर विपन्नता में बिताया, इसलिए उसे कई बार धारा-प्रवाह लिखना पड़ा, कई बार तो ऐसा हुआ कि अपने लिखे को देखने का भी अवकाश उसे नहीं मिला। इसी कारण तुर्गनेव का-सा परिमार्जन और तालस्ताय की-सी अवकाश-साध्य कला उसे प्राप्त नहीं हुई, पर उसके उपन्यासों में कई स्थलों पर बहते प्रताप की-सी रवानी है। मानव के घनीभूत दुखों और उसके बर्बर आतंक, उसके बड़प्पन और उसकी घोर हास्यास्पदता का जो चित्रण उसने किया है, वह उसके समकालीनों में नहीं मिलता। दास्तवस्की अपनी कला के गुण-दोषों से अनभिज्ञ रहा हो, ऐसी बात नहीं। एक बार उसने अपनी पत्नी आना से कहा कि 'यदि मुझे भी तालस्ताय और तुर्गनेव की तरह अपने उपन्यास लिखने को दो-दो, तीन-तीन वर्ष मिल जायँ, तो मैं ऐसी चीज़ें लिख जाऊँ, जिन्हें सौ साल बाद भी लोग याद रखें।'

दास्तवस्की के बड़े उपन्यासों में कई स्थल बड़े अस्वस्थ, उदास और निराशापूर्ण हो गये हैं और कहीं बड़े असामाजिक पात्र भी हैं, पर अपने देश और उसके वासियों की प्रगति में उसका विश्वास न हो, ऐसी बात नहीं। उसके विचार कैसे थे, यह उसके एक पत्र के इस उद्धरण से जाना जा सकता है।

उसने एक बार लिखा :—

'मुझे इस बात का कारण समझ में नहीं आता कि क्यों हमारी आबादी का केवल दसवाँ भाग शिक्षित और संस्कृत है और शेष अधिकांश उस दसवें भाग को सुख सुविधा से रखने के लिए मरता, जीता और स्वयं अशिक्षित और अपढ़ रहता है। मैं सिवाय इस विश्वास के किसी और बात के लिए सोचना व जीना नहीं चाहता कि हमारे सारे देशवासी और वे, जो हमारे बाद पैदा होंगे, एक दिन शिक्षित, संस्कृत और प्रसन्न होंगे। मैं जानता हूँ और मेरा यह परम विश्वास है कि आम शिक्षा और संस्कृति किसी को हानि न पहुँचायेगी। मेरा यह भी परम विश्वास है कि विचारों की प्रशस्तता और रोशनी की बादशाहत यूरोप के दूसरे सभ्य देशों की अपेक्षा पहले रूस में आयेगी।'

साइबेरिया के दंड और उसके बाद के निर्वासन के पश्चात् १८५६ में दास्तवस्की को रूस में वापस आने की आज्ञा मिली। पाँच वर्ष बाद ही उसकी पहली पत्नी और उसके भाई का देहान्त हो गया। दास्तवस्की घोर विपन्नता में दिन गुज़ार रहा था। इस बीच में उसने दो पत्रिकाएँ निकालीं। लेकिन दोनों को सरकार बन्द कर दिया। दास्तवस्की पर बड़ा कर्ज़ चढ़ गया था, इस पर भी उसने अपने भाई और उसके कुटुम्ब का भार अपने सिर ले लिया। उसकी ज़िन्दगी के अन्तिम वर्षों को कठोरता को उसकी दूसरी पत्नी आना के स्नेह और श्रद्धा ने एक अपार कोमलता से भर दिया। आना ही ने उसके साहित्य का प्रकाशन स्वयं आरम्भ किया और अन्तिम दिनों में दास्तवस्की इतना लोकप्रिय हो गया कि १८८० में, मास्को में पुश्किन की बरसी पर मनाये जाने वाले समारोह में

उसे भाषण देने को निमंत्रित किया गया। उसका भाषण सुनने को इतनी भीड़ इकट्ठी हो गयी और उसके भाषण के बाद उसके प्रशंसकों ने ऐसे जोश और उत्साह का प्रदर्शन किया कि सभा स्थगित करनी पड़ी। जब दास्तवस्की अपना भाषण समाप्त कर चुका, तो तुर्गनेव ने, जो अपनी ख्याति के शिखर पर था, सजल नयनों से उसे अपने आलिंगन में भींच लिया; औरतों की एक भीड़ ने उसे घेर लिया; एक युवक श्रद्धा से उसके पैरों पर गिरकर बेहोश हो गया और उसे छै फीट के घेरे का 'लारेल' (फूलों का मुकुट) भेंट किया गया।

लेकिन दास्तवस्की के अच्छे दिन अधिक देर न रहे। उसे शुरू ही से मिरगी की तरह का कुछ कष्ट था और जिन दिनों उसे अधिक काम करना पड़ता, उसे दौरा पड़ जाता था। साल के अन्त में ही उसका देहावसान हो गया। जब उसकी अर्थी उठी, तो ४०,००० लोग उस के पीछे-पीछे मक़बरे तक गये। और उसके प्रशंसकों ने उसे राजसी ठाठ से दफ़नाया।

तालस्ताय और दास्तवस्की कभी नहीं मिले, पर दोनों एक-दूसरे के प्रशंसक थे। दास्तवस्की के देहावसान पर तालस्ताय ने लिखा :

'मैं दास्तवस्की के बारे में जो महसूस करता हूँ, काश मैं लिख पाता! यद्यपि मैंने उन्हें कभी नहीं देखा और न उनसे व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार ही रहा, पर अब जब वे नहीं हैं, तो मैं पाता हूँ कि किसी दूसरे की अपेक्षा वे मेरे अधिक निकट थे, मुझे सबसे अधिक प्यारे थे और मेरे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण थे। मुझे कभी उनसे स्पर्द्धा नहीं हुई, कभी यह नहीं लगा कि उन्हें पीछे छोड़ दूँ। जो कुछ भी उन्होंने लिखा और किया, वह इतना खरा, सच्चा

और अच्छा होता था कि मुझे खुशी होती थी। हालाँकि मैं किसी दूसरे आदमी की बुद्धि और मेधा से ईर्ष्या कर सकता हूँ, पर हृदय की सच्चाई से जो बातें निकलती हैं, वे प्रसन्नता ही देती हैं। मैं दास्तवस्की को सदा मित्र समझता रहा हूँ और मेरा ख्याल था कि मैं कभी उनसे मिलूँगा और उन्हें जानूँगा, पर विधि को यह स्वीकार न था।'

हिज़ एक्सलेंसी

१

यह हास्यास्पद कहानी ठीक उस समय की है, जब हमारे प्यारे देश रूस में पुनर्जागरण का युग आरम्भ हुआ था। वह युग एक अभूतपूर्व अदम्य शक्ति और हृदय को स्पर्श करने वाले हर्षोन्माद का युग था। उस समय देश के सभी बहादुर बेटों में नयी आशा और नये भाग्य की लालसा जग उठी थी। उन्हीं दिनों एक सुहानी, कुहरेदार जाड़े की रात, ग्यारह बजे के ज़रा बाद, तीन अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति पीटर्सबर्ग साइड के एक खूबसूरत, दुमंज़िले मकान के ठाटदार, आराम-देह कमरे में बैठे थे। वे एक बड़े ही दिलचस्प विषय पर गम्भीर और देश-काल की सुध-बुध भुला देने वाली बात-चीत में तल्लीन थे। वे तीनों जनरल पद के थे; छोटी-सी मेज़ के गिर्द खूबसूरत, मुलायम, हत्थेदार कुर्सियों पर बैठे थे और बात-चीत के दौरान में कभी-कभी चुपके

से शैम्पैन की चुस्कियाँ भर लेते थे। मेज़ पर शराब ठंडी करने वाला रजत-पात्र रखा था, जिसमें सावधानी से सजी बोतल में रक्त को गर्मी देने वाला पेय शीतल हो रहा था।

बात यह है कि मकान-मालिक 'प्रिवी काउंसिलर स्टेपन'—पैंसठ वर्ष का एक वयस्क कुँवारा—अपने हाल ही में खरीदे घर का गृह-प्रवेश-उत्सव मना रहा था और अपना जन्म-दिवस भी। यह जन्म-दिवस संयोग से उसी दिन पड़ गया था, लेकिन इसका ख्याल इससे पहले उसे कभी भी न हुआ था। इस उत्सव में कोई विशेषता न थी, क्योंकि जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, वहाँ सिर्फ दो ही मेहमान थे। दोनों ही मिस्टर स्टेपन के पुराने सहकर्मी और मातहत थे। उनमें एक का नाम 'एक्चुएल-स्टेट-काउंसिलर सेमन' और दूसरे का 'एक्चुएल-स्टेट-काउंसिलर ईवान' था। चाय पर वे लगभग नौ बजे आये थे और बाद में ज़रा गला तर करने को बैठ गये थे। उन्हें मालूम था कि ठीक साढ़े ग्यारह बजे उन्हें घर के लिए उठ जाना होगा, क्योंकि उनका मेज़बान हमेशा से नियमित जीवन का अभ्यस्त था।

यहाँ दो शब्द मेज़बान के बारे में कह देना अनुपयुक्त न होगा। प्रिवी काउंसिलर स्टेपन ने अपना जीवन बिना किसी निजी ज़र-जायदाद के, एक छोटी सरकारी नौकरी से आरम्भ किया था। और भली भाँति यह जानते हुए भी कि इस नौकरी में वह किस ऊँचाई तक पहुँच सकता है, उसने धैर्य से पैंतालिस साल काट दिये थे। आसमान के सितारों की ओर हाथ-पाँव पटकना उसे सह्य न था, हालाँकि उनमें से दो उसने पहले ही प्राप्त कर लिये थे। किसी भी विषय में अपनी

व्यक्तिगत सम्मति देने में उसे विशेष अरुचि थी । वह ईमानदार भी था--कहने का मतलब यह कि उसे कभी कोई बड़ा बेईमानी का काम करने का संयोग न मिला था। वह कुँवारा इसलिए रह गया था, क्योंकि वह आत्मश्लाघी था। वह क़तई मूर्ख न था, लेकिन अपनी बुद्धिमानी का बखान करना भी उसे स्वीकार न था। उसे फूहड़पन और उत्साह से घृणा थी। उत्साह को वह नैतिक फूहड़पन समझता था और अब जीवन के अन्तिम दिनों में, वह एक मधुर, अलस सुख और नियम-बद्ध-एकान्त में धीरे-धीरे डूब गया था। पहले कभी-कभी वह कुछ बेहतर लोगों से मेल-जोल रखता था, लेकिन युवावस्था के बाद किसी मेहमान का अपने घर स्वागत करना उसे बेहद नागवार गुरज़ता था, और बाद के वर्षों में—यदि उसे अपने उच्च पद के कारण सहनशीलता दिखाने की आवश्यकता न होती, तो वह अपनी घड़ी की संगति में ही बैठने में सन्तुष्ट रहता और सारी शाम बड़े इतमीनान से अपनी हत्थेदार कुर्सी में बैठा, शान्तिपूर्वक सपने लेता हुआ, शीशे के डिब्बे में बन्द, ताक पर रखी घड़ी की टिक-टिक सुनने में गुज़ार देता। देखने में वह बहुत शरीफ़ था और दाढ़ी-मूँछ सफ़ाचट होने से अपनी आयु की अपेक्षा कहीं कम-उम्र दिखायी देता था। शरीर से वह पुष्ट था और उसके लिए लम्बे जीवन की आशा की जा सकती थी। वह कुछ बेहद सख्त किस्म के शरीफ आदमी का जीवन बिता रहा था। वह काफ़ी आराम-देह पद पर था, किसी तरह की किसी समिति का सदस्य भी था और कुछ कागज-पत्तरों पर उसे नित्य हस्ताक्षर करने पड़ते थे—एक ही वाक्य में कहें—वह एक बेहतरीन आदमी समझा जाता था। उसे बस एक लालसा

थी, बल्कि यह कहना बेहतर होगा कि उसकी केवल एक हार्दिक इच्छा थी : वह यह कि उसे एक घर प्राप्त हो जाय—एक ऐसा घर, जो एक शरीफ़ आदमी के घर-सरीखा हो, वैसा नहीं, जो फ़्लैटों और दुकानों के रूप में किराये पर उठाया जाता है। उसकी यह इच्छा आखिर पूरी होकर रही थी। उसने इधर-उधर देखा-सुना और पीटर्सबर्ग साइड में एक घर खरीद लिया। घर ज़रा दूर तो पड़ता था, लेकिन उस में एक बाग भी था और वह बना भी खूबसूरत था और उस का यह नया मालिक दूर रहना कुछ बुरा भी न समझता था, क्योंकि किसी का अपने घर आना-जाना उसे अच्छा न लगता था और किसी से मिलने या आफिस जाने के लिए उस के पास एक उम्दा दो सीट वाली चाकलेट रंग की गाड़ी, छोटे मज़बूत, लेकिन खूबसूरत घोड़ों का एक जोड़ा और कोचवान 'मिखे' था। अपनी चालीस वर्षों की कठोर मितव्ययता की बदौलत उसने स्वयं ये चीज़ें प्राप्त की थीं। इन सब को पाकर उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। यही कारण था कि घर खरीद लेने और उसमें आ जाने पर स्टेपन को शान्तिपूर्ण आत्मा को ऐसा सन्तोष अनुभव हुआ था कि सचमुच उस ने अपने जन्म-दिवस पर, जिसे सदा अपने घनिष्ट मित्रों तक से उसने सयत्न छिपाये रखा था, मेहमानों को आमंत्रित कर दिया।

गृह-प्रवेश और जन्म-दिवस और उससे मिलने वाले सुख की बात तो थी, पर अपने मित्रों को बुलाकर अपने एकांत के भंग होने का संकट जो उस ने मोल लिया था, तो इसका एक खास कारण था। वह अपने उस नये घर की सिर्फ ऊपरी मंज़िल में ही रहता था। निचली मंज़िल के लिए, जो बिल्कुल ऊपर ही की तरह बनी थी, उसे एक किरायेदार की

आवश्यकता थी। इसके लिए वह सेमन से उम्मीद लगाये था। दो बार उसने इस विषय की ओर बातचीत का रुख मोड़ा भी था, लेकिन सेमन ने जैसे वह सब सुना ही न था। वह एक दम चुप लगा गया था।

सेमन के बाल और मूँछें काली थीं और उसका चेहरा देखने में ऐसा लगता था, जैसे वह पीलिया का पुराना रोगी हो। उसने भी बड़ी रुकावटों को पार कर, लम्बे वर्षों की लगातार मेहनत से, अपना रास्ता बनाया था। वह शादीशुदा था। चिड़चिड़ा, घर पर ही रहना पसन्द करने वाला और अपने बाल-बच्चों को भयभीत रखने वाला! अपने काम के बारे में उसे आत्मविश्वास था और स्टेपन की तरह वह भी यह भली-भाँति जानता था कि किस पद को वह प्राप्त कर सकता है। इससे भी अधिक वह यह जानता था कि किस पद को वह कभी प्राप्त नहीं कर सकता। वह एक खासे अच्छे पद पर था और उस पर पूरी तरह जमा हुआ था। नयी व्यवस्था और तब्दीलियों को वह बिना कड़वाहट के न देख पाता था, लेकिन उन से वह कोई खास परेशान भी न था और नये विषयों पर ईवान की लम्बी-चौड़ी बातों को वह एक द्वेषभरी मुस्कान के साथ सुन रहा था। दरअसल बात यह थी कि वे सब, कुछ क्या, बहुत ज्यादा पी गये थे, यहाँ तक कि स्टेपन भी अपनी मर्यादा की चोटी से उतर कर ईवान के साथ नये सुधारों पर बहस करने लगा था।

अब हम ईवान के बारे में, जो इस कहानी का प्रधान नायक है, दो बातें कहना ज़रूरी समझते हैं।

अभी, सिर्फ़ चार ही महीने हुए थे, जब इवान, 'योर एक्सलेन्सी' के सम्मान-सूचक शब्दों से सम्बोधित किया जाने लगा था—जिसका मतलब यह कि वह अभी नया-नया जनरल बना था। आयु में भी वह स्टेपन और सेमन की अपेक्षा कहीं कम था। लगभग युवक, उम्र करीब तैंतालीस—निश्चय ही अधिक नहीं। लगता उससे भी कम था और वैसा ही लगना वह चाहता भी था। वह लम्बा और खूबसूरत आदमी था। उसे अच्छी पोशाक में रहना प्रिय था और अपने कपड़ों की श्रेष्ठता पर उसे नाज़ था। वह साधारणतः अपने गले में उत्कृष्ट कोटि का एक आभूषण भी, गौरव के साथ, पहनता था। बचपन में ही वह समझ गया था कि बेहतरीन समाज के तौर-तरीकों को कैसे सीखा जा सकता है और क्योंकि वह कुँवारा था, इसलिए वह एक धनी और ऊँचे खान्दान की दुलहिन के सपने भी देखता था। हालाँकि वह हर्गिज़-हर्गिज़ मूर्ख न था, तो भी वह और कितनी ही चीजों के सपने लेता था। साधारणतः वह एक अच्छा वक्ता था और पार्लियामेण्टरी मुद्रायें धारण करना उसे प्रिय था। एक जनरल का नाजुक बेटा होने के नाते वह एक अच्छे खान्दान का था और बचपन ही से रेशम और मखमल से परिचित था। रईसों के स्कूल में वह पढ़ा था और यद्यपि उसने थोड़ी शिक्षा प्राप्त करके उसे छोड़ दिया था, वह सिविल सर्विस में भली-भाँति सफल हुआ था और अपने खान्दान के ज़ोर से जनरल के पद पर जा पहुँचा था। उसके अफ़सरों का ख्याल था कि वह बहुत योग्य व्यक्ति है, यहाँ तक कि वे उससे बड़ी-बड़ी उम्मीदें वाबस्ता किये हुए थे।

स्टेपन ने, जिसके मातहत ईवान ने अपनी अफ़सराना ज़िन्दगी शुरू

की थी और लगभग जनरल के पद पर पहुँचने तक काम किया था, उसे कभी वैसा योग्य न समझा था और न उस ने उसके साथ कोई उम्मीद ही वाबस्ता की थी। उसे ईवान में सिर्फ यह बात अच्छी लगती थी कि वह एक अच्छे खान्दान का था और उस के पास निजी ज़र-जायदाद थी। कहने का मतलब यह कि वह एक बड़ी भारी इमारत का स्वामी था, जिस की फ़्लैटों से उसे काफ़ी किराया आता था; कि उस के लिए एक मैनेजर भी उसने रख छोड़ा था; कि बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से उस का सम्बन्ध था और सब से बढ़ कर यह कि उस की सूरत बड़ी रौबीली थी। उस की अत्यधिक कल्पनाशीलता और एक हद तक चंचलता के कारण अपने मन में स्टेपन उसे घटिया आदमी समझता था। कभी-कभी ईवान को स्वयं भी लगता था कि वह अत्यधिक आत्मश्लाघी और कोमल है। आश्चर्य तो यह है कि कभी-कभी उसे अस्वस्थ धर्मपरायणता के दौरे तक होते थे और कभी तो उसे किसी बात के लिए किंचित पश्चाताप तक हो जाया करता था। अपने अन्तर के किसी गुह्य स्तर में कुछ अजीब से कड़वेपन और पीड़ा के साथ वह इस बात को भी स्वीकार करता था कि वह सचमुच उतनी ऊँचाई पर नहीं है, जिस पर पहुँचने की उसने कल्पना की थी। उन क्षणों में वह हतोत्साह हो जाता (विशेषकर जब उस के रक्तचाप का रोग बढ़ा होता) अपने जीवन को वह अस्तित्वहीन समझने लगता। अपने या अपनी पार्लियामेण्टरी सामर्थ्यों परसे तब उस का विश्वास उठ जाता, (बेशक गुप्त रूप से !) और वह अपने को एक व्यर्थ वक्ता और बातूनी, बात बनाने वाला समझने लगता। यद्यपि आत्म-निरीक्षण का यह गुण

एक बड़ा गुण था, पर इसका उदय उसकी दुर्बलता के क्षण ही में होता। आध घंटे बाद वह फिर वही पुराना आत्मश्लाघी बन जाता। तब वह पहले से भी अधिक साहस तथा दृढ़ता के साथ खुद को विश्वास दिलाता कि उस के पास अब भी उन्नति करने का समय है और वह केवल उच्च पद ही नहीं प्राप्त कर सकता, बल्कि एक ऐसा महान राजनीतिज्ञ भी हो सकता है, जिसे रूस में बहुत काल तक याद किया जायगा! वह दूर भविष्य में अपने सम्मान में स्थापित किये हुए स्मारक की झिलमिलाहट भी देखता।

इन सब बातों से यह समझा जा सकता है कि ईवान का लक्ष्य बहुत ऊँचा था—यद्यपि वह इन अपने गुप्त तथा अनिश्चित विचारों और आशाओं को स्वयं अपने तक से भी छिपा कर रखता था। संक्षेप में वह एक दयालु आदमी था और हृदय से एक कवि! पिछले कुछ वर्षों में उसके इस अस्वस्थ मोहहरण के क्षण पहले से अधिक आने लगे थे। वह क्रोधी और शंकालु हो गया था और विरोध को अपने पर किये जाने वाले हमले के बराबर समझ लेता था।

रूस के उस पुनर्जागरण से अचानक ईवान को बड़ी आशायें बँध गयी थीं। जनरल के पद ने इन्हें और भी मज़बूत बना दिया था। उसका सिर तन गया था और वह आगे बढ़ने के लिए और भी ज़ोर मारने लगा था। वह अचानक बड़ी पटुता से देर-देर तक भाषण देने लगा—उन नये विषयों और विचारों पर लम्बे-लम्बे भाषण, जिन्हें उस ने जोश के क्षणों में अकारण ही शीघ्र अपना लिया था। वह बोलने के अवसर ढूँढ़ा करता। उन्हें खोजने के लिए शहर में

चक्कर लगाता । और कई जगहों पर वह एक बेकार उदारपंथी की ख्याति पा गया, । लेकिन इस उपाधि से वह क्षुब्ध नहीं हुआ, बल्कि अवसर मिलने पर इस बात का उल्लेख बड़े गर्व-स्फीत स्वर में करने लगा।

उस रात लगभग चार गिलास शराब पीकर ईवान साधारण से ज्यादा बातूनी हो गया। यह ठीक है कि आज तक वह एक मातहत के रूप में स्टेपन का सम्मान करता और उस की बात मानता आया था, पर उस रात वह उस से अपना मत मनवाने पर तुल गया। स्टेपन को, न जाने क्यों, वह एक दम प्रतिगामी समझ बैठा और उस पर असाधारण क्षुब्धता से टूट पड़ा।

स्टेपन ने उस का विरोध नहीं किया, यद्यपि विषय उस के लिए भी रोचक था। वह चुपचाप धूर्तता से उस की बात सुनता रहा। ईवान आवेश में आ गया और एक काल्पनिक तर्क की सरगर्मी में वह उचित से अधिक बार गिलास को ओंठों से लगाने लगा। तब स्टेपन ने बोतल उठायी और तुरन्त उस गिलास को फिर भर दिया, जिस से ईवान, न जाने क्यों, क्षुब्ध होने लगा, विशेष कर इसलिए कि सेमन (जिस से खास तौर पर वह उसके चिड़चिड़ाहट-भरे घृणासूचक व्यवहार के कारण नफ़रत करता था, लेकिन जिस से डरता भी था) बगल में एक द्वेषपूर्ण चुप्पी के साथ बैठा था और आवश्यकता से अधिक बार मुस्कराता था। ईवान के दिमाग़ में यह बात कौंध

गयी कि ये मुझे एक दम बच्चा समझते हैं और वह दुगने जोश से बोलने लगा :

"नहीं, साहब, अब समय आ गया है...बहुत पहले समय आ गया था," उसने जारी रखा, "हमने पहले ही बहुत देर कर दी है... साहब, मेरे ख्याल में मानव के नाते मानवीय होना महत्वपूर्ण है—अपने मातहतों के प्रति मानवीय होना, सदय होना, यह ख्याल करके कि वे भी मानव हैं--मानवीयता हर चीज़ की रक्षा कर लेगी, हर चीज़ की......"

"ही, ही, ही !" जिधर सेमेन बैठा था, उधर से आवाज़ आयी।

"लेकिन क्यों तुम इस तरह हमारा कचूमर निकाल रहे हो ?" आखिर एक मनहर मुस्कान के साथ स्टेपन ने कहा, "मैं यह कह देना चाहता हूँ, ईवान, कि अब तक तुमने जो समझाने की कोशिश की है, उसे मैं बिल्कुल नहीं समझ सका। तुम मानवता के गौरव का वर्णन कर रहे हो। क्या इसका मतलब मानवता से प्रेम है ?"

"हाँ, कदाचित सम्पूर्ण मानवता से प्रेम ! मैं..."

"मुझे बोलने की इजाज़त दो, भाई। जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह बात यहीं खत्म नहीं हो जाती। मानवता के प्रति जो प्रेम है, उसे तो सदा रहना ही चाहिए, लेकिन सुधारों की सीमा वहीं तक नहीं है। सब तरह के सवाल उठाये गये हैं—किसानों के सम्बन्ध में, कानून के सम्बन्ध में, कृषि, शराब के लाइसेंस, नैतिक, और इसी तरह के और...इन सवालों का कहीं अन्त नहीं......और सबको एक ही साथ, एक ही समय लिया जाय, तो वे एक बहुत बड़े—हम कहें—आन्दोलन का कारण बन

सकते हैं। हमें इसी का भय है, केवल मानवीयता ही नहीं..."

"हाँ, साहब, बात गहरी है," सेमन ने कहा।

"मैं खूब समझता हूँ, साहब! और यह भी कहना चाहता हूँ कि मैं क्षण भर के लिए भी इन बातों की गहराई समझने में आपसे पीछे रहने का नहीं," व्यंग्यपूर्ण और काटते-से स्वर में ईवान बोला, "लेकिन यह होते हुए भी, मैं आपसे यह कहने की आज़ादी चाहता हूँ, स्टेपन साहब, कि आप भी मुझे बिल्कुल नहीं समझते।"

"मैं नहीं समझता?"

"मैं अपने विचार पर दृढ़ हूँ और बीच बाज़ार यह निवेदन कर सकता हूँ कि मानवीयता, विशेष कर मातहत के साथ मानवीयता--अफसर से लेकर क्लर्कों तक, क्लर्कों से लेकर दरबानों तक, दरबानों से लेकर किसानों तक—मानवीयता, मैं दुहराता हूँ, आने वाले सुधारों के लिए नींव के पत्थर का काम दे सकती है--नींव के पत्थर का काम! मेरी बात पर ध्यान दीजिए—सामान्य तौर पर सब चीजों के पुनर्जन्म के लिए! क्यों? क्योंकि—इस तर्क-प्रणाली से देखिए—मैं मानवीय हूं, इसलिए मुझसे प्रेम किया जाता है। लोग मुझसे प्रेम करते हैं, फलतः मुझ पर वे विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं, फलत:...विश्वास...विश्वास...फलतः प्रेम...नहीं...मेरा मतलब... मैं कहना चाहता था, यदि वे विश्वास रखते हैं, तो वे सुधारों में भी विश्वास करेंगे, वे समझेंगे, मतलब कि, बातों का निचोड़...मतलब कि नैतिक रूप से अपनायेंगे... और मिल-जुल कर सभी सवालों को बुनियादी तौर पर हल कर लेंगे... आप किस बात पर हँस रहे हैं,

सेमन साहब ? यह क्या कोई समझ में न आने वाली बात है ?"

स्टेपन ने खामोशी से भौहें ऊपर उठायीं।

"मेरा ख्याल है कि मैं जरा ज्यादा पी गया हूँ," द्वेषपूर्ण ढंग से सेमन बोला, "इसलिए मेरी समझ कद्रे मन्द हो गयी है...कद्रे धुंधली..." और वह हँसा उसी तरह ही, ही, ही करके।

ईवान ने अपने कंधे सिकोड़े।

"कसौटी पर हम खरे नहीं उतर सकते," क्षण भर सोच कर स्टेपन ने कहा।

"क्यों नहीं उतर सकते ?" अचानक स्टेपन की अप्रत्याशित और असम्बद्ध बात से चकित होकर ईवान ने पूछा।

"नहीं, नहीं उतर सकते,"—साफ था कि स्टेपन इससे अधिक कुछ न कहना चाहता था।

"क्या आपकी बात का मन्तव्य नयी शराब और नयी बोतलों से है ?" ईवान ने ताना मारा, "नहीं, साहब, अपने लिए तो मैं कह सकता हूँ !"

उसी समय घड़ी ने साढ़े ग्यारह बजाये।

"यहाँ बैठे, तो बैठे ही रह जायेंगे, अब चलना चाहिए," कुर्सी से उठने की तैयारी करते हुए सेमन ने कहा। लेकिन उसके पहले ही ईवान तैयार था। वह झट उठ खड़ा हुआ और बढ़ कर आतिशदान से उस ने अपनी कीमती रोंयेदार खाल की बनी टोपी उठा ली। स्टेपन और सेमन को मुँह-तोड़ जवाब न दे सकने के कारण वह बड़ा क्षुब्ध दिखायी देता था। कम्बख्त घड़ी ने कैसे समय में साढ़े

ग्यारह बजा दिये......

"हाँ, तो सेमन, तुम्हारा क्या ख्याल है ? ज़रा जल्दी सोचकर मुझे बताना।" उन्हें दरवाजे की ओर ले जाते स्टेपन ने कहा।

"फ्लैट के बारे में?" सेमन हँसा। "मैं सोच कर आपसे कहूँगा......सोच कर..."

"हमेशा बिज़िनेस की बात!" अपनी टोपी के साथ खेलते हुए, उन्हें आकर्षित करने की कोशिश में ईवान ने मित्रवत कहा, जैसे उसे लगा हो, कि वे उसे भूल गये हैं।

स्टेपन की भौंहें उठ गयीं, लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, जैसे यह इस बात का संकेत था कि वह अपने मेहमानों को अब और रोकना नहीं चाहता।

सेमन ने जल्दी में विदा ली।

'अच्छा, तो तुम साधारण शिष्टाचार भी नहीं समझते!' ईवान ने स्टेपन की उठी भौंहों की ओर लक्ष्य कर, मन-ही-मन कहा और फिर एक विशेष स्वच्छन्दता की मुद्रा धारण कर, उसने स्टेपन की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

ड्योढ़ी पर ईवान ने अपने कीमती, हल्के खाल के कोट को शरीर से लपेट लिया और सेमन के यथेष्ट पुराने लोमड़ी की खाल के कोट की ओर न देखने की कोशिश की। तब वे सीढ़ियों के नीचे उतरे।

"हमारे पुराने दोस्त किसी बात पर नाराज़ मालूम पड़ते थे,"

ईवान ने स्टेपन की रुखाई पर सेमन को तसल्ली देने की ग़रज़से कहा।

"नहीं, वह क्यों नाराज़ होगा ?" दूसरे ने शान्त रुखाई से उत्तर दिया।

'ग़ुलाम !' ईवान ने सोचा।

जब वे ओसारे में आये, तो सेमेन की कमज़ोर, भूरे घोड़ों वाली स्लेज सामने आ गयी। लेकिन ईवान की गाड़ी ग़ायब थी।

"कैसा शैतान है ट्रीफ़न—कहाँ गुम हो गया गाड़ी के साथ !" ईवान अपने कोचवान को गाड़ी समेत ग़ायब पाकर चीखा।

उसने इधर-उधर देखा, लेकिन कोई गाड़ी दिखायी न दी। स्टेपन का नौकर उसके बारे में कुछ न जानता था। ईवान ने स्टेपन के कोचवान से पूछा, तो उसने बताया कि सारे समय तो ट्रीफ़न वहीं था और गाड़ी भी वहीं थी, लेकिन अब मालूम नहीं, दोनों कहाँ गुम हो गये ?

"सख्त बुरी बात है," सेमेन ने कहा, "चाहो, तो मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दूँ ?"

"बदमाश तो ये लोग अव्वल नम्बर के होते हैं !" गुस्से में ईवान चिल्लाया, "उस शैतान ने यहीं कहीं पीटर्सबर्ग साइड में किसी शादी में जाने की बात मुझसे कही थी, किसी एक 'कुमा'* की शादी होने वाली थी, जहन्नुम में जाय, कम्बख्त ! मैं ने सख्ती के साथ उससे यहाँ से न हटने की ताकीद की थी। वह वहीं गया है, मैं शर्त बद सकता हूँ !"

---

* कुमा=वह मर्द और औरत जो एक ग़ैर कानूनी बच्चा पैदा करने के उत्तरदायी होते हैं, क्रमशः 'कुम' और 'कुमा' कहलाते हैं।

"तो वह ज़रूर वहीं गया है, सरकार," स्टेपन के कोचवान ने कहा, "लेकिन एक मिनट में ही लौट आने को वह कह गया था, ताकि वक्त पर यहाँ पहुँच जाय।"

"मेरा माथा पहले ही ठनका था! अब आयेगा, तो उसे आटे-दाल का भाव मालूम होगा।

"उसे थाने में कोड़े लगवाने चाहिएँ, तभी वह तुम्हारी आज्ञाओं को अच्छी तरह मानेगा," अपनी स्लेज का कपड़ा बाँधते हुए सेमन ने कहा। और कपड़ा बाँध कर, गाड़ी में ईवान के बैठने की प्रतीक्षा करने लगा।

"मेरे लिए आप कष्ट न कीजिए, सेमन साहब," ईवान बोला।

"तो तुम मेरे साथ अपने घर न चलोगे?"

"आपका रास्ता मज़े से कटे, मुझे क्षमा करें!"

सेमेन ने अपनी गाड़ी हाँक दी और ईवान बेहद बदमज़गी लिये पैदल ही उन तख्तों पर चल पड़ा, जो पटरियों का काम देते थे।

२

'अब तुझे समझ आयेगी—बदमाश !' ईवान तख्तों पर चलते हुए मन-ही-मन अपने कोचवान पर उबल रहा था, 'मैं पैदल ही घर जाऊँगा, सिर्फ इसलिए कि तू महसूस करे, भय खाये। जब तू लौटेगा, तो सुनेगा कि तेरे मालिक को पैदल ही चलना पड़ा, बदमाश !'

ईवान के मुँह से कभी इतनी गालियाँ न निकली थीं, लेकिन इस समय वह बहुत क्रुद्ध था और साथ ही उसके मस्तिष्क में कुछ भिन-भिनाहट हो रही थी। वह पीता न था, पाँच या छै पैग तेज़ शराब का उस पर शीघ्र ही असर हो गया। रात सुहानी थी, कुहरेदार, पर असाधारण तौर पर शान्त ! हवा भी न चल रही थी। आसमान साफ था और तारे चमक रहे थे। पूरे चाँद ने ज़मीन पर पीली चाँदनी बहा दी थी। वातावरण इतना सुहाना था कि पचास कदम

चलते-चलते सरूर में आकर अपना सब दुख भूल गया। कुछ ही देर बाद उस ने अपने को बहुत ही संतुष्ट अनुभव किया। फिर शराब का तो यह गुण है, ज़रा ज्यादा अन्दर गई कि पैर ही लड़खड़ाने नहीं लगते, विचार भी लड़खड़ाने लगते हैं। कोई विचार बहुत देर तक शराबी के दिमाग़ में नहीं टिकता। ईवान के सरूर का यह आलम था कि प्रायः सूनी सड़कों पर बदसूरत घरों तक को देखकर वह खुशी महसूस करने लगा।

'अच्छा हुआ कि मैं पैदल चल पड़ा,' उसने सोचा, 'ट्रीफ़न के लिए यह एक सबक़ होगा और मेरे लिए एक मौज। मुझे जरूर ज्यादा पैदल चलना चाहिए। ट्रीफ़न चला गया, तो कोई बात नहीं, ग्रेट प्रॉस्पेक्ट पर मुझे तुरन्त कोई गाड़ी मिल जायगी......क्या सुहानी रात है! ये कैसे अजीब छोटे-छोटे घर हैं! शायद यहाँ छोटे लोग ही रहते हैं शायद छोटे अफ़सर, दुकानदार...सेमन और स्टेपन पर ताज्जुब होता है। कैसे प्रतिगामी हैं ये सब! जीती-जागती दुनिया में सोये रहने वाले बूढ़े ग़ाफ़िल चूहे! ......कैसी उपमा सूझी है मुझे......चूहे...हि-हि-हि ...... सचमुच ही उनका अस्तित्व ग़ाफ़िल चूहों से भिन्न नहीं।......लेकिन स्टेपन फिर भी एक चतुर आदमी है, उसमें सहज-ज्ञान, चीज़ों की सही समझ है। लेकिन इससे क्या? बूढ़े बूढ़े ही होते हैं! उनके पास—नहीं होता, क्या कहते हैं उसे? खैर, जो भी कहें, सब बराबर है—मतलब यह कि कुछ कमी ज़रूर होती है उनमें। "कसौटी पर हम खरे नहीं उतर सकते!" इससे आखिर स्टेपन का क्या मतलब था? कहते समय शायद वह शेखचिल्ली की तरह

कोई सपना देख रहा था। मुझे तो उसने बिल्कुल ही न समझा। आखिर उसकी समझ में मेरी बात क्यों न आयी ? इसे समझने से ज्यादा मुश्किल तो न समझना था।....मुख्य बात तो यह है कि मैं मान गया हूँ, अपने पूरे हृदय से मान गया हूँ कि आज हमें मानवीयता ही की ज़रूरत है ...कि....कि मानवीयता में मेरा विश्वास अडिग है। मानवीयता—मानव जाति के प्रति प्रेम ! मानव को मानव बनाना—उसे उसके यथार्थ मूल्य से परिचित कराना....यदि इसमें आपका विश्वास पक्का हो गया हो, तो फिर जो सामान पास है, उससे काम शुरू किया जा सकता है। यह बिल्कुल साफ़ बात है। हाँ, जनाब ! मुझे कहने दीजिए, योर एक्सलेन्सी ! उदाहरण के लिए, हम एक सरकारी क्लर्क से मिलते हैं—एक गरीब, भुलाये हुए क्लर्क से। "अच्छा, तुम कौन हो जी ?" "एक सरकारी क्लर्क !" "बहुत अच्छा, एक क्लर्क; आगे बढ़ो : किस तरह के क्लर्क ?" "ऐसा......वैसा क्लर्क।" "तुम काम पर हो ?" "जी हाँ।" "तुम खुशहाल रहना चाहते हो ?" "जी हाँ।" "खुशहाल होने के लिए तुम्हें किन चीजों की जरूरत होगी ?"—"जी मुझे यह चहिए, वह चाहिए।" "क्यों ?" "क्योंकि..." और चन्द मिनटों की बात-चीत में वह मेरी सहृदयता को समझ जाता है : मेरा आदमी बन जाता है, फँस जाता है, याने मेरे जाल में और मैं जो चाहता हूँ; उसके साथ करता हूँ, – कहने का मतलब कि उसी की भलाई के लिए...

'...सेमन एक बद-मिज़ाज आदमी है और उसका चेहरा कितना भद्दा है ! "थाने पर उसे कोड़े लगवाओ," कैसी बेसमझी और फूहड़पने

की बात है ! तुम्हीं लगाओ अपने नौकर के कोड़े। ट्रीफ़न को मैं कोड़े नहीं लगाऊँगा। शब्दों से मैं उसे लज्जित करूँगा। मेरी फटकारों से वह पानी-पानी हो जायगा और तब वह मेरी सदय मानवीयता में विश्वास करेगा। जहाँ तक कोड़े लगाने की बात है, उसे योंही नहीं तय किया जा सकता.....एमरेन्स के घर उसे देख लूँ...'

"फुफ ! जहुन्नुम में जायँ ये तख्ते !" फिसलते ही उसके मुँह से निकल गया और वह बिल्कुल गिरने-गिरने को हो गया।

'...यह खूब रहा—यही ज्ञान-प्राप्ति है। तुम अपना पैर तोड़ लोगे !'...उसने अपने-आपसे कहा और सम्हल कर चलते ही उसकी विचार-धारा फिर बहने लगी—'...हूँ, मैं सेमन को बर्दाश्त नहीं कर सकता !' वह बड़बड़ाया, 'बेहद अप्रिय है वह। मुझ पर उसने ही-ही की, जब मैंने "मानवीयता को अपनाने" की बात की। वाह, यदि हम इस सिद्धान्त को अपनायें, तो तुम्हें क्या ? मैं तुम्हें गले नहीं लगाऊँगा, घबराओ नहीं ! मै भले ही एक किसान को गले लगा लूँ, लेकिन मेरी बाहें तुम्हारी ओर कभी न उठेंगी। यदि एक किसान मुझे मिले, तो ज़रूर उससे बातें करूँगा ...'

'मैं शायद कुछ नशे में था, और जैसा मुझे चाहिए था, मैं अपनी बातें उतनी स्पष्टता से नहीं कह सका।.....अब भी तो जैसे मैं चाहता हूँ, अपनी बात नहीं कह पा रहा हूँ...हुँ, अब फिर मैं कभी न पीऊँगा। रात में पाप करके सुबह पछताना—इससे बड़ी मूर्खता मैं दूसरी कोई नहीं समझता। मैं चलने में डगमगा तो नहीं रहा हूँ ? जो हो, सेमन और स्टेपन दोनों गुण्डे हैं !'

पटरी पर चलते हुए ईवान के ये टूटे-फूटे, असम्बद्ध विचार थे ताज़ी हवा ने उस के मदमत्त दिमाग़ पर पूरा असर किया था, बल्कि कहें, तो उसे झकझोर दिया था। और पाँच मिनट में वह शान्त और निंदासा हो गया होता, लेकिन अचानक जब ग्रेट प्रॉस्पेक्ट कुछ ही क़दम पर रह गया, उसे संगीत की आवाज़ सुनायी पड़ी। उसने चारों ओर देखा। सड़क के दूसरी ओर एक बहुत ही जीर्ण-जर्जर, लम्बे, एक-मंज़िले लकड़ी के घर में एक दावत हो रही थी। फ़िडिल बज रहा था, बैंग बाजा चल रहा था और बाँसुरी के महीन स्वर चार व्यक्तियों के नाच की थाप पर गूंज रहे थे। खिड़की के नीचे सुनने वालों की भीड़ लगी थी, जिसमें ज्यादा रूईगर्दे पहने, सिर पर रूमाल बांधे औरतें थीं। वे झिलमिलियों की दरारों से, अन्दर जो कुछ हो रहा था, भरसक उसकी झलक देखने की कोशिश कर रही थीं। प्रत्यक्ष ही अन्दर बड़ी खुशियाँ मनायी जा रही थीं। सड़क के दूसरी ओर तक नाचने वालों के पैरों की थाप का शोर सुनायी पड़ता था। पास ही खड़े एक पुलिसमैन पर ईवान की दृष्टि गयी और वह उसकी ओर बढ़ा।

"यह किसका घर है, मेरे अच्छे दोस्त?" अपने कीमती खाल के कोट को इतना हटाते हुए कि पुलिसमैन उसके गले के महत्वपर्ण आभूषण को देख ले, ईवान ने पूछा।

"सरकारी अफ़सर सेल्डोनीमोव, एक लेजिसलेचर का!" (पुलीसमैन प्रायः रजिस्ट्रार को लेजिसलेचर कहने की ग़लती करता है) आभूषण को देख कर, तुरन्त नजदीक आ कर पुलीसमैन ने उत्तर दिया।

"सेल्डोनीमोव? वाह, सेल्डोनीमोव! क्या वह शादी कर रहा है?"

"जी हाँ, उसकी शादी हो रही है, सरकार, एक टिटुलर काउंसिलर की लड़की के साथ! 'म्लेकोपिताएव' एक टिटुलर काउँसिलर है—वह कचहरी में काम करता था। वह दुलहिन को यह घर दहेज में दे रहा है।"

"इसलिए अब यह घर सेल्डोनीमोव का है, म्लेकोपिताएव का नहीं ?"

"सेल्डोनीमोव का ही, सरकार। पहले यह म्लेकोपिताएव का था और अब सेल्डोनीमोव का है।"

"हूँ, मैंने तुम से इसलिए पूछा, मेरे दोस्त, क्योंकि मैं उस का अफ़सर हूँ। जहाँ सेल्डोनीमोव काम करता है, मैं वहाँ का जनरल इनचार्ज हूँ।"

"जी, योर एक्सलेन्सी!" अब पुलीसमैन तन कर खड़ा हो गया।

ईवान जैसे सोचने लगा। कुछ क्षण वहीं खड़ा वह जैसे गये विचारों की बहिया में डूबने उतराने लगा।

यह सच था कि सेल्डोनीमोव उस के दफ़्तर ही का था उसी के विभाग का, उसे यह ठीक याद था। किसी बड़ी ही मामूली जगह पर करीब दस रूबल मासिक वेतन पर वह काम करता था। ईवान ने अपने विभाग का चार्ज अभी हाल ही में लिया था, इसलिए अपने मातहत काम करने वाले सभी क्लर्क उसे याद न हों, तो यह क्षम्य है, लेकिन

सेल्डोनीमोव अपने उस विचित्र नाम के कारण उसे याद था। पहली बार जब उस की नज़र इस नाम पर पड़ी थी, तो उसने एक उत्सुकता से इस अजीब नाम वाले को देखा था। ईवान की आँखों के सामने आ गया: एक कम-उम्र जवान—लम्बी टेढ़ी नाक, बड़े ही हल्के बाल, जो जा-बजा जमे दिखायी देते थे। दुबला-पतला और कम खाया-पिया सेल्डोनीमोव एक असम्भव यूनिफार्म पहनता था, असम्भव, बिल्कुल भद्दी...बयान के बाहर भद्दी ! ईवान को याद आया कि उस समय उस के दिमाग में नये साल पर एक पोशाक के लिए उस बेचारे गरीब को दस रूबल का एक बोनस देने की बात उठी थी। लेकिन क्योंकि उस ग़रीब का चेहरा इतना मृतवत था और उस की मुद्रा इतनी असहानुभूति पूर्ण थी कि उस से अनायास नफ़रत होने लगती थी, इसलिए वह दया-भाव किसी तरह गायब हो गया था और अन्त में सेल्डोनीमोव बिना बोनस के रह गया...ईवान को याद आया, आज से एक सप्ताह पहले, सेल्डोनीमोव ने उस से अपनी शादी करने की आज्ञा माँगी थी। उस समय उस विषय पर कुछ अधिक ध्यान देने का उस के पास समय न था, इसलिए शादी की बात योंही जल्दी में खत्म कर दी गयी थी। फिर भी उसे इतना तो खूब याद था कि सेल्डोनीमोव को दुलहिन के साथ एक लकड़ी का घर और चार सौ रूबल मिलने वाले थे। उस समय इस बात से उसे ताज्जुब हुआ था। उसे यह भी याद आया कि उस समय उसने सेल्डोनीमोव और म्लेकोपिताएव के खान्दानों के सम्बन्ध पर एक मामूली मज़ाक भी किया था। यह सब उसे साफ़-साफ़ याद हो आया।

यह सब उसे याद हो आया और वह गहरे—और भी गहरे विचारों में डूब गया। हम जानते हैं कि कभी-कभी हमारे दिमाग़ में एक हलचल की तरह विचारों का सिलसला इस तरह बँध जाता है कि उस का वर्णन मानवी भाषा में नहीं हो सकता, साहित्यिक भाषा में तो और भी नहीं ! तो भी हम अपने नायक के दिमाग़ में उठने वाले सभी भावों का वर्णन करने का प्रयत्न करेंगे, ताकि पाठक कम-से-कम मुख्य बातों को समझ सकें—कहने का मतलब उन बातों को समझ सकें, जो बहुत जरूरी और प्रत्यक्ष थीं। हमारे हृदय में उठने वाले भावों में बहुत से ऐसे होते हैं कि जिनका वर्णन यदि शब्दों में कर दिया जाय, तो वे बिल्कुल असम्भव लगेंगे। इसी कारण वे कभी प्रकाश में नहीं आते। वे हर एक के दिल ही में छिपे रह जाते हैं। यह सही कि ईवान के मनोभाव और विचार कुछ-कुछ असंगत थे, लेकिन आप तो इसका कारण समझते हैं।

'ऐसा क्यों है ?' ईवान के मस्तिष्क में कौंध उठा। हम बातें करते तो नहीं थकते, लेकिन जब कोई बात हमसे काम की माँग करती है, तो हमारी सब बातें धरी-की-धरी रह जाती हैं ? इसी सेल्डोनीमोव की बात लो, अभी-अभी वह अपनी शादी के उत्सव से लौटा है, हर्षोन्मादा आशाओं और आनन्द-भोग की उम्मीदों से भरा हुआ। उसके जीवन के ये सबसे अधिक सुखी क्षण हैं...अब वह अपने मेहमानों के साथ व्यस्त है – दावत देने में, एक मामूली, बिल्कुल अदना दावत, लेकिन सन्तोषप्रद और उल्लास-भरी, यदि उसे पता चल जाय कि मैं—मैं उसका अफ़सर—उसका सबसे बड़ा अफ़सर—उसके घर के सामने रुका संगीत सुन रहा हूँ, तो क्या होगा—हाँ, सच, तब वह क्या कहेगा ? और

अचानक यदि मैं उसके उस कमरे में दाखिल हो जाऊँ, तो उस पर क्या बीतेगी ? हूँ, बेशक पहले वह मुझसे डर जायगा, घबराहट से अवाक रह जायगा। मैं खलल डाल दूँगा उस खेल में, बिगाड़ दूँगा उसे—कदाचित उनका सारा-का-सारा खेल बिगड़ जायगा ! लेकिन नहीं, किसी दूसरे जनरल के जाने से ऐसा हो सकता है, मेरे जाने से नहीं। यही तो बात है, कोई और दूसरा मैं नहीं......

'जी, स्टेपन साहब, अभी आपने मुझे नहीं समझा, आपके लिए यहाँ एक ज्वलन्त उदाहरण है !

'हाँ, जनाब, मानवीयता को लेकर हम सभी शोर मचाते हैं। लेकिन हम एक साहसपूर्ण कदम, एक महान कदम, उठाने से घबराते हैं।

'कैसा साहसपूर्ण क़दम ? क्यों, यही ! ज़रा सोचो : मानव समाज के आज के सम्बन्धों के होते, मेरे लिए अपने एक मातहत, एक दस रूबल पगार पाने वाले रजिस्ट्रार के घर जाना—रात के एक बजे के करीब—एक हलचल पैदा कर देना है, पॉम्पेई* के अन्तिम दिन-जैसी हलचल... ..कोई इसे नहीं समझ सकता। स्टेपन अपनी मौत के दिन तक इसे नहीं समझ सकता। क्या उसने कहा नहीं कि हम कसौटी पर खरे नहीं उतर सकते ? नहीं, तुम नहीं उतर सकते कसौटी पर खरे, बूढ़े, अपंग, आलसी ! लेकिन मैं कसौटी पर चढ़ूँगा। मैं कसौटी पर खरा उतरूँगा। मैं अपने माहत के लिए पॉम्पेई के अन्तिम दिन को उसके जीवन के मधुर दिन में बदल दूँगा, मैं इस खामख्याली को एक सहज,

* पाम्पेई—इटली का प्रसिद्ध नगर था, जो ज्वालामुखी के फटने से तबाह हो गया था।

सरल, बाइज्जत, ऊँचे दर्जे के नैतिक कार्य में परिणत कर दूँगा। कैसे ? इस तरह ! मेहरबानी करके सुनो......

'कल्पना करो कि मैं वहाँ जाता हूँ—वे चकित हो जाते हैं, नाचना बन्द हो जाता है, सब चकित, विस्मित दिखायी देते हैं—एक दम स्तम्भित। हाँ, लेकिन इसी अवसर पर मेरी विशेषता खुलती है। मैं सीधे सहमे हुए सेल्डोनीमोव के पास जाता हूँ और एक असीम प्रियकर मुस्कान लिये हुए अत्यन्त सरल, सहज शब्दों में कहता हूँ,"देखो, मैं हिज़ एक्सलेंसी स्टेपन के यहाँ गया था। मेरा ख्याल है कि तुम उन्हें जानते हो, क्योंकि तुम उन के पड़ोसी हो।..." तब मैं अपने अत्यधिक विनोद भरे ढंग से ट्रीफ़न के साथ पेश आयी घटना का वर्णन करता हूँ। ट्रीफ़न के गाड़ी-समेत गायब होने के बाद मैं कैसे पदल चल पड़ा, यह बताता हूँ... "हाँ, तो मैंने संगीत की आवाज़ सुनी और मुझे यह जानने की उत्सुकता हुई कि यह कहाँ से आ रही है, सो मैंने एक पुलिसमैन से पूछा और सुना कि तुम, मेरे दोस्त ने अभी शादी की है। और मेरे मन में उठा कि अपने मातहत के घर जाकर देखूँ कि मेरे क्लर्क आपस में कैसे मौज उड़ाते हैं, कैसे शादी करते हैं। मेरा ख्याल है कि तुम मुझे बाहर न निकालोगे !"......मुझे बाहर निकालना ! एक ऐसे आदमी के लिए, जो मेरा मातहत है, यह कैसी बात रही ! वह मुझे बाहर निकालने की बात सपने में भी नहीं सोच सकता। वह तो मुझे देखते ही पागल हो जायगा, मेरे लिए हत्थेदार कुर्सी लाने को बेतहाशा भागेगा, खुशी के मारे काँपने लगेगा, पहले कुछ क्षण तो वह विमूढ़-सा खड़ा रह जायगा।

'भला ऐसे काम से अधिक सरल, अधिक सुन्दर क्या हो सकता है ?

मैं अन्दर क्यों आया हूँ ? यह तो एक दूसरा ही सवाल है। यह, याने विषय का नैतिक पहलू है। यही तो इसका सार है......

'हुँ...मैं किस विषय में सोच रहा था ? ओह, हाँ !

'तो मेरे लिए वे निश्चय ही जगह बनायेंगे। सबसे अधिक महत्वपूर्ण मेहमान के पास मुझे ले जाकर बैठायेंगे—किसी ऐसे मेहमान के पास, जो कोई टिटुलर काउंसिलर, या सम्बन्धी या लाल नाक वाला रिटायर्ड स्टाफ़-कैप्टेन होगा—वैसा ही, जैसा कि गोगोल ने वर्णन किया है ! निश्चय ही दुलहिन से वे मेरा परिचय करायेंगे। मैं उस की प्रशंसा करूँगा। मेहमानों को उत्साहित करूँगा। उनसे निवेदन करूंगा कि वे मेरी चिन्ता न करें, मौज मनायें और नाच जारी रखें।

'मैं वहाँ दिल्लगी करता हूँ, हँसता हूँ, हँसाता हूँ,—एक शब्द में, मैं मनहर बन जाता हूँ, एकदम सर्व-प्रिय ! मैं जब भी अपने से खुश रहता हूँ, तो मनहर और सर्वप्रिय बन जाता हूँ... हुँ ! बिल्कुल यही...मैं अब भी ज़रा-सा...नशे में...नहीं...आप तो जानते हैं, लेकिन बस ज़रा...

'......निश्चय ही मैं, वहाँ एक शरीफ की तरह, दूसरों के ही स्तर पर रहता हूँ, क्षण भर के लिए भी मुझे किसी विशेष आव-भगत या आदर-सत्कार की जरूरत नहीं। लेकिन नैतिक रूप से, नैतिक रूप से — वह एक दूसरा सवाल है, वे इसे समझेंगे और कद्र करेंगे......मेरा व्यवहार उनकी छिपी हुई शराफत को उभार देगा......खैर, मैं वहाँ आध घंटा बैठूँगा, कदाचित एक घंटा भी। हाँ, दावत के बाद मैं बेशक चला जाऊँगा। खाने पकाने में, सेंकने-भूनने में उन्होंने कष्ट उठाया होगा — मेरे उठते ही वे नीचे तक सिर झुकायेंगे— रुकने के लिए मुझसे सादर

अनुरोध करेंगे, लेकिन मैं सिर्फ दम्पति के स्वास्थ्य के लिए पीने को सिर्फ एक गिलास ले लूँगा और खाना खाने को मना कर दूँगा। मैं कहूँगा, "बिज़िनेस" और जैसे ही मैं कहूँगा, "बिज़िनेस", हर एक अपनी मुद्रा गम्भीर और सम्मानपूर्ण बना लेगा। ऐसा करके मैं एक मधुर ढंग से यह प्रकट करूँगा कि वे कौन हैं और मैं कौन हूँ—एक अन्तर तो है ही– ज़मीन और आसमान—ऐसा नहीं कि मैं बताना चाहता हूँ, लेकिन आदमी को ज़रूर यह समझना चाहिए—नैतिकता की दृष्टि से यह आवश्यक है......चाहे आप जो कहें......मैं उस अवसर पर मुस्कराऊँगा, कदाचित हँसूंगा भी और बाद में सभी मेरी ताईद करेंगे! ......फिर मैं दुलहिन के साथ मज़ाक कर सकता हूँ......हुँ,—मैं यहाँ तक कह सकता हूँ - हाँ, मैं संकेत कर सकता हूँ कि ठीक नौ महीने बाद मैं फिर आऊँगा, धर्म-पिता के रूप में! ही, ही, ही! उस समय तक अवश्य उसके एक बच्चा हो जायगा......ये साले चूहों की तरह बच्चे पैदा करते हैं......हर आदमी हँसेगा और दुलहिन लाजसे लाल हो जायगी। मैं एहसास के साथ उसका माथा चूम लूँगा। शायद मैं उसे आशीर्वाद भी दूँ, और...और कल दफ्तर में हर आदमी मेरी इस हरकत के बारे में जान जायगा। लेकिन कल मैं फिर सख्त हो जाऊँगा, वही सख्ती से काम लेने वाला, लोहे-सा कठोर अफ़सर! लेकिन तब वे जान जायेंगे कि मैं ऐसा ही हूँ। वे मेरी आत्मा को समझ जायेंगे, बुनियादी तथ्य को वे समझ जायँगे – "एक अफसर के रूप में वह सख्त है, लेकिन एक आदमी के रूप में वह एक फ़रिश्ता है!" '......वे कहेंगे और यों मैं कसौटी पर खरा उतरूँगा एक

ऐसे मामूली ढंग से, जो तुम्हारे दिमाग़ में कभी भी नहीं आ सकता; योर ऐक्सलेंसी, स्टेपन साहब ! अब वे मेरे होंगे, मैं पिता, वे बच्चे ! योर ऐक्सलेंसी स्टेपन, ज़रा इसी तरह का कोई काम आप तो कर दिखाइए !

'......हुआ मालूम कुछ आपको ? आया कुछ आपकी समझ में ? सेल्डोनीमोव अपने बच्चों को बतायेगा कि कैसे जनरल ईवान उत्सव में आये थे और उसकी शादी के मौके पर उन्होंने पी थी ! और वे बच्चे अपने बच्चों को बतायेंगे, और वे अपने पोतों को पवित्र-कथा की तरह बतायेंगे कि उस नेता, उस महान् राजनीतिज्ञ ने (उस समय तक तो मैं यह-सब कुछ हो ही जाऊँगा ।) किस तरह हमारा सम्मान बढ़ाया; आदि, आदि...नैतिक रूप से गिरे हुए को मैं ऊँचा उठा दूँगा । मै उसे जैसे उस का स्वत्व प्रदान कर दूँगा । क्योंकि आखिर है तो वह दस रूबल महीना पाने वाला अदना क्लर्क ही...! मुझे बस—यही ढंग पाँच या दस बार दोहराना होगा और मैं हर जगह लोकप्रिय हो जाऊँगा । मैं सभी दिलों पर नक्श हो जाऊंगा और यह सिर्फ़ शैतान ही जानता है कि बाद में इस सब लोकप्रियता का क्या फल होगा !...'

इस तरह या लगभग इसी तरह ईवान ने अपने से तर्क किया (हाँ, सज्जनो, कभी-कभी, विशेषकर जब आदमी की दशा कुछ झक्की किस्म की होती है, वह बहुत-सी बातें स्वयं अपने से कहने लगता है ।) ये सब तर्क ईवान के दिमाग़ में आध एक मिनट में कौंध गये और यह

सम्भव है कि वह इन विचारों ही से सन्तुष्ट हो जाता और सिर्फ़ दिमाग़ी तौर पर स्टेपन को लज्जित करके शान्तिपूर्वक घर चला जाता और अपने नर्म-गर्म बिस्तर पर जा दराज़ होता। (वह यों करता, तो उस के लिए अच्छा ही होता !) लेकिन मुश्किल तो यह है कि वह घड़ी सनक की एक घड़ी थी और वह कुछ सरूर में था। सरूर की सनक में, जैसा कि आप जानते हैं......

और जैसे किसी खास उद्देश्य से उस क्षण अचानक उस ने अपनी आवेशपूर्ण कल्पना में स्टेपन और सेमन के आत्म-तुष्ट चेहरों को अपने समक्ष ला चित्रित किया।

"कसौटी पर हम खरे नहीं उतर सकते," स्टेपन ने धृष्टतापूर्वक मुस्करा कर दुहरा दिया था।

"ही, ही, ही, !" सेमन ने बेहद भद्दी हँसी के साथ प्रतिध्वनि की।

"देखना चाहिए कि आया सचमुच हम कसौटी पर खरे नहीं उतरते ?" ईवान ने दृढ़ता के साथ कहा और उस का चेहरा तमतमा उठा। तख्तेदार पटरी से वह नीचे उतरा, मज़बूत कदमों से सड़क को पार किया, और अपने मातहत, रजिस्ट्रार सेल्डोनीमोव के घर में दाखिल हो गया।

३

ईवान की किस्मत उसे रास्ता दिखा रही थी। वह छोटे दरवाज़े से बेधड़क गुज़र गया। तभी एक खुजली-मारा बड़े-बड़े बालों वाला छोटा-सा कुत्ता भयंकरता से ज्यादा स्वामित्व की भावना से भूँकता हुआ, उस की टांगों से आ लिपटा। ईवान ने अपार उपेक्षा की एक नज़र उस पर डाली और पैर से उसे एक ओर ढकेल दिया। तब वह तख्तों पर से हो कर सामने के दरवाज़े और निकले हुए टीन की छत वाले छोटे ओसारे में पहुँचा और लकड़ी की तीन कूबड़ी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद नन्हें-से प्रवेश-द्वार पर आ गया। सामने के एक कोने में चर्बी की मोमबत्ती जल रही थी, किन्तु वह तेज़ कदमों से बढ़े आते ईवान के बायें पाँव को, ठंडा होने के लिए रखे गये शोरबेदार गोश्त के एक बर्तन में पड़ने से न रोक सकी। ईवान ने तत्काल पाँव बाहर निकाल

लिया। वह नीचे झुका, उत्सुकता से झाँकते हुए उस ने देखा कि वहाँ दो और खाद्य-पदार्थ किसी जेली के साथ रखे हुए हैं; मिट्टी के दो बर्तन भी पड़े हैं, जिन में कुछ और सामान पड़ा है। रसेदार मांस में पाँव जा पड़ने से उस का दिमाग़ गड़बड़ा गया और एक क्षण के लिए उस के मन में यह भाव उठा कि वह चुपके से वापस चला जाय। लेकिन ऐसा करना उसे कायरता लगी और स्टेपन के शब्द उस के कान में गूँज गये—कसौटी पर हम खरे नहीं उतर सकते—और वह निमिष भर वहीं रुक गया। उसे किसी ने देखा न था और न कोई उस पर सन्देह ही कर सकता था। उस ने जल्दी से अपने जूते और कपड़ों से शोरबे के चिन्ह मिटाये और टटोलते हुए आगे बढ़ा। तभी उस के हाथ बन्द किवाड़ों पर पड़े। सहसा वह रुक गया। निमिष भर में उस ने फिर अपने कपड़ों को ठीक किया और तब दरवाज़ा खोल दिया।

सामने एक छोटा-सा ओसारा था, जिसका आधा भाग सब तरह की पोशाकों, कोटों, रोयेंदार खालों के कपड़ों, दुपट्टों, हुडों, टोपियों, गुलूबन्दों से एक दम अटा पड़ा था, शेष आधे भाग में साज़िदे बैठे हुए थे—दो फिडिल, एक बांसुरी, एक बैंग बाजा, कुल चार आदमी थे। निश्चय ही वे रास्ते से पकड़ कर लाये गये थे। वे एक बेरंगी चौकी पर बैठे थे और चर्बी की एक मोमबत्ती की रोशनी में चार व्यक्तियों के नृत्य की आखिरी थाप पर ज़ोरों से साज़ बजा रहे थे। खुले हुए दरवाजे से धूल, तम्बाकू के धुएँ और रसोई से उठने वाली भाप के बादलों के बीच

नाचने वाले दिखायी पड़ रहे थे। वह कुछ अजीब हर्षोन्माद का दृश्य था। महिलाओं का शोर और किलकारियाँ सब आवाज़ों के ऊपर सुनी जा सकती थीं। मर्द अश्व-सेना के सवारों की तरह पैर बजा रहे थे। इस सब गुल-ग़पाड़े के ऊपर नाच के मास्टर के आदेश सुनायी पड़ रहे थे, जो प्रत्यक्ष ही एक उजड्ड, गँवार युवक था और नाच की धारा में एकदम डूब गया था। गीत चल रहा था। ईवान ने ज़रा उमंग में आकर अपना रोयेंदार खाल वाला कोट उतार लिया और खाल की टोपी हाथ में लिये कमरे में घुस पड़ा। अब तक वह होशोहवाश खो चुका था।...

पहले क्षण उसे किसी ने नहीं देखा, नाच समाप्ति पर था और कमरे का हर आदमी अपनी सुध-बुध खोये उस में मगन था। ईवान अवाक्-सा खड़ा तकता रहा। कमरे के गुल-ग़पाड़े में कुछ भी उस की समझ में न आया। महिलाओं की पोशाकें उस पर से हो कर उड़ गयीं; मुँह में सिगरेट दबाये मर्द उस की बग़ल से तेज़-तेज़ कदमों से गुज़र गये; किसी महिला का एक पीला-नीला गुलूबन्द उसकी आँखों के सामने लहरा गया और उस की नाक पर चोट करता चला गया; उस के पीछे सिर पर बिखरे बालों का चँवर लिये एक मेडिकल विद्यार्थी आया, जो पागल की तरह ईवान को अपने रास्ते से ढकेलता आगे बढ़ गया। एक लम्बी टांगों वाला किसी अनजान रेजीमेंट का अफ़सर, मील के पत्थर की तरह कठोर, जाने कहाँ से उस के सामने आ धमका; कोई और निकट ही उस की ही तरह पाँव पटकते हुए आया और अस्वभाविक चिल्लाहट के स्वर में चीख उठा, "आख--आ, सेल्डोनीमुश्का।"

ईवान के पाँवों के नीचे कुछ चिपचिपा-सा था; फर्श पर, निस्सन्देह, *मोम लगाया गया था। लगभग* तीस मेहमान कमरे में ज़रूर थे, (जो काफी बड़ा था।) दूसरे मिनट चार व्यक्तियों वाला वह नाच खत्म हो गया और तब दूसरे क्षण ठीक वही सब-कुछ हुआ, जिस की कल्पना ईवान ने बाहर सड़क के तख्ते पर खड़े-खड़े की थी। मेहमानों और नाचने वालों को अभी अपनी साँसें ठीक करने और अपनी भौंहों पर से पसीने पोंछने की मोहलत भी न मिली थी कि एक फुसफुसाहट तेज नागिन-सरीखी उन में गुज़र गयी—एक तरह की असाधारण फुसफुसाहट--सब आँखें, सब सिर तुरन्त नये आये हुए मेहमान की ओर मुड़ गये। तब धीरे-धीरे हर आदमी हटने लगा, पीछे खिसकने लगा। जिन्हों ने उसे न देखा था, उन्हें उन के कपड़ों से खींच कर बताया गया। उन्हों ने चारों ओर देखा और दूसरों की ही तरह पीछे हट गये। ईवान अभी बिना एक पग बढ़े चौखट ही में खड़ा था और उस के और मेहमानों के बीच का स्थान, जो मिठाइयों के बेगिनती कागजों, सिग्रेट के सिरों, और ट्रेन या बस के टिकटों से पटा पड़ा था, विस्तृत—और भी विस्तृत होता गया। इस स्थान में अचानक एक नौजवान ने शर्माते हुए क़दम रखा। उस के हल्के रंग के रूखे बाल थे और लम्बी टेढ़ी नाक और किसी सिविल सर्विस वाले का उतारा हुआ यूनीफ़ार्म वह पहने था। वह सिर झुकाये आगे आया और उस ने उस अनिमन्त्रित मेहमान की ओर वैसे ही देखा, जैसे एक कुत्ता अपने मालिक की ओर देखता है, जब वह उसे कोड़े लगाने के लिए बुलाता है।

"तुम कैसे हो, सेल्डोनीमोव ? मुझे पहचानते हो ?" ईवान ने कहा और साथ ही महसूस किया कि उस ने यह बात बड़े ही भद्दे ढंग से कही है। उस ने यह भी महसूस किया कि उस समय वह शायद कुछ बड़ा बेढब और मूर्खता भरा काम कर रहा है।

"योर एक्स—एक्स—एक्सलेन्सी," सेल्डोनीमोव हकलाया।

"वेल, मेरे दोस्त, बिल्कुल संयोग से मैं यहाँ आ निकला—जैसा कि शायद तुम समझ गये होगे।"

लेकिन यह प्रत्यक्ष था कि सेल्डोनीमोव कुछ न समझ पाया था। अपने सब से ऊँचे अफ़सर एक्चुएल स्टेट काउंसिलर जनरल ईवान की ओर मुटर-मुटर तकता हुआ वह एक भीषण अनिश्चतता की अवस्था में वहीं जमा खड़ा था।

"मेरा ख्याल है कि तुम मुझे निकाल बाहर न करोगे।...खुशी या नाखुशी से हमें अपने मेहमानों का स्वागत करना ही पड़ता है।" ईवान ने कहा और उसे लगा कि वह कुछ अजीब-सी गौरवहीन दुर्बलता का शिकार हो, बेतरह घबराया जा रहा है। उस ने मुस्कराना चाहा, लेकिन मुस्करा न सका। उसे लगा कि स्टेपन और ट्रीफन को ले कर जो बातें वह यहाँ करना चाहता था, वे उस की पकड़ से निकली जा रही हैं, असम्भव, अधिकाधिक असम्भव होती जा रही हैं।

इस बीच सेल्डोनीमोव, जैसे सोद्देश्य, उसे मूर्खों की तरह घूरता स्थिर बना रहा। ईवान परेशान हो उठा कि यदि एक मिनट और ऐसे ही गुजर गया, तो सब-कुछ एक ऐसी हास्यास्पद बेहूदगी में बदल जायगा, जिस पर किसी को भी विश्वास न होगा।

"क्या मैं ने किसी तरह का खलल डाला है—मैं चला जाऊँगा..." आधी सुनी जाने वाली आवाज में उस ने कहा और उस के मुँह के कोने की कोई रग झटका खा गयी।

लेकिन सेल्डोनीमोव इस से पहले ही सम्हल चुका था।

"योर एक्सलेन्सी, मुझे क्षमा करें!"—वह जल्दी में झुकता हुआ मुह में ही बोला, "आध-एक घंटा के लिये आसन ग्रहण करने की कृपा कीजिये!" और कुछ और सम्हल कर उस ने दोनों हाथों से सोफे की ओर संकेत किया, जिस के सामने से नाचने की जगह बनाने के लिए मेज़ हटा दी गयी थी।

ईवान ने मन-ही-मन एक सुख की साँस ली। उस की आत्मा से जैसे एक बड़ा भारी बोझ उतर गया और वह सोफे में धँस गया। उसी वक्त जल्दी से किसी ने उधर एक मेज बढ़ा दी।

उस ने चारों ओर नज़र दौड़ायी और देखा कि वह अकेले बैठा है, दूसरे सब, यहाँ तक कि महिलायें भी खड़ी हैं।—'यह तो अच्छा शगुन नहीं,' उस ने मन-ही-मन कहा, लेकिन उन्हें धैर्य बँधाने और उत्साहित करने का समय अभी नहीं आया था। मेहमान अब भी पीछे ही हटते जा रहे थे, और अकेला सेल्डोनीमोव ही सिर झुकाये उस के सामने खड़ा था। उस के मुस्कराने की बात अभी दूर थी, क्योंकि अभी उस की समझ में बिल्कुल न आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उस समय हमारे नायक ने ऐसी पीड़ा का अनुभव किया, जिस से, अपने मातहत के घर पर, खलीफ़ा हारून रशीद-सरीखा यह अज्ञात 'आक्रमण' एक वीरोचित कार्य

समझा जा सकता था !

अचानक एक दूसरा व्यक्ति सेल्डोनीमोव की बगल में प्रकट हुआ और सिर भी झुकाने लगा। ईवान ने हर्ष नहीं, एक अवर्णनीय प्रसन्नता के साथ अपने विभाग के हेडक्लर्क पेत्रोविच को पहचाना, जिस के साथ निस्सन्देह उस का कोई परिचय न था, लेकिन जिसे वह एक शान्त, काम-काजू अफ़सर के रूप में जानता था। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और अपना हाथ पेत्रोविच की ओर बढ़ा दिया--अपना पूरा हाथ, दो अँगुलियाँ नहीं। पेत्रोविच ने अत्यधिक सम्मान के साथ उस हाथ को अपने दोनों हाथों में ले लिया। जनरल सफल हुआ, स्थिति की रक्षा हो गयी।

वास्तव में, उस क्षण से सेल्डोनीमोव, ठीक कहें, तो दूसरा नहीं, बल्कि तीसरा व्यक्ति हो गया। अब ईवान हेडक्लर्क को इस ज़रूरत के समय अपना मित्र समझ कर (घनिष्ठ नहीं) उस से अपनी कहानी कह सकता था और सेल्डोनीमोव पूरे समय शान्त, भक्ति में सहमा, बगल में खड़ा रह सकता था। आखिर मलिकाई का सम्मान हुआ। ईवान ने यह महसूस किया कि वहाँ आने की कहानी कहना ज़रूरी है। उस ने देखा कि सभी मेहमान उस से कुछ उम्मीद लगाये हुए हैं; कि घर के सभी वासी दो दरवाज़ों में भीड़ लगाये बिल्कुल एक-दूसरे का कन्धा छीलते हुए उसे देखने और उस से कुछ सुनने के लिए उत्सुक खड़े हैं। कोई खटकने वाली चीज थी, तो वह यह कि केवल मूर्खतावश हेडक्लर्क अब तक बैठा न था।

"तुम क्यों नहीं...?" बेढंगे तौर पर अपनी बगल में सोफ़े की ओर

संकेत करते ईवान ने कहा।

"क्षमा करें, एक्सलेंसी—मेरे लिये यही काफ़ी है," और पेत्रोविच तत्काल उस कुर्सी पर बैठ गया, जिसे सेल्डोनीमोव ने जल्दी से उस के लिए खिसका दिया था। लेकिन स्वयं सेल्डोनीमोव लजाई हुई कुँवारी लड़की की तरह पूर्ववत् खड़ा रहा।

"क्या तुम एक ऐसी घटना की कल्पना कर सकते हो?"...... ईवान ने नाबराबर, किन्तु निश्चित स्वर में केवल हेडक्लर्क को अपनी ओर सम्बोधित करके कहना शुरू किया।

उस ने अपने शब्दों को खींचा, शब्दांशों को तोड़ा, कुछ अक्षरों पर विशेष ज़ोर दिया, जगह-जगह रुका और स्वयं मन-ही-मन स्वीकार किया, कि वह बनावट से बोल रहा है और अपने-आप पर पूरा अधिकार रखने में असमर्थ है। उसे लगा, जैसे कोई बाहरी शक्ति उसे बरबस वश में किये हुए है। उस समय वह अपनी कितनी ही त्रुटियों के प्रति सचेत हो गया। और मन-ही-मन उसे इस का दुख भी हुआ।

"ज़रा सोचो, मैं स्टेपन साहब के यहाँ से चला था," उस ने कहा—"तुमने उन के बारे में सुना होगा, वे प्रीवी काउंसिलर हैं, तुम्हें याद नहीं—उस समिति में... "

पत्रोविच ने ससम्मान अपना सारा शरीर झुका दिया..."भला यह कैसे हो सकता है, सरकार, कि मैं उन्हें न जानूँ।"

"वे तुम्हारे पड़ौसी हैं," ईवान ने जारी रक्खा और निमिष भर के लिए, विशेषकर मलिकाई की दृष्टि से, लेकिन आगे बात न बढ़ा सकने के

कारण दिमाग़ पर पड़े बोझ को हल्का करने के ख्याल से भी, वह सेल्डोनीमोव की ओर मुड़ा, लेकिन उस ने जैसे ही सेल्डोनीमोव की आँखों में देखा, तो उसे अहसास हुआ कि उस अकिंचन क्लर्क के लिए वह सारी-की-सारी बात नितान्त निरर्थक है और वह फिर हेडक्लर्क की ओर मुड़ा। "वे बुज़ुर्ग, जैसा कि तुम जानते हो, जीवन भर एक मकान खरीदने का सपना देखते रहे। आखिर उन्होंने एक खरीद लिया—एक बहुत ही अच्छा दोमंजिला मकान—और आज उनका जन्म-दिवस था—उन्होंने इसे पहले कभी नहीं मनाया, यहाँ तक कि उस तारीख को भी उन्होंने हमसे गुप्त रखा था। कंजूसी के कारण...और क्या...ही-ही-ही......और आज अपने नये घर से वे इतने खुश हुए कि उन्होंने मुझे और सेमेन साहब को निमंत्रित कर दिया। तुम सेमेन साहब को जानते हो न ?"

पेत्रोविच ने फिर सिर झुकाया—बड़ी गम्भीरता से वह फिर लगभग सारा-का-सारा झुक गया। ईवान को फिर कुछ साहस बँधा। तभी उस के दिमाग में यह बात उठी, कहीं हेडक्लर्क यह न समझ ले कि इस समय हिज एक्सलेन्सी के लिए वह एक आवश्यक अवलम्ब है। यह तो बड़ी बुरी बात होगी। लेकिन इस आशंका को दिमाग से हटा कर कुछ और साहस और खुलेपन से ईवान कहने लगा—

"हाँ, तो वहाँ हम तीनों बैठे रहे, और उन्होंने हमें शैम्पेन दिया। हमने बिज़िनेस की बातें की, यह, वह और दूसरी –आज की समस्यायें--हममें बहस छिड़ गयी ! ही, ही !"

पेत्रोविच ने सम्मान के साथ अपनी भौंहें उठायीं।

"लेकिन जो बात मैं कहना चाहता हूँ, उस का सम्बन्ध इसके बाद की घटना से है," ईवान ने हेडक्लर्क की उठी हुई भौंहों के उत्तर में कहा, "ग्यारह बजे हमने विदा ली—वे बड़े ही नियमित रूप से जीवन बिताने वाले शरीफ़ बुजुर्ग हैं—अपनी अद्‌भुत विद्‌वत्ता पर घमंड करने वाले—जल्दी सोओ जल्दी जागो—में विश्वास रखने वाले ही...ही...हो...शाम ही सोने चले जाते हैं, तुम तो समझते ही हो और फिर बुढ़ापा कड़वे करेले पर नीम का पानी—ही...हो...ही—हम घर के बाहर आये और—और जानते हो, क्या हुआ—ट्रीफन, मेरा कोचवान गाड़ी समेत गायब ! मुझे गुस्सा आया, और पूछा-ताँछा कि ट्रीफन और मेरी गाड़ी को क्या हुआ ? पता चला कि अभी मुझे देर लगेगी, ऐसा समझ कर वह किसी 'कुमा' या बहन, या भगवान जाने किसकी शादी में चला गया है—यहीं कहीं पीटर्सबर्ग साइड में, और अपने साथ गाड़ी भी लेता गया है।" मलिकाई के ख्याल से जनरल ने एक बार फिर एक नजर सेल्डोनीमोव की ओर देखा। उस ने यथायोग्य सिर झुकाया, लेकिन बिल्कुल वैसे नहीं, जैसा कि उसे एक जनरल के सामने झुकाना चाहिए था। 'इस के हृदय में सहानुभूति नहीं है,' निमिष भर को ईवान ने सोचा, 'दिमाग कम्बख्त इस क्लर्क का बिल्कुल ठस है।'

"भला ऐसी बात किसने सुनी होगी ?" पेत्रोविच ने बड़े आश्चर्य से कहा और आश्चर्य की एक धीमी फुसफुसाहट सारे कमरे में फैल गयी।

"तुम लोग मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हो, ट्रीफन की उस हिमाकत..." ईवान ने चारों ओर देखा। "वहाँ भला और क्या किया

जा सकता था, सो मैं पैदल ही चल पड़ा। मैंने सोचा कि अगर वहाँ निश्चय ही एक वंका* ग्रेट प्रॉस्पेक्ट तक पहुँच गया तो, मिल जायगा। ही-ही-हो।"

"ही, ही, ही!" पेत्रोविच ने ससम्मान प्रतिध्वनि की। फिर एक फुसफुसाहट---अब की चुहल की, भीड़ से गुजर गयी। उसी समय दीवालगीरों में से एक का शीशा जोर से गिर कर टूट गया। टुकड़ों को चुनने के लिए कोई लपक आया। सेल्डोनीमोव चौंक उठा और उस ने गुस्से से लैम्प की ओर घूरा। लेकिन ईवान ने उधर ज़रा भी ध्यान न दिया और फिर शांति छा गयी। वह फिर कहने लगा—

"मैं सड़क पर चल रहा हूँ—रात इतनी सुहानी है, इतनी शान्त। अचानक मैं सुनता हूँ संगीत, पैरों की थाप--नाच की गत पर उठती हुई पैरों की थाप! उत्सुकतावश मैं एक पुलिसमैन से पूछता हूँ। 'सेल्डोनीमोव की शादी है,' मुझे उत्तर मिलता है। हा--हा--हा--मेरे दोस्त, क्या तुमने पूरे पीटर्सबर्ग के लिए सुन्दर 'बाल'† का आयोजन नहीं किया है? हा-हा--हा!" वह सहसा सेल्डोनीमोव की ओर मुड़ कर फिर हँसा।

"ही, ही, ही! हाँ, सरकार!" पेत्रोविच ने प्रतिध्वनि की। मेहमानों में फिर एक हरकत हुई। लेकिन ईवान के लिए सब से अधिक परेशानी की बात यह हुई कि फिर भी सेल्डोनीमोव नहीं मुस्कराया, हालांकि सिर न झुकाने की ग़लती उस ने नहीं की। मालूम

---

* वंका—गाड़ी वाला

† बाल—एक नाच

होता था, जैसे वह लकड़ी का बना है।

'यह जरूर बेवकूफ है !' ईवान ने सोचा, 'नहीं तो, एक गधा भी मुस्करा उठा होता, और तब सब बातें एक धारा में बहती-सी चली जातीं।' वह अधीर हो उठा और उस क्लर्क की वज्रमूर्खता पर झुँझलाने के बदले उसने बात को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।—"मैं ने सोचा," वह हँसा। "अपने मातहत के घर होता चलूँ। वह मुझे निकालेगा नहीं, आप तो जानते ही हैं, खुशी या नाखुशी से हमें अपने मेहमानों का स्वागत करना ही पड़ता है। ही.. ही...ही... यदि मेरे कारण कोई विघ्न पड़ा हो, तो मुझे माफ़ करें, मैं चला जाऊँगा। मैं तो सिर्फ़ देखने चला आया ..."

थोड़ा-थोड़ा करके सारी-की-सारी भीड़ में एक हरकत हुई। पेत्रोविच के ओंठों पर एक मधुरतम मुस्कान आ गयी, जैसे वह कहना चाहता हो: 'योर ऐक्सलेन्सी क्या कहते हैं, भला आप कैसे विघ्न डाल सकते हैं!" मेहमान हिलने-डुलने लगे और उन के आचरण में आज़ादी के पहले चिन्ह दृष्टिगोचर हो उठे। इस से पहले ही महिलाओं में से अधिकतर बैठ गयी थीं। उन में से ज्यादा उम्र वालियाँ तो अपने को रूमालों से हवा करने की हिम्मत तक करने लगीं।

'यह अच्छा शगुन है,' ईवान ने सोचा।

तभी मखमल की मैला-कुचैली पोशाक पहने एक महिला ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगी। जिस अफ़सर से वह बात कर रही थी, वह उसे उस से भी ज़्यादा ऊँचे स्वर में जवाब देने जा रहा था, लेकिन क्योंकि वहाँ केवल वही दो बोल रहे थे, इसलिए वह हिचक-सा गया। मर्दों

ने, जिनमें अधिकतर सरकारी क्लर्क और थोड़े से विद्यार्थी थे, इधर-उधर ऐसे देखा, जैसे और भी आज़ादी (से आचरण करने) का तकाज़ा कर रहे हों—वे खाँसे और इधर-उधर एक या दो कदम चलने-फिरने भी लगे। कोई भी किसी तरह की बाधा अनुभव न कर रहा था, लेकिन सभी लजा रहे थे और लगभग सभी मन-ही-मन उस एक्सलेंसी के बच्चे को कोस रहे थे, जिसने आकर उन के रंग में भंग डाल दिया था। वह अफ़सर अपनी झिझक के कारण शरमा गया और धीरे-धीरे ईवान के निकट आने लगा।

"सुनो, मेरे दोस्त ! क्या मैं तुम्हारा नाम और खानदानी नाम पूछ सकता हूँ ?" सहसा ईवान ने सेल्डोनीमोव से पूछा।

"पारफ़ायरी पेत्रोव, योर एक्सलेंसी !" उसने आँखों से ऐसे घूरते, जैसे वह परेड कर रहा हो, जवाब दिया।

"पारफायरी पेत्रोव, क्या तुम अपनी जवान बीवी से मेरा परिचय न कराओगे ? मुझे ले चलो......"

वह उठने लगा, लेकिन सेल्डोनीमोव अपने पैर की पूरी शक्ति से ड्राइंग रूम की तरफ तेज़ी से भागा, दुलहिन दरवाज़े पर ही खड़ी थी, इसलिए उसे दूर न जाना पड़ा। लेकिन जैसे ही दुलहिन ने बात-चीत को अपनी ओर मुड़ते सुना था, वह तुरन्त ही छिप गयी थी। एक मिनट में सेल्डोनीमोव उसका हाथ पकड़े, उसे लिये आ गया। हर एक ने उन के लिए रास्ता दे दिया। ईवान शिष्टाचार के साथ सोफे से उठ खड़ा हुआ और अपनी सबसे अधिक प्रियकर मुस्कान के साथ बड़े रईसाना ढङ्ग के साथ बोला—

"तुम से परिचित हो कर मैं बहुत-बहुत खुश हूँ," उसने कहा, "विशेष कर एक ऐसे अवसर पर !"

अपनी ढली हुई मुस्कान वह ओंठों पर लिये रहा। महिलाओं में एक खुशी-भरी हलचल दौड़ गयी।

"चार्मी"* मखमल की पोशाक वाली महिला लगभग चिल्ला उठी।

दुलहिन सेल्डोनीमोव के योग्य थी। वह मुश्किल से सत्रह साल की पतली, नन्हीं युवती थी, बहुत ही नन्हें, पीले मुखड़े और तीखी, नन्हीं नाक वाली। उस की छोटी मर्मभेदी आँखों में, जो तेजी से इधर-उधर नाच रही थीं, ज़रा भी घबराहट न थी, बल्कि वे एक टक उस की ओर एक शरारत के भाव से—कोई भी उस शरारत को उसकी आखों में देख सकता—देख रही थीं। प्रत्यक्ष ही सेल्डोनीमोव ने उसे उसकी सुन्दरता के कारण ही चुना था। वह गुलाबी अस्तर पर सफेद तंजेब की पोशाक पहने थी। उसकी गर्दन पतली थी, उसका जिस्म चूजे की तरह था, उसकी हड्डियाँ उभरी हुई मालूम पड़ती थीं। जनरल की बधाई के जवाब में उसे कुछ भी कहना न था।

"तुम्हें बहुत सुन्दर, नन्हीं बीवी मिली है," ईवान ने धीमी आवाज में कहा, जैसे कि केवल सेल्डोनीमोव से ही कह रहा हो, लेकिन इस तरह कि दुलहिन भी सुन सके। लेकिन फिर भी सेल्डोनीमोव के पास कुछ कहने को न था और इस बार तो उसने सिर भी न झुकाया।

---

*चार्मी = आकर्षक, मधुर।

ईवान को लगा, जैसे उसे उसकी आँखों में कोई शीतल-सी छिपी हुई चीज दिखाई पड़ी हो, जैसे उसके दिमाग में कोई खास बात हो, ईर्ष्या की हल्की-सी कसक। लेकिन चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, उसकी बेहतर भावनाओं का छूना आवश्यक था। उसके वहाँ होने का उद्देश्य ही यह था!

'एक बढ़िया जोड़ा,' उसने सोचा, 'फिर भी—' और अपनी बगल में सोफे पर दुलहिन के लिए जगह बनाते हुए वह फिर उस की ओर मुड़ा, लेकिन उससे उसने जो दो-तीन सवाल किये, उन के जवाब फिर उसे 'हाँ' या 'ना' में ही मिले, और ये शब्द भी वह मुश्किल से सुन सका।

'यदि यह सिर्फ ज़रा घबरायी होती,' वह सोचने लगा, 'तो मैं एक दिल्लगी करने की हिमाकत करता। इस परिस्थिति में तो मेरी स्थिति निस्सहाय है।''

पेत्रोविच भी, जैसे किसी कारणवश ही, चुप था, यह महज बेवकूफी थी, फिर भी माफ करने लायक नहीं।

''महिलाओ और सज्जनो! मुझे उम्मीद है, कि मैंने आप के खुशी मनाने में कोई बाधा नहीं डाली है,'' ईवान ने पूरी पार्टी को सम्बोधित करते हुए कहा।

उसे लगा कि उस की हथेलियों से पसीना छूट रहा है।

''नहीं, नहीं, सरकार! यह सोचने का आप कष्ट न करें, योर एक्सलेन्सी! हम जल्दी ही फिर शुरू करेंगे, बस ज़रा सुस्ता रहे हैं।'' अफ़सर ने जवाब दिया।

दुलहिन ने उस की ओर ताईद में देखा, अफ़सर बूढ़ा न था और किसी अनजान सेना का यूनीफार्म पहने था। सेल्डोनीमोव उसी स्थान पर खड़ा था और लगता था कि उस की नाक ऐसे चिपक गयी है, जैसे पहले कभी भी न चिपकी थी। 'यह अपने मालिक के रोंयेदार खाल का कोट थामे और उस के विदा होने का इंतज़ार करते हुए एक नौकर की तरह खड़ा है,' यह बात ईवान ने स्वयं अपने से कही, वह खोया-सा अनुभव करने लगा। उस के मन में कष्टकर भाव उठने लगे, भयंकर रूप से कष्टकर, जैसे उस के पाँवों के नीचे से धरती खिसकी जा रही हो, जैसे कि वह एक ऐसी जगह आ फँसा हो, जहाँ से निकलना मुश्किल हो, जैसे कि वह अँधेरी खोह में जा गिरा हो और बेबसी से टामक टोये मार रहा हो।

४

सहसा सब पीछे हट गये और एक नाटी औरत सामने आयी। वह जवान न थी, बहुत सादे कपड़े पहने थी, यद्यपि उससे प्रकट था कि उसने चुस्त बनने की कोशिश की थी, उसने गले से बाँध कर एक बड़ी शाल कन्धों पर पहन रखी थी और एक टोपी, जिसकी वह अनभ्यस्त मालूम पड़ती थी, सिर पर सजाये थी। उस के हाथ में एक छोटी, गोल ट्रे थी, जिसमें एक खुली हुई भरी शैम्पन की बोतल थी और दो गिलास थे, अधिक या कम नहीं। साफ ज़ाहिर था कि बोतल केवल दो ही मेहमानों के लिए थी।

वयस्क स्त्री सीधे जनरल के पास आयी।

"योर एक्सलेन्सी से मैं अपने बड़प्पन का ख्याल न करने की अर्ज़ करती हूँ," उसने सिर झुका कर कहा, "क्योंकि आप ने मेरे बेटे के ब्याह

का सम्मान बढ़ाने के लिए हमारे बीच आने की नम्रता दिखायी है ! आप इस जवान जोड़े के स्वास्थ्य के लिए एक आध जाम पीकर हमारा मान बढ़ायें ! हमें यह सम्मान देना आप अस्वीकार न करेंगे !"

इवान ने उस की ओर जैसे मुक्ति पाने के लिए देखा। वह हर्गिज एक बूढ़ी औरत न थी। लगभग पैंतालीस या छियालीस की, अधिक की नहीं। लेकिन उस का मुखड़ा इतना प्यारा, गुलाबी था—इतना खुलता, गोल रूसी मुखड़ा—इतने अच्छे स्वभाव से वह मुस्करा रही थी, इतने भोलेपन से उसने सिर झुकाया कि ईवान ने खासे आराम का अनुभव किया और उसे फिर आशा बँध गयी।

"तो तुम-तुम अपने बेटे की...अ...अ—माँ—हो ?" सोफे से उठते हुए ईवान ने कहा।

"मेरी माँ, योर ऐक्सलेन्सी !" सेल्डोनीमोव ने अपनी गर्दन बढ़ा कर, नाक सिकोड़ कर मुँह में ही कहा।

"अख्खाह, बहुत खुशी हुई, बहुत खुशी हुई, तुमसे परिचित हो कर !"

"योर ऐक्सलेन्सी को कोई आपत्ति तो नहीं ?"

"आपत्ति.....हीं.....हीं ....हीं, मुझे बड़ी खुशी होगी !"

ट्रे मेज़ पर रख दी गई, शराब ढालने के लिए सल्डोनीमोव झपाके से आगे आया और ईवान ने खड़े-खड़े ही एक गिलास लिया।

"मैं विशेषत:—खास तौर पर—इस अवसर पर खुश हूँ कि मैं—" उसने कहना शुरू किया, "कि मैं इससे प्रकट कर सकता हूँ...सङ्क्षिप्त में, तुम्हारे मुख्य अफ़सर की हैसियत से – तुम्हारे लिए मेरी शुभ कामना है ! और मादाम," (और वह दुलहिन की ओर मुड़ा) तुम्हारे लिए भी ! मेरे

दोस्त पारफ़ायरी, तुम दोनों के लिए मैं हर सम्भव समृद्धि और लम्बे सुख की शुभ कामना करता हूँ !"

और उसने एहसास के साथ गिलास खाली कर दिया। उस रात यह सातवाँ था। सेल्डोनीमोव गम्भीर दिखायी देता था और उदास भी। जनरल उससे दिल से नफ़रत करने लगा।

'और यहाँ यह बड़ा भकुआ (उसने अफ़सर की ओर देखा) खड़ा है, क्यों नहीं "हुर्रा" चिल्लाता ? तब हर चीज़ ठीक-ठीक चलने लगेगी।'

"और तुम भी, पेत्रोविच, एक गिलास पिओ और इन्हें बधाई दो," हेडक्लर्क की ओर मुड़ कर बूढ़ी औरत ने कहा। "तुम इसके अफसर हो, यह तुम्हारा मातहत है। तुम इसका ख्याल रखना, इसकी माँ की ख़ातिर ! आगे हमें भूल न जाना। एक जाम पियो, दोस्त पेत्रोविच, तुम कितने अच्छे और कृपालु हो !"

'यह बूढ़ी रूसी स्त्रियाँ कैसी मोहिनी, मनोहारिनी होती हैं !' ईवान ने सोचा, 'इसने हम सब में नयी ज़िन्दगी भर दी है...मैं ने हमेशा जनता को प्यार किया है।'

उसी समय एक दूसरी ट्रे लायी गयी और मेज़ पर रख दी गयी। इसे एक कोरी, कड़कदार छींट की पोशाक और घोड़े के बालों से बनी हुई स्कर्ट पहने एक लड़की लायी थी। ट्रे इतनी बड़ी थी, कि मुश्किल से वह उसे अपने दोनों हाथों से सम्हाल पा रही थी। उसमें सेबों, मिठाइयों, पगे हुए फलों, फलों के मसालेदार मुरब्बों, अखरोटों और दूसरे जलपान की चीजों की अनगिनत तश्तरियाँ थीं। सब मेहमानों,

विशेषकर महिलाओं के जलपान के लिए यह ट्रे अभी तक ड्राइंग रूम में रखी हुई थी, लेकिन अब उसे सिर्फ़ जनरल के लिए लाया गया ।

"मुझे आशा है कि योर एक्सलेन्सी हमारे भोजन की अवहेलना न करेंगे। आदमी के पास जो कुछ हो, उसी से संतुष्ट रहना चाहिए।" बूढ़ी औरत ने फिर सिर झुका कर कहा।

"खुशी से!" ईवान ने एक अखरोट उठाते हुए कहा, जिसे उस ने अपनी अँगुलियों के बीच तोड़ा। अन्त तक उस ने अपने को लोकप्रिय बनाये रखने की ठान ली थी।

उसी समय दुलहिन खिलखिला कर हँस पड़ी।

"हँसने की क्या बात है?" ईवान ने ज़िन्दगी का एक चिन्ह देख कर, खुश हो कर पूछा।

"वह 'किचिन' ही मुझे हँसा रहा है," दुलहिन ने सीधे जवाब दिया।

जनरल ने चारों ओर नज़र दौड़ायी और एक बहुत ही सुन्दर, खूबसूरत बालों वाले युवक को देखा, जो सोफ़े के दूसरी ओर एक कुर्सी के पीछे अपने को छिपाने की कोशिश कर रहा था और जो श्रीमती सेल्डोनीमोव से कुछ फुसफुसा कर कह रहा था। युवक उठ खड़ा हुआ। देखने में ही वह बहुत कमउम्र और मुँहचोर लगता था।

"मैं इसे एक 'ड्रीम बुक'* के बारे में बता रहा था, योर एक्सलेंसी" जैसे अपने को ही माफ़ करने के लिए वह ओंठों ही में बोला।

---

* ड्रीम बुक=सपनों का हाल बताने वाली पुस्तक।

"कैसी ड्रीम बुक ?" ईवान ने नम्रता से पूछा।

"एक नयी ड्रीम बुक है, सरकार, एक सुन्दर पुस्तक, सरकार। मैं ने उसमें पढ़ा था, सरकार, कि यदि कोई 'पानेव' का स्वप्न देवे, तो उस का यह मतलब है कि वह अपने दामन पर कॉफ़ी* छलकायेगा, सरकार।"

'कैसा गँवार है!' ईवान ने चिड़चिड़ाहट के साथ सोचा।

युवक, जो कि बोलते समय बहुत सुर्ख़ हो गया था, 'पानेव' के बारे में यह कहानी सुना कर बहुत खुश हुआ।

"हाँ, हाँ, मैं ने उस के बारे में सुना है," हिज़ एक्सलेन्सी ने जवाब दिया।

"इससे भी बढ़ कर दिलचस्प एक बात है, सरकार," ईवान के पास ही बैठा एक दूसरा मेहमान बोल उठा, "एक नयी पुस्तक छप रही है और यह कहा जाता है कि उसमें 'क्राएवर्स्की' 'अल्फेराकी' पर एक लेख लिखेंगे।"

"जो विवादास्पद होगा," एक तीसरा युवक बोला, जो घबराया होना तो दूर, एकदम निडर था। वह सफेद वास्केट और दस्ताने पहने था और उस के हाथ में एक हैट था। वह नाचता न था, लेकिन शान्त भाव से देख रहा था, क्योंकि वह एक व्यंगात्मक मासिक 'फ़ायर ब्रॉण्ड' में काम करता था। वह संगत को दिलचस्प बनाता था और संयोग से सेल्डोनीमोव का सम्मानित मेहमान हो कर आया था। इन

---

* कॉफ़ी = Coffee = एक पेय

युवकों में बड़ी घनिष्टता थी, एक साल पहले वे अपनी गरीबी और एक जर्मनी स्त्री-द्वारा संचालित लॉज* के एक कमरे के एक कोने में बराबर के भागीदार रहे थे। वह वोडका† पीने के प्रतिकूल न था और इसी उद्देश्य से वह पहले भी कई बार पीछे के एक कमरे में गायब हो चुका था, जिसका रास्ता सभी को मालूम था और जहाँ वोडका-पान का समुचित प्रबंध था।

'फायर ब्रॉण्ड' में काम करने वाले उस युवक ने हिज़ एक्सलेन्सी को बहुत गुस्सा दिला दिया।

हुआ यों कि सुन्दर बालों वाले युवक ने, जिसने 'दामन' की कहानी सुनायी थी और जिसे सफेद वास्केट वाला युवक नफ़रत से घूर रहा था, 'फ़ायर ब्राण्ड' के पत्रकार की बात काट कर कहा, "और यह दिलचस्प बात है, सरकार, क्योंकि लेखक का ख्याल है कि फ्राएवरकी को हिज्जे भी नहीं आते और वह समझता है कि 'विवादास्पद साहित्य' 'वि' से लिखा जाता है।"

बेचारा युवक मुश्किल से अपनी बात खतम कर सका। ज्योंहीं

---

* लॉज = Lodge = वासा

† वोडका = रूसी ठर्रा

उसकी आँखें ईवान से चार हुईं, उसे मालूम हो गया कि हिज़ एक्सलेन्सी पहले ही इसका मतलब समझ गये हैं। ईवान भी ठीक इसी कारण घबराया-सा दिखायी दे रहा था, क्योंकि वह यह जानता था। युवक अपने ही से आशातीत रूप से ऐसा शर्मा गया कि वह कहीं जाकर छिप गया और पूरी रात उदास बना रहा। उसकी जगह पर वह 'फायर ब्राण्ड' का पत्रकार और नज़दीक आ गया और लगा कि उसकी इच्छा जनरल के अगल-बगल बैठने की है। यह बात ईवान के दिमाग पर बड़ा बोझ बन गयी।

"हाँ तो, पारफ़ायरी, तुम बताओ," ईवान कुछ कहने की ग़रज़ से बोला, "मैं हमेशा व्यक्तिगत रूप से यह पूछना चाहता था, क्यों तुम सेल्डोनीमोव पुकारे जाते हो, स्युडोनीमोव नहीं? निश्चय ही तुम्हें स्युडोनीमोव पुकारा जाना चाहिए!"

"मैं ठीक कारण नहीं बता सकता, योर एक्सलेन्सी," सेल्डोनीमोव ने उत्तर दिया।

"शायद इसका बाप, जब नौकरी पर लगा, सरकार, तो कागजों में कोई गलती हो गयी, इसी कारण वह सेल्डोनीमोव रह गया," पेत्रोविच ने व्याख्या की, "ऐसी बातें हो जाती हैं, सरकार।"

"नि-स्स-न्देह!" ईवान ने जैसे अपने ही से खुश हो कर कद्रे जोश से कहा, "निस्सन्देह, क्योंकि-तुम खुद सोच सकते हो, स्युडोनीमोव का अपना मूल रूप साहित्यिक शब्द 'स्युडोनीम' में है, लेकिन सेल्डोनीमोव का तो कोई मतलब ही नहीं।"

"यह मूर्खतावश हुआ, सरकार," पेत्रोविच ने कहा।

"कैसे—मूर्खतावश किस तरह ?

"रूसी लोग, बहुधा अपनी मूर्खतावश, अक्षर बदल देते हैं, सरकार, और अपने ही तरीके से उच्चारण करते हैं, सरकार। एक उदाहरण लीजिए, वे कहते हैं 'नेवैलिड' जब कि कहना चाहिए 'इनवैलिड,' सरकार।"

"हाँ, हाँ, 'नेवैलिड', ही, ही, ही।"

"वे 'मम्बर' भी कहते हैं, सरकार!" लम्बा अफ़सर, जिसे अपने को आगे लाने की बहुत देर से खुजलाहट हो रही थी, सहसा बोल उठा।

"मम्बर से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"नम्बर के बदले मम्बर सरकार !"

"अरे, हाँ, बिल्कुल ऐसा ही, 'नम्बर' के बदले 'मम्बर'।.... हाँ-हाँ-हाँ....ही-ही-ही, !" अफ़सर की दिल्लगी पर ईवान हँसने के लिए मजबूर हुआ।

"और वे 'बास्ट' भी कहते हैं," 'फायर ब्राण्ड' के पत्रकार ने व्याख्या की, लेकिन हिज़ एक्सलेन्सी ने उसकी बात न सुनने की कोशिश की। ईवान हर आदमी के लिए हँसने नहीं जा रहा था !

"पास्ट के बदले बास्ट," पत्रकार स्पष्टत: चिढ़ के साथ अड़ा रहा।

ईवान ने उसकी ओर सख्ती से देखा।

"क्यों स्वयं अपनी भद करा रहे हो ?" सेल्डोनीमोव पत्रकार से फुसफुसाया।

"क्या मतलब ? मैं बात ही तो कर रहा हूँ। क्या कोई बोले नहीं ?" वह फुसफुसाहट में ही तर्क करने लगा, लेकिन वह तुरन्त चुप हो गया और एक चिढ़ के साथ उसने वह कमरा छोड़ दिया।

वह सीधे पिछले कमरे में गया, जो सभी पुरुषों के आकर्षण का केन्द्र था और जहाँ शाम ही से पुरुषों के उपयोगार्थ एक तंजेब के मेज़पोश से ढँकी हुई एक छोटी मेज़ रखी थी, जिस पर उन के मन-बहलाव के लिए दो प्रकार की वोडका, मछली के कटे, मसाले में भुने हुए टुकड़े और एक 'राष्ट्रीय भट्ठी' की सबसे अधिक तेज शेरी की बोतल रखी थी। दिल में कड़वाहट लिये हुए अभी उसने एक गिलास वोडका ढाला ही था कि वह बिखरे बालों वाला मेडिकल विद्यार्थी भी घुस आया। वह मुख्य नाचनेवाला था और सेल्डोनीमोव के यहाँ के 'बाल' का अगुआ था। उसने बड़े सतृष्ण भाव से बोतल उठायी।

"नाच बिल्कुल शुरू होने जा रहा है," जल्दी में उसने कहा, जैसे आदेश दे रहा हो कि आओ और देखो, "मैं अपने सिर पर खड़ा हो कर उन्हें एक 'सोलो'* दिखाऊँगा और खाने के बाद एक 'कैन-कैन'† दिखाने का संकट मोल लूँगा। यह ब्याह के उत्सव के बिल्कुल अनुकूल होगा—सेल्डोनीमोव के प्रति एक तरह का मित्रता का संकेत ! वह एक अच्छी औरत है, वह सेमेनावना, उस के लिए तुम कोई भी संकट मोल ले सकते हो।"

---

* सोलो—एक ही व्यक्ति-द्वारा किया जाने वाला नृत्य, गान आदि।

† एक दूसरा कठिन नाच, जिसमें पैर बहुत ही ऊँचे फेंके जाते हैं।

"वह एक प्रतिगामी है," लेखक (पत्रकार) ने गिलास खाली करते हुए उदासी के साथ कहा।

"कौन प्रतिगामी है ?" विद्यार्थी चौंका।

"वह व्यक्ति, वह, जिसके सामने अभी उन्होंने मिठाइयाँ रखी हैं। प्रतिगामी है !...मैं विश्वास दिलाता हूँ।"

विद्यार्थी का ध्यान शायद सेमेनावना की ओर लगा था, वह ओंठों ही में बोला, "जल्दी करो।" और जैसे ही दूसरे चार व्यक्तियों का नाच शुरू होने की संकेत-ध्वनि सुनायी पड़ी, वह तत्काल कमरे से निकल गया।

अकेले रह जाने पर 'फ़ायर ब्राण्ड' के लेखक ने अपनी स्वाधीनता और साहस को मज़बूत करने के लिए दूसरा गिलास ढाला, पी गया और फिर जल्दी-जल्दी नाश्ता करने लगा।

हिज़ एक्सलेन्सी दी प्रिवी काउंसिलर ईवान ने इसके पहले कभी इससे अधिक कठोर शत्रु या अधिक निर्दयी प्रतिशोधी न बनाया था, जैसा कि उसने अनजाने ही इस 'फायर ब्रॉण्ड' के तुच्छ कार्यकर्त्ता को बना लिया—विशेषकर दो गिलास वोडका के बाद। अफसोस कि ईवान को इस तरह की किसी बात का कभी सन्देह न था। उसे एक दूसरी बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात का भी सन्देह न हुआ, जिसका हिज़ एक्सलेन्सी और मेहमानों के बाद के आपसी सभी सम्बन्धों पर असर हुआ था। बात यह है कि यद्यपि उसने अपनी तरफ से अपने मातहत की शादी में उपस्थित होने की उचित तथा विस्तृत व्याख्या दे दी थी, पर वास्तव में उस की व्याख्या

से कोई भी सन्तुष्ट न हुआ था और और मेहमान पूर्ववत् संकोच अनुभव करते रहे थे। लेकिन सहसा हर चीज जैसे जादू के असर से बदल गयी और लोग शान्त हो गये और कुछ ऐसे हँसने, शोर मचाने, और नाचने को तैयार हो गये, जैसे अनपेक्षित मेहमान कमरे में था ही नहीं। इसका कारण यह था कि एक अवर्णनीय ढंग से एक अफ़वाह, एक फुसफुसाहट, एक बात धीरे-धीरे पूरे कमरे में फैल गयी, कि मेहमान 'मालूम होता है ज़रा....'—' .. के असर से.....' यद्यपि पहले पहल यह बात कुछ अजीब-सी लगी, पर धीरे-धीरे यह उचित ही मालूम होने लगा। आखिर सब-कुछ साफ़ हो गया। और तब उन्होंने असाधारण तौर पर अपने को आज़ाद और हल्का अनुभव किया। यही वह समय था, जब भोजन के पहले का आखिरी चार व्यक्तियों वाला नाच शुरू होने को था, जिसके लिए मेडिकल विद्यार्थी जल्दी में लौट आया था।

ईवान फिर दुल्हिन को सम्बोधित करने वाला था और इस बार उसे उम्मीद थी कि वह उस की शरम से अधिक आनन्द उठायेगा कि तभी वह लम्बा अफ़सर आया और एक चमक के साथ दुलहिन के सामने एक घुटना टेक और दोनों हाथ हवा में फैला कर बैठ गया। वह तुरन्त सोफे से कूद पड़ी और उसके साथ नाच में शामिल होने के लिए फड़फड़ाती हुई चली गयी। अफ़सर ने कोई बहाना न किया और न दुलहिन ने ही जाते समय जनरल की ओर एक नज़र देखने का कष्ट किया। ईवान को लगा कि जैसे वह छुटकारा पा कर खुश हुई हो।

'आखिर,' ईवान ने सोचा, 'उसे वैसा करने का हर अधिकार था फिर इनसे कोई अच्छे व्यवहार की उम्मीद भी कैसे करे--हुँ !' और सेल्डोनीमोव की ओर मुड़ कर उसने कहा, "सुनते हो, दोस्त पारफायरी, तकल्लुफ में पड़े यहाँ खड़े न रहो, शायद तुम्हें किसी और चीज़ की ओर ध्यान देना होगा, या शायद कुछ.....कृपा कर मेरी चिन्ता न करो, किसी तरह की बाधा अनुभव न करो।"

'यह क्यों मेरे ऊपर चौकीदार की तरह खड़ा है !' उसने अपने से कहा। उस के लिए लम्बी गर्दन वाले सेल्डोनीमोव का अपने पास खड़ा होना और उस की घूरती आँखों को अपने ऊपर केन्द्रित पाना असह्य हो उठा। सेल्डोनीमोव उसकी ओर निरन्तर घूर रहा हो, यह बात न थी, ऐसी बात बिल्कुल न थी, लेकिन इस बात को अस्वीकार करने की स्थिति से ईवान बहुत दूर था। फिर वह सेल्डोनीमोव को छोड़ नाचने वालों की ओर मुड़ा......

५

नाच शुरू हुआ।

"क्या योर एक्सलेन्सी मुझे इजाज़त देंगे," सम्मान के साथ हिज़ एक्सलेन्सी का गिलास भरने के लिए बोतल उठाते हुए पेत्रोविच ने पूछा।

"मैं...मैं सचमुच नहीं जानता लेकिन यदि......"

लेकिन पेत्रोविच ने भक्ति की एक उज्ज्वल मुस्कान के साथ पहले ही शैम्पेन ढाल दी थी। गिलास भरने के बाद वह छिपा कर और चुरा कर और कई तरह से मुँह बना कर अपना गिलास भरने लगा, यह अन्तर रखते हुए कि उस का गिलास हिज़ एक्सलेन्सी के गिलास से एक अंगुली की चौड़ाई भर कम रहे। ऐसा करना ही उसे अधिक सम्मानपूर्ण लगा। अपने ठीक ऊपर के अफसर के पास बैठना उसे उस मज़दूरिन की तरह लगा,

जो काम पर मुस्तैदी से जमी हो। वह क्या बात करे ? वह हिज़ एक्सलेन्सी का मनोरञ्जन करने को बाध्य था, यह ड्यूटी उसी की थी—क्या जनरल के साथ बैठने का सम्मान उसे नहीं मिला था ? शैम्पेन ने एक साधन का काम दिया। हिज़ एक्सलेन्सी को उस का शैम्पेन ढालना बहुत ही अच्छा लगा, शैम्पेन की खातिर नहीं और न इसलिए कि वह गर्म और औसत दर्जे की चीज़ थी, बल्कि इसलिए कि वह नैतिकता के अनुकूल थी !

'बुड्ढा खुद पीना चाहता है,' ईवान ने सोचा, 'और मेरे बिना साहस नहीं करता। मैं इसे क्यों रोकूँ ? बोतल हमारे बीच अछूती रह जाय,यह तो मूर्खता ही होगी।'

उस ने अपनी शराब की चुस्की ली, 'जो भी हो, यह बैठे-बैठे कुछ न करने से तो बेहतर है।' उस ने सोचा

"मैं यहाँ..." रुक-रुक कर और ज़ोर दे कर वह बोलने लगा, "मैं यहाँ, जैसा कि हुआ, संयोग से हूँ और निस्संदेह यह सम्भव है कि कुछ लोग इसे अनुचित समझेंगे—याने कि मेरे लिए ऐसी संगत में होना।"

पेत्रोविच चुप था और एक कायरतापूर्ण उत्सुकता के साथ सुन रहा था।

"लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम समझते हो कि मैं यहाँ क्यों हूँ। ऐसा नहीं कि मैं सिर्फ़ शराब पीने के लिए यहाँ आया हूँ ! ही, ही ही !"

पेत्रोविच ने हिज़ एक्सलेन्सी की हँसी की प्रतिध्वनि करनी चाही, लेकिन वह चूक गया और फिर उस के जवाब में सान्त्वना का एक शब्द

भी कहे बिना चुप बना रहा।

"मैं यहाँ आया हूँ, सच पूछो तो, यह उद्देश्य...नैतिक रूप से—याने जानने के लिए...कि दिखाने के लिए..." ईवान ने पेत्रोविच की समझ से खीझ कर जारी रखा, लेकिन सहसा वह भी चुप हो गया। उसने देखा कि बेचारे पेत्रोविच ने एक अपराधी की तरह अपनी आँखें झुका लीं। ज़रा-सी घबराहट में जनरल ने अपने गिलास से दूसरी चुस्की ली और पेत्रोविच ने जैसे कि उसकी सम्पूर्ण मुक्ति ऐसा ही करने में हो, बोतल उठायी और गिलास को फिर भर दिया।

'तुम्हारे पास निश्चय ही कुछ ज्यादा कहने को नहीं है,' ईवान ने बेचारे पेत्रोविच की ओर कठोरता से देखते हुए सोचा। पेत्रोविच ने अपने ऊपर जनरल की कठोर दृष्टि का अनुभव करके चुप ही रहने और आँखे न उठाने में मसलहत समझी। इस तरह वे आमने-सामने करीब दो मिनट चुपचाप बैठे रहे—पेत्रोविच के लिए दो बड़े ही कष्टदायक मिनट!

एक-दो शब्द पेत्रोविच के बारे में कहना ज़रूरी है। ऐसा शान्त, जैसा कि एक मुर्गी, वह बिल्कुल पुराने फैशन का टप्पा था। इस तरह पला था कि सिर से पैर तक खुशामदी हो गया था, लेकिन साथ ही वह एक अच्छा और शरीफ आदमी भी था। वह पीटर्सबर्ग के रूसियों में से एक था, कहने का मतलब यह कि वह और उसका बाप और उसका दादा सभी पीटर्सबर्ग में पैदा हुए थे और पले थे और वहीं उन्होंने नौकरी की थी और कभी एक बार भी उन्होंने वह शहर न छोड़ा था। ऐसे लोग बड़े विचित्र टाइप के रूसी होते हैं। उन्हें इसके बारे में

मुश्किल ही से कोई जानकारी होती है। और उन्हें अपनी अज्ञानता की तनिक भी चिन्ता नहीं होती। उनकी सारी दिलचस्पी पिटर्सबर्ग और मुख्यतः जहाँ वह नौकरी करते हैं, उन्हीं दफ्तरों तक सीमित रहती है, उनकी सारी चिन्ताएं ताश से खेले जाने वाले जुए में 'कापेक' की हार-जीत, दुकानों और माहवारी तनखाहों में ही केन्द्रित रहती है। वे एक भी रूसी रीति-रिवाज नहीं जानते, और न 'चिप्स' के सिवा कोई रूसी गीत। और चिप्स भी वे इसलिए जानते हैं कि उसे सड़कों पर गाये जाते सुन लेते हैं। दो पक्के और लाज़िमी चिन्ह हैं, जिनसे एक सच्चे रूसी के मुकाबिले में एक पीटर्सबर्गी रूसी पहचाना जा सकता है। पहला यह है कि कोई भी पीटर्सबर्गी रूसी कभी 'द पीटर्सबर्ग जनरल' नहीं, बल्कि हमेशा 'एकेडेमिकल जनरल' कहेगा, दूसरा और उतना ही अहम चिन्ह यह है कि वह जलपान या सुबह के भोजन के लिए 'फ्रुरतुक जावत्रक' कहते हुए 'फ्रु' पर विशेष जोर देगा। इन जड़ जमाये हुए तथा विशिष्ट चिन्हों से आप पीटर्सबर्गी रूसियों को कहीं भी पहचान सकते हैं। ये उस नम्र टाइप के लोग हैं, जो निश्चित रूप से पिछले पैंतीस साल में बना है। पेत्रोविच के ज्ञान की परिधि कम सही, पर वह बेवकूफ न था। यदि जनरल ने उसकी समझ के अनुकूल किसी चीज के बारे में पूछा होता, तो उसने तुर्की-बतुर्की जवाब दिया होता और बात चीत का सिलसिला भी कायम रहता, लेकिन इस तरह के सवालों का जवाब देना एक मातहत के लिए धृष्टता होती, हालांकि पेत्रोविच कुछ अधिक निश्चित रूप से यह जानने को मरा जा रहा था कि आखिर हिज़ एक्सलेन्सी का मन्तव्य क्या है।

इस बीच ईवान के दिमाग की उलझन प्रबल से प्रबलतर होती गयी। विचार-शून्यता तथा बेसुधी में वह और अधिक बार गिलास से चुस्की लेता गया। पेत्रोविच ने तुरन्त जैसे एक ईर्ष्या के भाव से फिर उसका गिलास भर दिया। दोनों चुप थे। आखिर ईवान फिर नाच देखने लगा। वास्तव में पहले ही उसने उसका ध्यान आर्षित कर लिया था। वह नाच देखता रहा कि धीरे-धीरे एक बात पर उसे अचंभा होने लगा।

नाच बहुत ही चटकीले थे। वे लोग अपने हृदय की सादगी से अपने मनबहलाव के लिए खूब खुलकर नाच रहे थे। अच्छे नाचने वाले बहुत कम थे, भद्दा नाचने वाले बहुत ज्यादा, जो इतने जोर से पैर पटक रहे थे कि उन्हें अच्छे नाचने वाले समझने की गलती हो सकती थी। उनमें जो सबसे अधिक उभर रहा था, वह अफसर था। वह विशेषकर उन नाचों को पसन्द करता था, जिनमें वह अकेला ही नाचने वाला हो और उस समय वह एक 'सोलो' नाच रहा था। उस नाच में वह इधर-उधर असाधारण फुर्ती से झुक जाता था, कभी-कभी मील के पत्थर की तरह बेहिस और बेजान सीधा दिखायी दे कर, वह सहसा एक ओर इतना झुक जाता था कि लगता कि निश्चय ही गिर पड़ेगा, लेकिन एक दूसरा पग ले कर, वह अचानक फर्श के साथ दूसरी ओर उसी नाजुक कोण से झुक पड़ता। पूरे वक्त उसकी मुद्रा में गम्भीर भाव बने रहते और वह पूरे इस विश्वास के साथ नाच रहा था कि हर आदमी उसकी प्रशंसा कर रहा है।

दूसरे दौर में एक दूसरा नाचने वाला अपने साथी के पास सोने चला गया, क्योंकि नाच शुरू होने के पहले वह अपने लिए उचित से

अधिक पी गया था, उसकी संगिनी को अकेले नाचना पड़ रहा था। एक युवक रजिस्ट्रार, जो कि नीली गुलूबन्द वाली महिला के साथ नाच रहा था, उस रात के पाँचों नाचों में, हमेशा एक ही मज़ाक करता रहा—वह अपनी संगिनी के ज़रा पीछे रहता, उसके गुलूबन्द का एक सिरा पकड़ लेता, और आमने-सामने आगे बढ़ता हुआ गुलूबन्द पर दर्जनों चुम्बन दे देता। उसकी संगिनी उसके सामने ऐसे तैरती रहती, जैसे वह अपने संगी की उस हरकत से नितान्त अनभिज्ञ हो। मेडिकल-विद्यार्थी ने, जैसा कि उसने वादा किया था, एक 'सोलो' अपने सिर पर दिखाया, जो कि एक प्रचंड प्रसन्नता, प्रशंसा की गड़-गड़ाहट और खुशी की चीखों का कारण बना—एक शब्द में कहें, तो वहाँ अनुशासन की बहुत कमी थी। ईवान, जिस पर कि शराब ने बुरी तरह अपना असर करना शुरू कर दिया था, पहले मुस्कराया, फिर कुछ चकित हुआ, धीरे-धीरे एक शंका की कड़वी अनुभूति उसके मस्तिष्क में रेंगने लगी। निस्सन्देह वह बेरोक और स्वतन्त्र व्यवहार का प्रेमी था। वह यह चाहता भी था। उसने उस समय, जब वे सब उसके सामनेसे पीछे हट गये थे। दिल से इसकी दावत भी दी थी, लेकिन अब वही व्यवहार की आज़ादी अपनी सीमा लांघ गयी थी। उदाहरण के लिए, वह महिला, जो पुराने-धुराने मखमल के कपड़े पहने थी, जिसे उसने दूसरे हाथ से ही नहीं, बल्कि चौथे हाथ से खरीदा था, पिनों से टाँक-टाँक कर नाच के छठे दौर में उन्हें इस तरह पहन कर आयी, जैसे पैण्ट पहने हो। यह महिला वही सेमेनावना थी, जिसके लिए मेडिकल विद्यार्थी के कथनानुसार आप कोई भी खतरा मोल ले सकते हैं। मेडिकल विद्यार्थी के बारे में कुछ कहने

की जरूरत नहीं, वह तो बराबर एक 'फोकिन' बना रहा। आखिर यह कैसे हुआ कि एक क्षण पहले जो पीछे हटे थे, वे ही अब इस तरह मुक्त हो गये थे? कुछ भी कारण न हो, लेकिन यह परिवर्तन उसे अजीब लगा। उस का माथा ठनका......यह तथ्य वे एक दम भूल गये थे कि ईवान—प्रिवी काउंसिलर जनरल ईवान—संसार में है।

लेकिन इन विचारों को दिमाग़ से हटाकर वह उन सब से पहले हसा और थोड़ी वाहवाही देने का खतरा भी उसने उठाया। पेत्रोविच भी उस का साथ देने को खिलखिलाया, यद्यिप इसमें प्रगटतः उस की अपनी खुशी भी शामिल थी और उसे क्षण भर को भी यह कभी सन्देह न हुआ कि हिज़ एक्सलेन्सी ने अपने दिल में एक नया कीटाणु पालना शुरू कर दिया है।

जब मेडिकल विद्यार्थी नाच के अन्त में उस के पास से गुज़रा, तो ईवान के मन ने उससे कहा कि वह उन का प्रतिष्ठित अतिथि है, उस का कर्त्तव्य है कि उस नाच की प्रशंसा करे और उसने कहा, "तुम बहुत अच्छा नाचते हो, युवक!" और जैसे अपने पद की ऊँचाई से वह हँसा।

विद्यार्थी तेज़ी से घूमा, उस ने मुँह बनाया और अपना मुँह भद्दे ढंग से हिज़ एक्सलेन्सी के मुँह के बिल्कुल पास लाकर, अपनी सब से ऊँची आवाज़ में मुर्गे की तरह बाँग दे दी।

यह अति थी। ईवान मेज़ से उठ खड़ा हुआ। उस के उठने के बावजूद वहाँ ठहाके जारी रहे, क्योंकि मुर्गे की बाँग की नकल बहुत स्वाभाविक थी और उसका मुँह बनाना अत्यन्त अप्रत्याशित! ईवान

शंसय में अभी खड़ा ही था, जब अपनी माँ के आगे-आगे सेल्डोनीमोव प्रगट हुआ और दोनों ने सिर झुका कर भोजन के लिए चलने का निवेदन किया।

"हल्का जलपान, योर एक्सलेन्सी," माँ ने सिर झुका कर कहा, "हमारा सम्मान बढ़ायें—हमारी ग़रीबी का तिरस्कार न करें !"

"मैं—मैं सचमुच, मैं नहीं जानता," ईवान बोला, "यह कारण न था...मैं...मैं जाना चाहता था।....."

उसने अपनी रोंयेदार खाल की टोपी हाथ में पकड़ रखी थी, इससे अधिक यह कि उस समय उसने खुद को ही कसम दिला दी कि वह तुरन्त चला जायगा, चाहे जो हो, कुछ भी उसे रुकने को प्रेरित नहीं कर सकता....लेकिन फिर भी वह रुक गया। एक मिनट बाद वह क़तार के आगे-आगे खाने की मेज की ओर चला, सेल्डोनीमोव और उसकी माँ रास्ता बनाने के लिए उसके आगे-आगे थे। उसे एक सम्मान की जगह बैठाया गया और फिर एक शैम्पन की ताज़ी बोतल उसके सामने प्रकट हो गई। रीति के विरुद्ध वहाँ मछली के टुकड़े और वोडका भी था। उसने अपना हाथ फैलाया और स्वयं ही एक बड़ा गिलास वोडका से भरा और पी गया। उसने वोडका पहले कभी भी न पिया था। उसे लगा कि जैसे वह किसी पहाड़ से लुढ़का जा रहा हो......उड़ा जा रहा हो...उड़ा जा रहा हो .....उसने सोचा कि उसे अपने को रोकना चाहिए—कुछ पकड़ ले—लेकिन क्या ?... ...कैसे ?........ उसकी सारी चेतना और क्रियाशीलता जैसे उसी के साथ उड़ी जा रही थी......

६

खाने की मेज़ पर ईवान की अवस्था पहले से कहीं अधिक अव्यवस्थित हो उठी। एक तरह से यह भाग्य का उपहास ही था। भगवान ही जानता है कि एक घंटे के अन्दर-अन्दर उसे क्या हो गया। जब उसने घर के अन्दर प्रवेश किया था, उसने सारी मानव-जाति को और उन सब को, जो उस के मातहत थे, गले लगाने के लिए हाथ फैला दिये थे। और अब, मुश्किल से एक घंटे बाद, दुख और पीड़ा के साथ उसने यह अनुभव किया, कि सेल्डोनीमोव को वह सहन नहीं कर सकता। वह उस को, उस की बीवी को, उसकी शादी को मन-ही-मन कोस रहा था। सिर्फ यही नहीं, बल्कि उसने सेल्डोनीमोव के चेहरे में, उसकी आँखों में देखा कि वह भी अपने अफ़सर को बरदाश्त नहीं कर पा रहा। उस की आँखें जैसे मूक भाषा में कह रही थीं: 'तुम

बूढ़े, निकम्मे, नीच आदमी ! तुम जहन्नुम में जाओ ! मेरे सिर पर सवार होने को तुम क्यों चले आये ?' उसने बहुत पहले सेल्डोनीमोव की आँखों में यह-सब पढ़ लिया था ।

निस्संदेह, मेज़ पर बैठा हुआ ईवान अपने अन्तर के इस परिवर्तन को सच्चाई से कहने, या स्वयं अपने प्रति स्वीकार करने के पहले अपना हाथ कटा लेता । वह क्षण अभी न आया था । वह अभी तक एक प्रकार के नैतिक संतुलन में था ! लेकिन उसका दिल—उसके दिल पर आरे चल रहे थे । वह हवा में निकल भागने के लिए, सुख की एक लंबी साँस लेने के लिए, छुटकारा पाने के लिए मन-ही-मन छटपटा रहा था । पर वह, जैसा कि वह अपने आपको विश्वास दिला रहा था, जरूरत से ज्यादा भला आदमी था ।

वह जानता था, हाँ, वह भली भाँति जानता था, कि उसे बहुत पहले ही चला जाना चाहिए था, चला जाना ही नहीं, बल्कि सचमुच निकल भागना और अपने को बचा लेना ! और सहसा उसे लगा था कि हर चीज़ उस तरह से नहीं हो रही है—बिल्कुल उसी तरह से—जैसा कि उसने तख्तेदार पटरी पर चलते समय योजना बनायी थी ।

'मैं यहाँ क्यों आया ? क्या मैं यहाँ खाने और पीने के लिए आया ?' मछली का टुकड़ा खाते हुए उसने अपने से पूछा । वह एक अन्तर्विरोध की स्थिति पर पहुँच गया था । ऐसे भी क्षण गुजरे, जब उसने अपने अन्तर की तह में अपने ही काम को व्यंग्य से देखा । वह आखिर क्यों आया था, अब यही उसकी समझ में न आ रहा था ।

'अब मैं कैसे जाऊँ ?' उसने सोचा, 'मैं जो करना चाहता था, उसे

पूरा करने के पहले ही चले जाना असम्भव है। लोग क्या कहेंगे ? वे कहेंगे कि मैं अनुचित जगहों पर आता-जाता हूँ। निश्चय ही मेरा यों चले जाना वैसा ही लगेगा। यदि मैं ने वह सब न किया, जो करने मैं आया था, तो कल लोग क्या कहेंगे (क्योंकि निस्सन्देह हर जगह इसकी चर्चा होगी !) स्टेपन और सेमेन क्या कहेंगे ? चांसरी* में क्या कहा जायगा,'शेम्बेल के यहाँ, शुबिन के यहाँ ? नहीं, मुझे इस तरह जाना चाहिए कि सब समझ जायँ कि मैं क्यों आया ? मुझे अपना नैतिक उद्देश्य जरूर प्रकट कर देना चाहिए !'

लेकिन दुर्भाग्यवश वह मनोवैज्ञानिक क्षण आप ही तो आने वाला न था। 'ये तो मेरा सम्मान भी नहीं करते,' उसने सोचना जारी रखा,'वे किस बात पर हँस रहे हैं ? ये इतने आज़ाद हैं, जैसे कि इन्हें एहसास ही नहीं कि......हाँ, बहुत पहले ही मुझे शंका हुई थी कि नौजवानों की पीढ़ी बेहिस हुई जा रही है......मुझे जरूर रुकना चाहिए, चाहे इसके लिए जो-भी क़ीमत चुकानी पड़े। अभी वे नाच कर आये हैं, इनकी भूख तेज है, खाना खालें, तो मैं आज की समस्याओं पर बातें करूँगा—सुधारों पर—रूस की महानता पर......अब भी मैं इन्हें अपनी राह पर ले आ सकता हूँ। हाँ, कदाचित अभी कुछ भी नहीं बिगड़ा। शायद यथार्थ में हमेशा ऐसा ही होता है। अपनी बात के लिए उनमें दिलचस्पी पैदा करने को मुझे किस तरह शुरू करना चाहिए ? बातचीत को मुझे कौन-सा मोड़ देना होगा ? कुछ सूझता नहीं...बिल्कुल नहीं सूझता..और ये

चांसरी=बड़ा न्यायालय

क्या चाहते हैं, इन्हें किस चीज़ की ज़रूरत है ? मैं देखता हूँ कि ये आपस में हँस रहे हैं। निश्चय ही मुझ पर नहीं ! हे भगवान !...मैं क्या चाहता हूँ ? मैं यहाँ क्यों हूँ ? मैं क्यों नहीं चला जाता ? मुझे कौन-सा काम पूरा करने की आशा है ?' ऐसे उसके विचार थे और एक तरह की शर्मिन्दगी, एक तरह की गहरी, बर्दाश्त न होने वाली शर्मिन्दगी उसके दिल को कचोटे डाल रही थी।

खाने की मेज़ पर बैठे उसे कुछ ही मिनट बीते थे कि एक भयङ्कर विचार ने उसके पूरे व्यक्तित्व को जकड़ लिया। सहसा उसे लगा कि वह भयानक रूप से नशे में है, याने कि वैसे सरूर में नहीं, जैसा कि पहले था, बल्कि पूरी तरह मदमत्त है। इसका कारण वोडका था, जिसे उसने शैम्पेन के ठीक बाद ही पिया था और जिसने तुरन्त असर किया था। निस्सन्देह उसका साहस बहुत बढ़ गया, लेकिन उसे लगा कि अपने शरीर पर से उसका अधिकार उठता जा रहा है। उसकी चेतना अभी बनी थी और उसने मन-ही-मन चीख कर कहा : 'यों चले जाना ग़लत है, बिल्कुल ग़लत है, एकदम बेहूदा है !'

लेकिन उसके मदमत्त घूमने वाले विचार किसी एक बिन्दु पर स्थिर न रह पाते। सहसा उसके मन में दो विरोधी पक्ष उदय हुए। एक में डींग थी—सभी बाधाओं को जीतने और नष्ट करने की—अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का एक मूर्खतापूर्ण निश्चय; और दूसरे में थी आत्मा की एक व्यथा-भरी ग्लानि, उदासी और कायरता : 'लोग क्या कहेंगे ? इस सब का अंत कैसे होगा ? कल क्या होगा—कल—कल ?'

शुरू-शुरू में उसका माथा ज़रा ठनका था कि शायद मेहमानों में उसके कुछ दुश्मन हैं। 'जब मैं आया, तो नशे में था, जरूर ऐसा ख़्याल आने का यही कारण होगा,' उस समय उसने कष्टकर संदेह के साथ सोचा था। लेकिन अकाट्य संकेतों से अब, जब उसे विश्वास हो गया कि सच ही मेज़ के सामने बैठने वालों में उसके कई दुश्मन हैं और जब इस सच्चाई में सन्देह की कोई गुंजाइश न रही, तो उसका त्रास अपने चरम बिन्दु पर पहुँच गया।

'और क्या? क्या कारण हो सकता है इस बेहूदगी का!' खाने पर बैठे हुए लोगों की उच्छृङ्खलता देख कर साश्चर्य उसने सोचा।

सब मेहमान—संख्या में करीब तीस के—मेज़ के सामने बैठे थे। उनमें से कुछ तो पहले ही चित्त हो गये थे। दूसरे बड़े ही लापरवाह, द्वेषपूर्ण, अनुशासनहीन व्यवहार कर रहे थे, चिल्ला रहे थे; ऊँचे, उद्दंड स्वरों में बातें कर रहे थे; गलत अवसर पर 'टोस्ट' का प्रस्ताव कर रहे थे और महिलाओं को रोटी के छोटे टुकड़े फेंक रहे थे। गन्दा फ्राक कोट पहने एक व्यक्ति भोजन के शुरू में ही अपनी कुर्सी से लुढ़क गया और भोजन के अंत तक फर्श पर ही पड़ा रहा। एक दूसरा 'टोस्ट' का प्रस्ताव करने के लिए मेज़ पर चढ़ जाना चाहता था, और यह वह अफ़सर ही था, जिसने कि उसके कोट के दामन को खींच कर उस असमय की उत्तेजना को रोक रखा था। भोजन अति साधारण था— हद दर्जे के आम लोगों का—यद्यपि भोजन बनाने के लिए किसी बड़े होटल का बड़ा रसोइया और किसी जनरल का एक गुलाम मजदूरी पर लाये गये थे—एक तरह का गोश्त, और जीभ और आलू,

कटलेट और हरे मटर थे, एक बत्तख भी थी और आखिरी चीज़ मुरब्बा थी। बीयर, वोडका और शेरी पेय थे, शैम्पेन की अकेली बोतल जनरल के सामने थी, जिसे वह अपने ही हाथ से ढाल रहा था, क्योंकि भोजन के समय पेत्रोविच में अपनी ओर से कुछ शुरू करने की हिम्मत न थी। दूसरे मेहमानों को कड़वी शराबें या जो भी उनके हाथ लग जाता, पीना पड़ रहा था। कई छोटी-छोटी मेज़ों और एक कार्ड-टेबुल को मिला कर वह खाने की मेज़ बनायी गयी थी और वे मेज़ें छोटे-छोटे मेज़पोशों से ढँकी थीं, जिनमें से एक यारोस्लाव का बना हुआ रंगीन था। मेहमान जोड़ों में बैठे थे। सेल्डोनीमोव की माँ नहीं बैठी थी, बल्कि घूम-घूम कर देख रही थी कि सब क़ायदे से है, कि हर आदमी को परसा जा रहा है कि नहीं। उस के बदले में एक खिंचे-सुते चेहरे वाली, ईर्ष्यालु दिखायी देने वाली औरत, जो पहले कहीं दिखायी न दी थी, ऊँची टोपी और एक तरह का रेशमी लाल गाउन पहने आयी। वह दुल्हिन की माँ साबित हुई, जो सारे वक्त किसी पिछवाड़े के कमरे में बैठी थी और बड़ी मुश्किलों से खाने पर आने को राज़ी हुई थी। उस समय तक वह सेल्डोनीमोव की माँ से अपनी विषम। शत्रुता के कारण न आयी थी, लेकिन इस के बारे में हम बाद में कहेंगे।

यह दुलहिन की माँ जनरल की ओर द्वश और उपहास से देख रही थी और यह भी साफ़ था कि वह उस से परिचित न होना चाहती थी। ईवान को यह औरत बहुत ही शक्की मिज़ाज मालूम हुई। और भी वहाँ थे, जो उसे शक्की मालूम होते थे और जिनकी उपस्थिति

अनचाहे संकट और परेशानी की ओर संकेत करती थी। चाहे जो हो, उसे ऐसा ही लगता था और खाने के अन्त तक तो उस का सन्देह निश्चय में बदल गया। उदाहरण के लिए, वहाँ एक ईर्ष्यालु, छोटी दाढ़ी वाला किसी तरह का एक चित्रकार था, जिसने कई बार ईवान की ओर देखा और मुड़ कर अपने पास वाले के कान में कुछ फुसफुसा दिया। एक दूसरा आदमी, एक विद्यार्थी, जो इतना मान लेना चाहिए कि काफी नशे में था, सन्देहात्मक संकेत कर रहा था। मेडिकल विद्यार्थी से भी ज़रूर कुछ संकट की आशा थी, यहाँ तक कि अफ़सर पर भी भरोसा न किया जा सकता था और...और 'पत्रकार' की आँखों में तो एक गहरी नफ़रत प्रत्यक्ष रूप से लपलपा रही थी—वह अपनी कुर्सी पर पाँव रखे उकड़ूँ बैठा था और घमंडी और हठी की तरह उसे उपेक्षा-भाव से देख रहा था और ऐसी आज़ादी के साथ नाक सुड़क रहा था, जैसे ईवान का वहाँ कोई अस्तित्व ही न हो। यद्यपि दूसरे मेहमान उस 'पत्रकार' की ओर कोई ध्यान न दे रहे थे, जिसने 'फायर ब्राण्ड' के लिए कविता की केवल चार पंक्तियाँ लिखी थीं और एक उदारदली हो गया था, यद्यपि यह भी साफ़ था कि वे उसे बिल्कुल न चाहते थे, तो भी जब एक रोटी की छोटी गोली, जो प्रकट रूप से उस का निशाना बना कर फेंकी गयी थी, ईवान के पास आ गिरी, तो वह इस शर्त पर अपनी नाक काट लेने को तैयार हो गया, कि वह गोली फेंकने वाला अपराधी 'फायर ब्राण्ड' में काम करने वाला वही शरीफ़ज़ादा था!

इस सब का बड़ा ही बुरा प्रभाव उस पर पड़ा। लेकिन इन सब बातों से भी ज्यादा उदास करने वाले एक और अप्रिय तथ्य का उसे

एहसास हुआ। उसे निश्चित रूप से इस बात का विश्वास हो गया कि उसके शब्दों में स्पष्टता कम होने लगी है। उसका उच्चारण भी मुश्किल हो रहा था। वह बहुत कहना चाहता था, लेकिन उसकी जीभ हिलती ही न थी। उसे लगा कि रह-रह कर वह अपने को भी भूलने लगा है, और इस सब के ऊपर यह कि वह अकारण ही अचानक नाक सुकड़ता है और फिर हँस पड़ता है, गोकि हँसने की कोई बात नहीं होती।

एक गिलास शैम्पेन पीने के बाद, जिसे उसने खुद ही ढाला था, जिसे वह पीना न चाहता था, लेकिन अचानक अनजाने में ही जिसे खाली कर गया था, उसका यह स्वभाव जाता रहा। शैम्पेन के इस गिलास के बाद उसने करीब-करीब रो पड़ना चाहा। उसे लगा कि वह सीमाहीन भावुकता की अतल गहराइयों में डूबा जा रहा है। वह फिर प्यार करने लगा—सब को, यहाँ तक कि सेल्डोनीमोव को भी, 'पत्रकार' को भी, उसने उनको गले लगा लेना, सब-कुछ भूल जाना और उनसे समझौता कर लेना चाहा। यही नहीं, बल्कि उसने उनसे खुल कर बोलना, सब-कुछ कह देना चाहा, याने कि वह कितना दयालु, कितना अच्छा आदमी है और कैसी महान योग्यतायें उसे प्राप्त हैं; अपने देश के लिए वह कितना उपयोगी होगा; वह कैसे महिलाओं का मन बहला सकता है, और सबके ऊपर यह कि वह कितना प्रगतिशील अफसर है; कितनी मानवीयता के साथ किसी के प्रति नम्र होने को प्रस्तुत है, निम्नतम व्यक्ति के प्रति भी! और अंत में बिल्कुल खुलकर उस उद्देश्य को भी कह देना चाहा, जिससे प्रेरित होकर, बिना निमंत्रण

के वह सेल्डोनीमोव की शादी में आया, उसकी शैम्पेन की दो बोतलें पीं और अपनी उपस्थिति से उसे सुखी बनाया।

'सत्य, पवित्र सत्य, सबके ऊपर खरापन ! अपने खरेपन से इन्हें मैं जीत लूँगा !' उसने सोचा,'ये मेरा विश्वास करेंगे, मेरे सामने सब साफ है। इस वक्त ये मुझे शत्रुता से देख रहे हैं, लेकिन जब मैं इनसे सब-कुछ कह दूँगा, ये रामे मुकाबिला करना छोड़ देंगे। मैं इन पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लूँगा। ये अपने गिलास भरेंगे और खुशी से चिल्लाकर मेरे स्वास्थ्य के लिए जाम चढ़ायेंगे। अफसर, मुझे विश्वास है, उत्साह के मारे अपना गिलास तोड़ देगा। ये 'हुर्रा' भी चिल्लायेंगे। शायद ये मुझे उछालना भी चाहेंगे, जैसा कि 'हस्सार'* करते हैं—वैसा करें, तो मैं इन्हें रोकूँगा नहीं। वह एक बहुत अच्छी बात होगी। मैं दुलहिन का माथा चूमूँगा। वह सुन्दर नन्हीं जान है। पेत्रोविच भी बड़ा भला आदमी है। समय पर सेल्डोनीमोव भी बेहतर हो जायगा। उसे, कहने का मतलब यह कि सांसारिक शिष्टता की आवश्यकता है......और हालाँकि नयी पीढ़ी के सभी युवकों में सच्चे शिष्टाचार की निश्चय ही कमी है, तो भी—तो भी यूरोप की दूसरी शक्तियों के बीच रूस का जो भविष्य है, मैं इन्हें बताऊँगा। मैं आज की समस्याओं पर भी बोलूँगा। ये सब मुझे प्यार करेंगे, और एक गौरव के साथ मैं इस घर से विदा लूँगा।'

ये विचार बहुत ही प्रियकर थे, लेकिन अप्रियकर बात यह थी कि

---

*एक खास रेजेमेंट के सैनिक

इन सभी सुनहरी आशाओं के बीच अचानक ईवान ने अपने अन्दर एक अनपेक्षित योग्यता खोज निकाली—थूकने की ! न जाने क्यों, उसे ऐसा मालूम होता था कि उसके मुँह से थूक, उसके बहुत न चाहने पर भी, उछला पड़ता है। सबसे पहले उस ने पेत्रोविच पर देखा, जिसके गाल पर उसने छिड़काव कर दिया था और जो सम्मान के कारण, शान्त बैठा था और पोंछने का भी साहस न कर रहा था। ईवान ने एक नैपकिन उठाया और उसका गाल पोंछ दिया। लेकिन वैसा करते समय उसे यह काम ऐसा बेहूदा, सहज ज्ञान से इतना परे लगा कि वह चुप हो गया और आश्चर्य करने लगा।

पेत्रोविच, यद्यपि उसने भी कुछ पी थी, एक नुचे हुए चूज़े की तरह बैठा था। ईवान ने अनुभव किया कि वह उसके साथ करीब पाव घंटे तक एक अत्यधिक दिलचस्प विषय पर बात करता रहा है और कि जब पेत्रोविच सुनता रहा, उसे लगा कि उसके विचार अव्यवस्थित हो गये हैं। ऐसा नहीं कि वह किसी बात से अचानक डर गया हो। सेल्डोनीमोव ने भी, जो एक कुर्सी पर उससे दूर बैठा था, अपनी लम्बी गरदन बढ़ा दी और एक ओर सिर किये हुए और अपनी आकृति पर अत्यन्त अरुचिकर भाव लिये हुए उसकी बात सुनता-सा लगा। वह सचमुच उस पर चौकीदारी करता-सा मालूम हो रहा था। मेहमानों पर निगाह भर कर देखते हुए ईवान ने देखा कि उनमें बहुत-से उसे सीधे देख रहे थे और हँस रहे थे। लेकिन, जो बात सबसे अधिक आश्चर्यजनक थी, वह यह कि इस सबसे वह अपने आप को ज़रा भी विचलित न अनुभव कर रहा था, बल्कि, इसके विरुद्ध, अपने गिलास से एक दूसरी चुस्की

लेकर वह ऐसी आवाज़ में बोलने लगा, जो कमरे के अन्तिम कोने तक जाती थी :

"मैंने अभी कहा है," बहुत ही ऊँची आवाज़ में उसने कहना शुरू किया, "मैंने अभी-अभी कहा है, महिलाओ और सज्जनो, पेत्रोविच से, कि रूस—विशेष कर रूस...संक्षिप्त में, आप समझते हैं न जो मैं—मैं कहना—चाहता हूँ...मेरे गम्भीरतम विश्वास के अनुसार रूस मा-नवीयता से गुज़र रहा है।" वह बेतरह थथलाया।

"मा—नवीयता," मेज़ के दूसरी ओर से प्रतिध्वनि हुई।

"हु—हू!"

"तू—तू!"

ईवान रुक गया। सेल्डोनीमोव अपनी कुर्सी पर से कूद पड़ा और चारों ओर देखने लगा कि कौन चीखा है। पेत्रोविच ने जैसे मेहमानों को चेतावनी देने के लिए छिपाकर अपना सिर हिलाया। ईवान ने इसे साफ देखा, लेकिन हठ करके उस पर कोई ध्यान न दिया।

"मान-वीयता!" उसने उसी तरह थथलाते हुए जोर देकर कहा, "बहुत समय नहीं हुआ...बस यही—बहुत समय नहीं हुआ...मैंने स्टे—ए-पन से कहा...हा...कि...कि नवीनी-करण, कहने का मतलब, चीजों का—"

"योर एक्सलेन्सी!" मेज़ के दूसरे सिरे से किसी ने बड़े ज़ोर से पुकारा।

"मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?" अपना व्याख्यान रोक कर और किसने पुकारा है, यह देखने की कोशिश करते हुए ईवान ने

लड़खड़ाते स्वर में पूछा ।

'कुछ भी नहीं, योर एक्सलेन्सी, मेरा ध्यान बट गया था, जारी रखिए ! ज—जा - जारी रखिए !' उसी नशीले स्वर में उसने जवाब दिया ।

"नवीनीकरण, मतलब कि, इन्हीं चीजों का..." ईवान ने फिर भाषण शुरू किया ।

"योर एक्सलेन्सी !" उसी आवाज ने पुकारा ।

"तुम क्या चाहते हो ?"

"आपके मेज़ाज कैसे हैं ?"

इस बार ईवान सहन न कर सका । उसने व्याख्यान देना बन्द कर दिया और शान्ति भंग करने वाले उस अपराधी की ओर मुड़ा । वह एक छोटा विद्यार्थी था, जो नशे में बुत था और जिसने उसके (ईवान के) मन में बड़ी-बड़ी शंकायें उत्पन्न कर दी थीं । बड़ी देर से वह चीख रहा था और एक गिलास और दो तश्तरियाँ तोड़ कर उसने इस प्रथा को बल दिया था कि शादी में यह सब करना उचित ही है । जिस क्षण ईवान उसकी ओर मुड़ा, अफ़सर उस शोर मचाने वाले को डाँटना शुरू ही करने वाला था ।

"इस बर्ताव से तुम्हारा क्या मतलब है ? तुम क्यों चीख रहे हो ! तुम्हें तो लात मार कर निकाल देना चाहिए !"

"आपके बारे में यह नहीं है, योर एक्सलेन्सी, आपके बारे में नहीं ! आगे बढ़िए !" अपनी कुर्सी के पीछे लुढ़कता हुआ वह विद्यार्थी चिल्लाया—"मैं सुन रहा हूँ और आपसे मैं अत्यधिक सन्तुष्ट हूँ...मैं कहता हूँ, अत्यधिक संतुष्ट हूँ । आपकी बात प्रशंसनीय है, मैं कहता हूँ, अत्यधिक

प्रशंसनीय है।"

"एक मदमत्त विद्यार्थी" सेल्डोनीमोव ने फुसफुसाहट में कहा।

"मैं देख रहा हूँ कि वह नशे में है, लेकिन..."

"मैं ने अभी एक मज़ेदार कहानी कही है, योर एक्सलेन्सी," अफसर ने कहना शुरू किया, "अपनी रेजीमेण्ट के एक जवान लेफ्टीनेण्ट के बारे में, जो अपने अफसर के साथ इसी तरीके से बात करता था। यह लड़का उसी की नकल कर रहा था। अपने अफ़सर के हर कहे शब्द पर वह जवान लेफ्टीनेण्ट दुहराता था 'प्रशंसनीय, प्रशंसनीय!' जवान लेफ्टीनेण्ट का यही आदत थी, जिसके कारण, दस साल हुए, वह नौकरी से अलग कर दिया गया।'

"क-कौ—न लेफ्टिनेन्ट था वह?"

"हमारी रेजीमेण्ट का, योर एक्सलेन्सी। प्रशंसा करने के पीछे वह पागल था। पहले वह नर्मी से डाँटा गया, लेकिन बाद में कैद कर लिया गया। अफसर उसके साथ पिता की तरह व्यवहार करता था, लेकिन उसने सिर्फ कहा, 'प्रशंसनीय, प्रशंसनीय।' और अजीब बात है, वह एक मर्द आदमी था—छै फ़ीट के ऊपर। शुरू में उन्होंने उस पर मुकदमा चलाना चाहा, लेकिन (साथ ही) कहा कि वह पागल है।'

"अच्छा तो यह विद्यार्थी बहुत पी गया है! ख़ैर, विद्यार्थियों के तमाशे के बारे में किसी को अधिक सख्त होने की जरूरत नहीं। जहाँ तक मेरा ख्याल है, मैं माफ़ करने को तैयर हूँ......"

"उसकी डाक्टरी जाँच हुई, योर एक्सलेन्सी," अफ़सर कहानी खत्म किये बिना चुप न करना चाहता था।

"तो उन्होंने उसे चीरा-फाड़ा ?"

"हे भगवान ! वह बिल्कुल जिन्दा था, सरकार !"

मेहमानों ने, जो उस समय तक बड़ी शान्ति से सब-कुछ सुन रहे थे, इस बात का स्वागत एक छत-फाड़ ठहाके से किया।

ईवान क्रोध से पागल हो उठा ।

"सज्ज-सज्जनो !" वह चीखा, "मैं बिल्कुल यह समझ सकने की स्थिति में हूँ कि...कि एक जिन्दा आदमी चीरा-फाड़ा नहीं जाता । मैं ने सोचा कि अपने पागलपन के कारण वह अब जिन्दा न था--कहने का मतलब, मर गया था।... याने मैं कहना चाहता था...कि तुम मुझे प्यार नहीं करते...जब कि मैं तुम सब को प्यार करता हूँ ।...हाँ, मैं पारफायरी तक को प्यार करता हूँ... ऐसा कहकर मैं स्वयं अपने को नीचे गिरा रहा हूँ ..."

उसी क्षण ईवान के ओंठों से थूक का एक बड़ा लोंदा मेजपोश के बिल्कुल दिखाई देने वाली जगह पर गिर पड़ा। सेल्डोनीमोव ने अपने नैपकिनसे उसे जल्दी ही पोंछ दिया। इस अन्तिम दुर्भाग्य ने पूरी तरह ईवान को परास्त कर दिया।

"सज्जनो, यह अति है," निराशा से वह चीखा।

"पारफायरी। मैं देखता हूँ कि तुम....सब....हाँ ! मैं कहता हूँ कि मुझे उम्मीद है--हाँ, मैं तुम सबसे यह कहना चाहता हूँ—किस तरह मैंने अपने को नीचे गिराया है ?"

ईवान एकदम चीख रहा था। अपने कंठ की पूरी आवाज़ में चिल्ला रहा था।

"योर एक्सलेन्सी, आप ऐसी बात कैसे सोचते हैं, सरकार ?"

"पारफायरी, मैं तुमसे अपील करता हूँ......मुझे बताओ, यदि मैं आया--हाँ, हाँ—शादी में......तो मेरा एक उद्देश्य था। मैं नैतिक रूप से उठाना चाहता था.....मैं चाहता था कि तुम अनुभव करो...मैं तुम सब से अपील करता हूँ। मैं ने तुम लोगों की आँखों में......कहने का मतलब कि अपने-आपको बहुत नीचे गिराया दिया है कि नहीं ?"

गहरा सन्नाटा छाया रहा। और वह भी एक ऐसे सवाल के उत्तर में जो, सामूहिक रूप से सबसे पूछा गया था ! 'हाँ, ऐसे क्षण में चिल्लाना उनके लिए कितना महंगा पड़ सकता है ?' हिज़ एक्सलेन्सी के दिमाग़ में एकदम विचार कौंधा। लेकिन मेहमान सिर्फ एक-दूसरे का मुँह तकते रहे। पेत्रोविच ज़िन्दा से अधिक मुर्दे की तरह बैठा हुआ था, जबकि सेल्डोनीमोव भय से एकदम गूँगा बना, उस भयंकर सवाल को मन-ही-मन दोहरा रहा था, जो कि कितनी देर से उसके दिमाग़ में अड्डा जमाये था—'इस सबके लिए कल मुझे क्या भुगतना पड़ेगा ?'

अचानक 'फायर ब्राण्ड' का लेखक, जो यद्यपि नशे में पहले ही बुत होकर पूरे समय एक उदास चुप्पी साधे बैठा रहा था, निडरता के साथ उठा और ईवान को संबोधित करके बोलने और आँखों में एक दमक लिये पूरी पार्टी की ओर से जवाब देने लगा :

"हाँ," वह ऊँची आवाज में चीखा, "हाँ, सरकार, आपने अपने-आपको को नीचे गिरा दिया है—हाँ, सरकार, आप एक प्रतिगामी हैं। प्र-ति-गा मी !"

"छोकरे, यह मत भूल कि तू इस तरह किसके साथ बात कर रहा

है !" गुस्से में अपनी कुर्सी से उछलता हुआ ईवान चीखा।

"मैं तुम से बात कर रहा हूँ और मैं छोकरा नहीं हूँ ! यहाँ तुम अपनी अकड़ दिखाने और लोकप्रियता प्राप्त करने आये हो !"

"सेल्डोनीमोव, यह क्या है ?" ईवान चीखा !

भयातुर होकर सेल्डोनीमोव ऐसे कूदा कि एक खंभे की तरह रुक गया—एकदम किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ ! मेहमान अपनी-अपनी जगह पर सकते में आ गये। केवल चित्रकार और विद्यार्थी ने 'फायर ब्राएड' के लेखक की दाद दी--"शाबाश ! शाबाश ! प्रशंसनीय प्रशंसनीय !"

पत्रकार अनवरत क्रोध से चीखता रहा :

"हाँ, तुम यहाँ अपनी मानवीयता की बड़ हाँकने चले आये ! तुमने हम-सब की खुशी में खलल डाल दिया। तुम बिना यह सोचे शैम्पेन कंठ में उँडेले जा रहे हो, कि यह एक दस रूबल मासिक पगार पाने वाले सरकारी क्लर्क के लिए कितनी महंगी है ! मुझे संदेह है कि तुम भी उन अफसरों में से ही एक हो, जो अपने मातहतों की जवान बीवियों को स्वादिष्ट कौर समझते हैं। उससे भी अधिक—मुझे निश्चित रूप से मालूम है कि तुम शराब के एकाधिकार के समर्थक हो ! हाँ, हाँ, हाँ !"

"सेल्डोनीमोव, सेल्डोनीमोव !" अपनी बाहें उसकी ओर फैलाते हुए ईवान चीखा। उसे लगा कि हर शब्द जो 'फायर ब्राएड' का लेखक बोल रहा था, उसके दिल के लिए एक तीखी नयी कटार था।

"अच्छा, योर एक्सलेन्सी, अभी लीजिए, कृपाकर आप व्यग्र न हों, सरकार !" सेल्डोनीमोव ने फेफड़ों के सारे जोर के साथ कहा और 'फायर ब्राएड' के शरीफ़ज़ादे के पास जाकर उसे कोट के कालर से

पकड़ लिया और मेज़ से दूर घसीट ले गया।

यह एकदम अनहोनी बात थी कि सेल्डोनीमोव-जैसा कमज़ोर व्यक्ति ऐसी शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन कर सके। लेकिन पत्रकार बहुत नशे में था और सेल्डोनीमोव बिल्कुल होश में। उसने पत्रकार की पीठ पर कई घूंसे जमाये और उसे दरवाज़े के बाहर ढकेल दिया।

"तुम सब गुण्डे हो!" पत्रकार चीखा, "मैं कल 'फायर ब्राण्ड' में तुम-सब की गत बनाऊँगा!"

पूरी-की-पूरी पार्टी अपनी जगह पर से उछल पड़ी।

"योर एक्सलेन्सी, योर एक्सलेन्सी!" सेल्डोनीमोव, उसकी माँ और मेहमानों में से कई एक जनरल को घेर कर भयातुर चिल्ला पड़े "योर एक्सलेन्सी, हम प्रार्थना करते हैं, शान्त होइए! हम प्रार्थना करते हैं......"

"नहीं, नहीं!" जनरल चीखा। "मैं बरबाद हो गया! मैं यहाँ आया, मैं चाहता था—कहने का मतलब...सेल्डोनीमोव की...अपने क्लर्क की शादी पर...वह क्या...हाँ...बपतिस्मा देने—उसके धर्म-पिता के रूप में उसे शुभ कामनाएँ देने....और इसका नतीजा यह हुआ...तुम लोग देखो, क्या नतीजा हुआ......"

वह क़रीब-क़रीब बेहोश होकर अपनी कुर्सी पर लुढ़क गया और उसने अपने हाथ मेज़ पर पटक दिये, उसका सिर सीधे हाथों पर गिरकर मुरब्बों की तश्तरी में जा पड़ा। और जो घबराहट सब पर छा गयी, उसका वर्णन नहीं हो सकता।

एक मिनट बाद वह उठा, प्रकटतः चले जाने के लिए, लेकिन

लड़खड़ाया, एक कुर्सी के पैर से टकराया और फर्श पर पेट के बल सपाट गिर पड़ा और नाक बजाने लगा।....

प्रायः संयमशील लोगों की यही दशा होती है, जब वे स्थितिवश कभी ज्यादा पी जाते हैं। आखरी दौर तक, आखिरी क्षण तक वे अपना होश क़ायम रखते हैं और अचानक ऐसे गिर पड़ते हैं, जैसे किसी ने उन्हें जड़ से घास की तरह काट कर गिरा दिया हो। ईवान अब फर्श पर नशे में एकदम बेहोश पड़ा था। सेल्डोनीमोव स्थिति से अवाक् होकर अपने बाल नोच रहा था, मेहमान जल्दी में बिखरने लगे थे। प्रत्येक अपने-अपने ढंग से रास्ते में इस घटना पर टिप्पणी करता हुआ जा रहा था। तीन बज चुके थे।

सेल्डोनीमोव मेहमानों को जाते देख रहा था; दावत का दुखद अन्त देख रहा था, अपने सबसे ऊँचे अफ़सर—हिज़ एक्सलेंसी ईवान को बेहोश देख रहा था और जैसा कि कोई सोच सकता है,उसका दिमाग़ उस कमरे में फैली हुई अबतरी और अव्यवस्था से भी बदतर हालत में था—उस समय जब ईवान फर्श पर पड़ा है और उस के समीप खड़ा निराशा की अन्तिम सीमा पर पहुँचा, सेल्डोनीमोव अपने बाल नोच रहा है, हम सेल्डोनीमोव की इस शादी के सम्बन्ध में आप को कुछ बताने के लिए क्षण भर को अपनी कहानी का सिलसिला तोड़ रहे हैं।

७

अपनी शादी से अधिक नहीं, केवल एक महीना पहले, सेल्डोनीमोव एक असाध्य स्थिति में लगभग मिट जाने के निकट था। वह कहीं दूरस्थ प्रान्त से आया था, जहाँ उसका पिता किसी छोटी नौकरी पर था और अपने किसी अपराध के मुकदमे के खत्म होने का इंतज़ार करता करता मर गया था। अपनी शादी के लगभग पाँच महीने पहले, पीटर्सबर्ग में पूरे एक साल भूखों रहने के बाद, सेल्डोनीमोव को दस रूबल वेतन की यह नौकरी मिली और अब वह उस व्यक्ति की तरह था, जो तन और मन से मर कर, केवल इसलिए जी गया हो कि फिर शीघ्र ही परिस्थितियाँ उसे अच्छी तरह कुचल कर पूरा आनन्द पा सकें।

अपने पिता के मरने के बाद उस ने अपनी माँ के साथ अपने प्रान्त का शहर छोड़ दिया था। दुनिया में वे बिल्कुल अकेले थे।

माँ और बेटा। अखाद्य चीज़ों पर गुज़र करते हुए वे ठंड में लगभग मर ही चुके थे। ऐसे भी दिन आये, जब सेल्डोनीमोव मग लिये हुए पीने के पानी लेने को 'फोण्टङ्का' पर गया। जब उसे नौकरी मिल गयी, तो किसी तरह एक कमरे के कोने में माँ-बेटे ने अपने रहने का प्रबंध कर लिया। माँ कपड़े धोने जाया करती और वह कठोर मितव्ययता से काम ले कर, चार महीनों में नोच-खसोट कर, इतना जोड़ पाया कि एक जोड़े बूट और गरम कोट ले सके। अपने दफ्तर में भी उसे निरन्तर उपहास की यातना का सामना करना पड़ता—एक बार उस के अफ़सर ने मज़ाक़ में उससे पूछा कि पहली दफे वह रूसी स्नान-घर में कब गया था। फिर यह फुसफुसाहट हुई कि उस की यूनीफार्म के कालर के नीचे खटमलों का एक पूरा घोंसला बसा है। और ऐसे ही कई मज़ाक उसे लेकर प्रसिद्ध हो गये। लेकिन सेल्डोनीमोव बड़े दृढ़ चरित्र का व्यक्ति था। देखने में वह विनम्र और शान्त था। उसे बहुत थोड़ी शिक्षा मिली थी। वह प्रायः काम से काम रखता और सदा मौन रहता। छिप कर भी मुश्किल ही से किसी ने उसे बातचीत करते हुए सुना था।—उस ने कभी कुछ सोचा हो, कभी कोई योजना या कार्यक्रम बनाया हो, कभी किसी बात पर अपनी राय दी हो, किसी को मालूम नहीं। लेकिन इस के बदले अपने को उस बुरी परिस्थिति से निकाल कर, एक बेहतर आधार पर अपने को जमाने की एक स्वभाविक तड़प, एक अदम्य संकल्प उस के मन में अचेतन रूप से विद्यमान था। उस में एक चींटी की ज़िद थी। यदि आप चींटियों की माँद नष्ट कर दें, तो वे तुरन्त उस की मरम्मत करना शुरू कर देंगी, आप फिर नष्ट करते हैं, वे फिर

बनाना शुरू कर देती हैं और इसी तरह निरन्तर कर्म-रत रहती हैं। वह एक विधायक तथा पालतू जीव था। उस के माथे पर लिखा था कि वह अपना रास्ता निकाल लेगा, बसेरा बना लेगा और कदाचित कुछ बटोर भी लेगा। संसार में उसकी माँ ही एक ऐसी प्राणी थी, जो उसे प्यार करती थी, और वह पूरे आवेश से अपने इस बेटे से प्यार करती। वह एक मज़बूत, न थकने वाली, कठोर परिश्रम करने वाली, लेकिन साथ ही दयालु नारी थी।

यह सम्भव था कि वे अच्छे वक्त की उम्मीद में पाँच-छै साल और अपने कोने में पड़े रहते, यदि एक अवकाश-प्राप्त 'टिटुलर काउंसिलर ग्लेकोपिताएव' से उनकी भेंट न हो जाती। वह उस छोटे शहर में, जहाँ वे पहले रहते थे, एक सरकारी दफ़्तर में ख़ज़ानची रहा था, लेकिन अब रिटायर हो गया था और पीटर्सबर्ग में अपने कुटुम्ब के साथ बस गया था। वह सेल्डोनीमोव को जानता था और किसी कारण से उसके बाप का कृतज्ञ था। बेशक, उसके पास अधिक धन न था, लेकिन थोड़ा-बहुत ज़रूर था—कितना? किसी को मालूम न था—उसकी बीवी को भी नहीं, न उसकी बड़ी लड़की को ही और न उसके सम्बन्धियों को! उसके दो लड़कियाँ थीं और क्योंकि वह बहुत ज़िद्दी, शराबी और घरेलू जीवन में तानाशाह था और इसके साथ ही अपंग था, उसने अपनी एक लड़की की शादी सेल्डोनीमोव के साथ करना तय कर लिया। "मैं उसे जानता हूँ", उसने कहा, "उसका बाप एक अच्छा आदमी था और बेटा भी एक अच्छा आदमी होगा।"

यह टिटुलर काउंसिलर जो चाहता था, करता था, एक बार

जो कह देता था, उसे कराके दम लेता। वह आश्चर्यजनक रूप से ज़िद्दी था। हत्थेदार कुर्सी पर पड़े-पड़े उसका अधिक समय बीतता, क्योंकि किसी रोग के कारण वह अपने पैरों के उपयोग से वंचित हो गया था। लेकिन जो हो, इसके कारण उसके वोडका पीने में कोई खलल न पड़ता था। वह सारा दिन पीने और बक-वास करने में बिता देता। वह द्वेषी था और हमेशा किसी-न-किसी को परेशान करना उसके विनोद का सबसे प्रिय साधन था। इस काम के लिए उसने कई दूर की सम्बन्धी औरतों को अपने घर में रख छोड़ा था—बीमार और झगड़ालू बहन, बुरे मिज़ाज की दो-चारबाँक सालियाँ, और इनके अतिरिक्त बूढ़ी चाची, जिसने किसी तरह अपनी पसली की हड्डी तोड़ ली थी, और फिर रूस में बस जाने वाली एक जर्मन स्त्री, जो अलिफ़ लैला की कहानियाँ कहने की बड़ी योग्यता रखती थी और इसीलिए म्लेकोपिताएव ने उसे रख लिया था—ये सब उसके घर में रहती थीं। इन अभागी औरतों को, जो उसके दान पर जी रही थीं, तंग करना, दुनिया की हर बात के लिए उन्हें गाली देना ही उसके लिए आनन्द-प्राप्ति का एक मात्र साधन रह गया था और उनमें से कोई भी, उसकी बीवी भी नहीं, जो दाँत का पुराना दर्द लिये पैदा हुई थी, ऐसी न थी कि उसके जवाब में एक शब्द कहने की हिम्मत रखती। वह उन्हें आपस में लड़ा देने की कोशिश करता, हर तरह की चुगलखोरी और अनबन का आविष्कार करता और उकसाता और उन्हें झगड़ा करते और घूंसेबाज़ी पर उतर आते देखकर हँसता। जब उसकी सबसे बड़ी लड़की अपने अफ़सर पति के साथ दस साल दयनीय ग़रीबी में

बिता, विधवा होकर अपने तीन बीमार छोटे-छोटे बच्चों के साथ उसके साथ रहने आयी, तो वह बहुत खुश हुआ। उसके बच्चों को वह सहन न कर सकता था, पर उनके आ जाने से जो उसके शिकारों की, जिन पर वह अपने दैनिक प्रयोग आज़माता था, संख्या बढ़ गयी, तो बुड्ढे की खुशी का वारा-पार न रहा। ईर्षालु और द्वेषी औरतों और बीमार बच्चों की यह पूरी भीड़ अपनी यातनाओं के साथ पीटर्सबर्ग साइड के उस लकड़ी के छोटे घर में कसी-कसाई पड़ी रहती थी। उन्हें खाने को बहुत कम मिलता था, क्योंकि बूढ़ा कंजूस था और सिर्फ़, कॉपेक* में ही खर्च आदि को पैसा देता था, यद्यपि अपनी वोडका के लिए उसे रूबल तक खर्चने में आपत्ति न थी। वे कभी भी पूरा न सो पाते थे, क्योंकि बूढ़े को नींद न आती थी और दिल बहलाव की ज़रूरत होती। एक शब्द में, वे सब दुखी थे और उस बन्दीखाने में फँसे अपने भाग्य को कोसा करते थे।

उन्हीं दिनों पहली बार म्लेकोपिताएव ने सेल्डोनीमोव को देखा। उसकी लम्बी नाक और नम्र व्यवहार पर उसे आश्चर्य हुआ। उस समय उसकी सीधी और बीमार-सी सबसे छोटी बेटी ठीक सत्रह साल की थी। कभी वह किसी जर्मन स्कूल में (पढ़ने) गयी थी, लेकिन वह अक्षर-ज्ञान से अधिक स्कूल से कुछ न पा सकी। कंठमाला और रक्त-हीनता से पीड़ित वह अपने अपंग और शराबी बाप की छड़ी के नीचे घरेलू झगड़ों के शोर-शराबे, चुग़लखोरी, निन्दा और ताक-झाँक के

---

* कापेक = सबसे छोटा रूसी सिक्का—दमड़ी

वातावरण में सयानी हुई थी। उसके न कोई संगी साथी था, न उसके भेजे में बुद्धि थी। वह बहुत पहले ही शादी कर लेना चाहती थी। बाहर वालों में वह चुपचाप बैठी रहती थी, लेकिन घर में अपनी माँ और पिछलग्गुओं के साथ वह द्वेषी हो गयी थी और ऐसी तेज थी, जैसे बरमी। उसे विशेष रूप से अपनी बहन के बच्चों को चिकोटी काटना, थप्पड़ मारना और उनके बारे में चुग़ली खाना कि वे कैसे चीनी और रोटी चुराते हैं, प्रिय था। उसकी यह प्रिय चीज़ उसकी बड़ी बहन और उसके बीच कभी भी खत्म न होने वाले कलह का कारण थी। बूढ़े ने स्वयं प्रस्ताव किया कि सेल्डोनीमोव उसके साथ ब्याह कराले।

यद्यपि सेल्डोनीमोव की स्थिति संतोषप्रद न थी, फिर भी उसने सोचने के लिए ज़रा मुहलत माँगी। माँ-बेटे ने काफी देर तक विचार-विनिमय किया। घर दुलहिन के नाम लिख दिया जाने वाला था और यद्यपि घर बहुत छोटा, लकड़ी का और खराब था, फिर भी वह घर तो था ही, इसके अलावा बूढ़े ने चार सौ रूबल भी देने का वादा किया था—कोई स्वयं इतनी रकम कब जमा कर पाता है......

"मैं क्यों एक मर्द को अपने घर में लाना चाहता हूँ, तुम लोग जानती हो ?" जिद्दी बूढ़ा शराबी चिल्लाया था, "पहली बात यह कि तुम सब औरतें हो और मैं औरतों से ऊब गया हूँ। मैं उसे अपनी उँगलियों पर नचाने के लिए लाना चाहता हूँ, क्योंकि मैं उसका उपकारक हूँ। दूसरा कारण उसे घर में लाने का यह है कि तुम-सब यह नहीं चाहतीं, इस बात के विरुद्ध और इससे क्रुद्ध हो। तुम्हें मज़ा चखाने के लिए मैं यह कर रहा हूँ। जो मैं कहता हूँ, उसे करूँगा !" और

सेल्डोनीमोव से उसने कहा था, "और तुम, पारफायरी, जब यह तुम्हारी बीवी बन जाय, इसे खूब पीटो, जन्म से ही इस पर भूत सवार रहे हैं। सबको भगाओ और मैं एक छड़ी तैयार कर दूँगा !"

सेल्डोनीमोव चुप रहा था, लेकिन उसने पहले ही निश्चय कर लिया था। वह और उसकी माँ शादी के पहले ही घर में बुला लिये गये, उन्हें नहलाया गया, कपड़े पहनाये गये, जूते पहनाये गये और शादी के खर्च आदि के लिए रकम दे दी गयी। बूढ़े ने उन्हें अपनी रक्षा में ले लिया, शायद इसलिए कि पूरा कुटुम्ब उनके विरुद्ध था। सेल्डोनीमोव की माँ ने उसे इतना खुश कर दिया कि उसने उसकी निन्दा करना तक भी छोड़ दिया। और जहाँ तक सेल्डोनीमोव का संबन्ध है, उसने उससे शादी के एक सप्ताह पहले, अपने मन-बहलाव के लिए, एक नाच नचवाया। "बस, इतना काफी है," नाच के अन्त में उसने कहा, "मैं सिर्फ़ यही देखना चाहता था कि तुम मेरे सामने अपने को भूल तो नहीं गये।" शादी के खर्च के लिए उसने मुश्किल से पर्याप्त रकम दी और उस पर उसने अपने सभी सम्बन्धियों और मित्रों को शादी पर दावत दे दी।

सेल्डोनीमोव की ओर से केवल 'फ़ायर-ब्राण्ड' का पत्रकार और सम्मानित मेहमान पेत्रोविच बुलाये गये थे। सेल्डोनीमोव को अच्छी तरह मालूम हो गया था कि उसकी दुलहिन उसे नफरत से देखती है, कि वह अफसर के साथ शादी करना चाहती है, लेकिन जैसा उसकी माँ के साथ प्रबन्ध हुआ था, वह सब चीजों के साथ निबाह कर रहा था। शादी का सारा दिन बूढ़ा बैठा हुआ पीता और गन्दी-से-गन्दी गालियाँ बकता रहा। शादी के कारण पूरे कुटुम्ब को पिछवाड़े

के एक कमरे में शरण लेनी पड़ी थी और वहाँ वे आपस में इस तरह फँसे-फँसाये पड़े थे कि हवा खराब हो गयी थी। सामने का कमरा 'बाल-डांस' और भोज के लिए ठीक किया गया था। आखिर जब ग्यारह बजे बूढ़ा नशे में बुत हो सो गया, तो दुलहिन की माँ ने, जो दिन भर विशेष रूप से सेल्डोनीमोव की माँ से खार खाये बैठी रही थी, गुस्सा थूक देने और अपेक्षाकृत दयालु हो कर 'बाल' और भोज में उपस्थित होने का निश्चय किया। लेकिन तभी ईवान के आगमन ने सब-कुछ गड़बड़ कर दिया। उसने आने से इनकार कर दिया, वह बिगड़ी और उन सब पर बरस पड़ी, क्योंकि उसे सूचना न दी गई थी कि खुद जनरल को निमन्त्रित किया गया है। उसे बताया गया कि वह बिना बुलाये आया है, लेकिन वह इतनी मूर्ख थी कि इस पर विश्वास ही न करती थी। ईवान के आगे शैम्पेन परोसना जरूरी समझा गया। सेल्डोनीमोव की माँ के पास सिर्फ़ एक रूबल था, खुद सेल्डोनीमोव के पास एक कॉपेक भी न था, इसलिए उन्होने श्रीमती म्लेकोपिताएव के आगे माथा नवाकर, उसके सामने बिछकर उससे पहले एक बोतल के लिए, फिर दूसरी बोतल के लिए पैसे माँगे, उसके सामने उन्होंने सेल्डोनीमोव की दफ़्तरी ज़िन्दगी में आगे मिलने वाले सभी फायदों, पहुँच, रसूख और सभी शेष बातों को रखा और आखिर उसे मना लिया और उसने पैसे दे दिये। लेकिन उसने सेल्डोनीमोव को इसके लिए इतनी यातना दी और क्रोध के इतने कड़वे घूँट पिलवाये कि रात भर में उसे कितनी ही बार उस छोटे कमरे

---

*बाल डांस=एक तरह का नृत्य।

में, जहाँ स्वर्गीय सुख के लिए सुहाग रात को सेज सजाई गई थी, भागना पड़ा और सेज में चुपके से धँसकर एक नपुंसक क्रोध में काँपते हुए अपने बाल नोचने पड़े। हाँ, ईवान को नहीं मालूम कि उन शैम्पेन की दो बोतलों के लिए, जिन्हें उसने उस रात को पिया था, उसके मातहत क्लर्क को कितनी कीमत चुकानी पड़ी थी। सेल्डोनीमोव के उस आतंक, कष्ट और निराशा का अंदाज़ा लगाइए, जब ईवान-सम्बन्धी यह घटना ऐसे अप्रत्याशित अन्त पर पहुँची। सेल्डोनीमोव के सामने फिर वही सब तरह की परेशानियाँ घूम आयीं। शायद सारी रात सनकी दुलहिन की चीखें और आँसू, दुलहिन की मूर्ख माँ की झिड़कियाँ और ताने-तिशने—उसका सिर तो पहले ही घूम रहा था, अब आगत के अंधकार और वर्त्तमान के दूषित वातावरण में उसकी आँखें लगभग अंधी हो गयीं। और यहाँ ईवान था कि उसे सहारे की जरूरत थी। अब तीन बजे सुबह, कोई डाक्टर लाने या जनरल को उसके घर पहुँचाने के लिए एक गाड़ी लाना जरूरी था, अवश्य ही एक गाड़ी ही होनी चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यक्ति को, जो वैसी दशा में था, एक मामूली 'वङ्का' में भेजना असम्भव था! लेकिन गाड़ी के लिए पैसा वह कहाँ से लाये? बूढ़ी श्रीमती म्लेकोपिताएव ने इस बात पर जल-भुन कर कि जनरल ने उससे दो बातें तक न कीं और पूरे खाने के समय एक नज़र भर उसकी ओर न देखा, घोषणा कर दी कि उसके पास एक कॉपेक भी नहीं। यह बिल्कुल सम्भव है कि सचमुच उसके पास एक कॉपेक भी न हो, लेकिन सवाल था, कि कहाँ से यह प्राप्त किया जाय? वह क्या करे? सेल्डोनिमोव अकारण ही अपने बाल नोच रहा था......

ईवान को अस्थाई रूप से एक छोटे चमड़े के सोफे पर, जो खाना खाने के कमरे में पड़ा था, लेटा दिया गया। उस समय जब दूसरे लोग मेजों को अलग कर चीजें उठा-पटक रहे थे, सेल्डोनीमोव सब तरफ़ पैसे इकट्ठे करने की कोशिश कर रहा था—उसने नौकर तक से उधार मांगने की कोशिश की—लेकिन किसी के पास कुछ न था। उसने पेत्रोविच से भी, जो दूसरों से ज्यादा देर रुका रहा था, मांगने का ख़तरा उठाया। लेकिन वह, मेहरबान जैसा कि वह था, पैसे की बात पर कुछ ऐसा बौखला उठा, बल्कि कहा जाय कि इतना डर गया कि बेगितनी बेहूदा बातें बक गया और "दूसरे अवसर पर खुशी के साथ, लेकिन इस समय माफ़ी चाहता हूँ!" फुसफुसाते हुए अपनी टोपी उठा कर जल्दी में घर से बाहर हो गया। केवल वह दयालु युवक, जिसने 'ड्रीम-बुक' के बारे में कहानी सुनायी थी, थोड़ी बेवक्त की सहायता के लिए आगे आया। वह भी दूसरों से ज्यादा देर तक रुका था, क्योंकि सेल्डोनीमोव के दुर्भाग्य में उसे सच्ची दिलचस्पी थी। आखिर कुछ विचार-विनिमय के बाद सेल्डोनीमोव, उसकी माँ और उस युवक ने तय किया—यही बेहतर है कि डाक्टर न बुलाया जाय, बल्कि बीमार को उसके घर पहुँचाने के लिए गाड़ी ही लायी जाय और फ़िलहाल, जब तक कि गाड़ी नहीं आ जाती, उसे होश में लाने के लिए कुछ मामूली घरेलू उपचार, जैसे उसके सिर और कनपटियों को पानी से तर करना, उसकी चाँद पर बरफ़ रखना इत्यादि किये जायँ। सेल्डोनीमोव की माँ ने यह सब करने की ज़िम्मेदारी अपने सिर ली। युवक गाड़ी की खोज में दौड़ा। रात के उस वक्त पीटर्सबर्ग साइड में 'वड्का' तक मिलना मुश्किल था, इसलिए उसे

दूर के एक गाड़ी-स्टैण्ड पर जाकर एक कोचवान को जगाना पड़ा। तब एक लम्बा मोल-तोल शुरू हुआ। कोचवान कहता था कि रात के उस वक्त एक गाड़ी के लिए पाँच रूबल बिल्कुल कम हैं, लेकिन वह आखिर तीन पर जाने को तैयार हो गया।

लेकिन जब युवक करीब चार बजे गाड़ी के साथ सेल्डोनीमोव के घर पहुँचा, तो सेन्डोनीमोव और उसकी माँ ने उसके आने से कहीं पहले अपना विचार बदल दिया था।

हुआ यों कि ईवान, जो अब भी बेहोश था, कुछ इस तरह बीमार हो गया, इतना कराहने और इतने ज़ोर से छटपटाने लगा कि उसे कहीं ले जाना उन्हें बिल्कुल असम्भव दिखाई दिया। उस हालत में उसे उसके घर ले जाना खतरनाक हो सकता था। "इस सब का नतीजा क्या होगा?" बिल्कुल हिम्मत हारकर सेल्डोनीमोव ने कहा, "क्या किया जाय?"

तब एक नया सवाल उठ खड़ा हुआ—अगर बीमार को घर में रखना है, तो उसे वे कहाँ रखें? कहाँ सुलायें? पूरे घर में केवल दो बिस्तर थे, एक डबल-बेड, जिस पर बूढ़ा म्लेकोपिताएव और उसकी बीवी सोते थे, दूसरा एक नया नकली अखरोट का डबल-बेड, जो हाल ही में लाया गया था और नव-दम्पत्ति के लिए निर्दिष्ट

था। घर के दूसरे लोग एक-दूसरे से सट-सटा कर, ज्यादतर फर्श पर ही पंखों की चटाइयों पर सोते थे, जो पुरानी, बोसीदा और बिल्कुल बेकार हो गयी थीं और उन सब के लिए मुश्किल से काफ़ी थीं। बीमार को वे कहाँ लिटाते ? एक पंखों वाली चटाई मिल सकती थी, घर की औरतों में से कोई भी अपनी दे देती, पर उसे कहाँ बिछाया जाय ? यह भी समस्या थी। आखिर सोच-विचार के बाद यह तय हुआ कि ड्राइंग रूम में बिस्तर लगाया जाय, क्योंकि वह बाकी कुटुम्बियों से दूरी पर था और उसमें एक अलग दरवाज़ा भी था। लेकिन वह लगाया किस चीज पर जाय ? कुर्सियों पर बिस्तर लगाना सम्भव था ! यह सब जानते हैं कि प्राइमरी स्कूल के लड़के जब इतवार की छुट्टी में घर आते हैं, तो उन्हें कुर्सियों पर सुलाया जाता है, लेकिन ईवान जैसे व्यक्ति के लिए ऐसा करना बड़ा ही अपकानजनक होता। कल वह क्या कहेगा, जब अपने को कुर्सियों पर पड़ा पायेगा ! सेल्डोनीमोव यह नही सुन सकता ! बस, अब एक ही काम किया जा सकता था। वह यह कि उसे दुलहिन की सेज पर ले जाया जाय। और उसने अपने अफसर को वहीं ले जाने का फैसला किया।

सुहाग रात की सेज, जैसा कि हमने पहले ही कहा है, खाना खाने के कमरे से दूर एक छोटे कमरे में सजाई गयी थी। पलंग पर हाल ही की खरीदी हुई तोशक, जिसे कभी इस्तेमाल न किया गया था, साफ चादर, चार गुलाबी रंग की छींटों के झालरदार तंज़ेब के गिलाफ़दार तकिये और एक गुलाबी रंग के साटन का बड़े परिश्रम से नयी तर्ज में बनाया गया लिहाफ़ था। कलईदार छल्ले मे पलङ्ग के ऊपर

तंज़ेबी पर्दे लटके थे। एक शब्द में यह-सब कुछ वैसा ही था, जैसा कि एक दुलहिन के लिए होना चाहिए और मेहमानों ने, जो लगभग सभी उस कमरे में हो आये थे, इस-सब प्रबन्ध की प्रशंसा की थी। दुलहिन भी, जो कि सेल्डोनीमोव को बर्दाश्त न कर सकती थी, रात में कई बार चोरी से उस कमरे में उसे (पलङ्ग को) देखने गयी थी। जब उसने सुना कि उसकी सुहाग-रात की सेज पर वे उस बीमार को, जिसे हैज़े की तरह कुछ हो गया है, ले जाना चाहते हैं, तो उसके रोष और गुस्से का वार-पार न रहा!

दुलहिन की माँ ने उसका पक्ष लिया, डाँटा और धमकी दी कि सुबह वह अपने पति से शिकायत करेगी। लेकिन सेल्डोनीमोव ने अपना अधिकार जताया और इस पर डटा रहा। ईवान को उस बिछावन पर पहुँचाया गया और ड्राइंग रूम में नव-दम्पति के लिए पंखों वाली चटाई का बिस्तर लगा दिया गया। दुलहिन रिरियायी और रूठने के लिए भी प्रस्तुत हुई, लेकिन सेल्डोनीमोव की आज्ञा का उल्लंघन न कर सकी। उसके पापा के पास एक छड़ी थी, जिससे वह पूर्ण रूप से परिचित थी और वह भली-भाँति जानती थी कि सुबह कुछ विशेष बातों के लिए पापा रिपोर्ट तलब करेंगे। उसे दिलासा देने के लिए वे लोग गुलाबी साटन वाला वह लिहाफ़ और तंज़ेबी गिलाफों के साथ वे तकिये ड्राइंग रूम में ले आये।

इसी समय वह युवक गाड़ी ले कर पहुँचा और यह सुन कर कि

अब इसकी जरूरत नहीं, भयंकर रूप से डर गया। वह गाड़ी का किराया देने को मजबूर था, और उसकी जेब में एक बीस कॉपेक का सिक्का भी न था। सेल्डोनीमोव ने साफ दिवाला बोल दिया। उन्होंने कोचवान को मनाने की कोशिश की, लेकिन वह हल्ला मचाने लगा। उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया, तो वह किवाड़ पीटने लगा। कैसे यह-सब झंझट खत्म हुआ, मुझे बिल्कुल याद नहीं। मेरा ख्याल है कि गाड़ी में कैदी बनकर युवक शहर के एक दूसरे हिस्से को चल दिया—इस उम्मीद में कि वहाँ वह एक विद्यार्थी मित्र से, जो अपने कुछ दोस्तों के साथ वहाँ ठहरा हुआ था, कुछ पैसा लेने में सफल हो जायगा।

जब दूल्हा-दुलहिन ड्राइंग रूम में बन्द किये गये, तो पाँच बज चुके थे। सेल्डोनीमोव की माँ बीमार के बिस्तर के पास रात भर के लिए रुक गयी। उसने फर्श पर अपने लिए एक दरी बिछा ली और अपनी रोयेंदार खाल को ओढ़ लिया। लेकिन वह सो न सकी, क्योंकि उसे हरदम उठना पड़ता था। ईवान बहुत बीमार हो गया था। सेल्डोनीमोव की माँ बड़ी उदार और बहादुर औरत थी। उसने उसके सब कपड़े उतारे और इस तरह उसकी तीमारदारी की, जैसे वह उसका अपना बेटा हो और सारी रात उसे जरूरी बर्तन कमरे से बाहर ले जाना और फिर अन्दर ले आना पड़ा।

लेकिन उस रात की मुसीबत अभी खत्म न हुई थी।

ड्राइंग रूम में नव-दम्पति को बन्द हुए अभी मुश्किल से दस मिनट हुए थे कि अचानक एक तेज़ चीख—खुशी की नहीं, बल्कि बहुत ही भयानक—सुनायी पड़ी और उसके तत्काल बाद कुर्सियों के गिरने और टूटने की चरचराहट की आवाज आयी। एक क्षण में हाँफती, काँपती भयातुर औरतें—नंगेपन की सभी अवस्थाओं में—उस अंधकार-भरे कमरे में घुस आयीं। ये औरतें दुलहिन की माँ, उसकी बड़ी बहन (जिसने कि उस समय अपने बीमार बच्चों तक को छोड़ दिया था) और उस टूटी पसली वाली को मिला कर उसकी तीन चाचियाँ, थीं। रसोइया भी था और वह कहानियाँ कहने की योग्यता रखने वाली जर्मन औरत भी, जिसका पंखों वाला बिस्तर नव-दम्पति के उपयोग के लिए बरबस छीन लिया गया था, क्योंकि वही जो घर में सबसे अच्छा था और जो उसकी अपनी अकेली मिलकियत था। ये सब सम्भ्रान्त और उड़ती चिड़या के पर गिनने वाली महिलाएँ पन्द्रह ही मिनट पहले रसोई और गलियारे से होकर अपने पँचगुरों के बल ओसारे में जाकर, एक नितान्त अचिन्त्य उत्सुकता में खोकर (ड्राइंग रूम की बातें) सुन रही थीं।

तभी किसी ने मोमबत्ती जलायी। एक अत्यन्त अनपेक्षित दृश्य सामने था—कुर्सियाँ, जिन पर कि पंखों वाला बिस्तर डाला गया था, दुहरे वजन के नीचे अलग-अलग हो गयी थीं, और बिस्तर नव-दम्पत्ति को लिये हुए फर्श पर आ रहा था। दुलहिन गुस्से के मारे ठुनक रही थी। इस बार वह अपने मर्म की गहराई तक अपमानित हुई थी। सेल्डोनीमोव, आध्यात्मिक रूप से मुर्दा, ऐसे अपराधी की तरह

किंकर्त्तव्य-विमूढ़ खड़ा था, जिसे किसी घोर अपराध के अभियोग में सज़ा दे दी गयी हो। वह अपनी रक्षा करने की कोशिश भी न कर रहा था। 'आह,' 'ओह' और दूसरी तरह की चीखें सब ओर से आयीं। शोर सुनकर सेल्डोनीमोव की माँ अन्दर आयी, लेकिन इस बार दुलहिन की माँ की पूर्ण विजय हुई। वह सेल्डोनीमोव को अप्रत्याशित और असंगत रूप से फटकारने लगी। अन्त में उसने बढ़ कर अपनी लड़की का हाथ थामा और 'अब इसके बाद आप कैसे पति रह गये, जनाब ? इस अपमान के बाद आप किस योग्य रह गये, श्रीमान्!' मुँह बिचका कर और हाथ सेल्डोनीमोव की ढोड़ी के नीचे तक ले जाकर, उसने ताना दिया और सुबह अपने भयानक बूढ़े पति को सफाई देने का भार स्वयं अपने ऊपर लेकर, वह अपनी लड़की को उसके पति के पास से ले गयी। दूसरी सब औरतें ठंडी साँसें भरती और सिर हिलाती उसके पीछे चली गयीं। केवल सेल्डोनीमोव की माँ उसके पास रह गयी और उसने सेल्डोनीमोव को दिलासा देने की कोशिश की। लेकिन तुरन्त उसने उसे भी भेज दिया।

उसे दिलासे की जरूरत न थी। वह सोफ़े के पास गया और जिस अवस्था में—नंगे पाँव, अत्यावश्यक अण्डर-वियर पहने, चिड़चिड़ाहट-भरी अस्थिरता की स्थिति में—वह था, बैठ गया। उसके विचार एक-दूसरे को काटते हुए दिमाग में धूमें मचा रहे थे। कभी वह यांत्रिक रूप से अपने चारों ओर कमरे में देखता, जहाँ अभी थोड़ी देर पहले उच्छृङ्खल नृत्य हुए थे और जहाँ हवा में अब भी तम्बाकू का धुआँ और शराब की बू बसी हुई थी। सिग्रेट के जले टुकड़े, मिठाइयों के काग़ज़ अभी तक

गन्दे और भीगे फर्श पर बिखरे पड़े थे। बरबाद हुई सुहाग रात की सेज और उलटी हुई कुर्सियाँ सब से सच्ची सांसारिक आशाओं और सपनों की नश्वरता की साक्षी थीं। इस तरह सोचता हुआ वह लगभग एक घंटा उसी तरह बैठा रहा।...कल दफ़्तर में क्या होगा? उसी को लेकर कष्टदायक विचार उसके दिमाग में उठते रहे। बड़े दुःखपूर्ण रूप से उसे इस बात का होश था कि उसे ईवान के दफ्तर से अपनी बदली करानी होगी। चाहे इसके लिए जो भी क़ीमत चुकानी पड़े। उस रात की घटनाओं के बाद उस दफ़्तर में काम करना असम्भव होगा। उसने म्लेकोपिताएव के बारे में सोचा, जो दूसरे दिन फिर उसकी सीधाई के प्रमाण-स्वरूप उससे नाच दिखाने को कहेगा। उसे याद आया कि यद्यपि म्लेकोपिताएव ने शादी के खर्चे के लिए उसे पचास रूबल दिया था, जो कि आखिरी कॉपेक तक खर्च हो गया था, लेकिन अभी तक उसने वह चार सौ रूबल, जो वह दहेज में देने वाला था, नहीं दिया था और न आगे उसकी कोई बात ही उठी थी। यहाँ तक कि अभी कानून के अनुसार घर भी उसके नाम न चढ़ा था। उसने अपनी पत्नी के बारे में भी सोचा, जो उसके जीवन के सबसे ज्यादा नाजुक वक्त पर उसका साथ छोड़ गयी थी, उसने उस लम्बे अफ़सर की भी सोची, जो उसकी पत्नी के सामने एक घुटने के बल झुका था और ईवान की सेवा में प्रस्तुत रहने पर भी, घबराये हुए होने पर भी जिसकी ओर उसका ध्यान चला गया था। उसने उन सात भूतों की भी बात सोची, जो उसके बाप के कथनानुसार उसकी बीवी पर हावी थे, और छड़ी की भी, जो उन्हें भगाने के लिए तैयार की गयी थी। निस्सन्देह उसमें बहुत भार ढोने की शक्ति थी, लेकिन भाग्य ने अंततः

उस पर इतनी अनजानी मुसीबतों का ढेर लगा दिया कि उसे अपनी शक्ति पर संदेह होने लगा ।

सेल्डोनीमोव के उदास विचार इसी तरह बहे जा रहे थे कि इस बीच मोमबत्ती का आखिरी हिस्सा जल गया और उसकी बुझती रोशनी ने सेल्डोनीमोव के आधे मुख पर पड़कर, उसकी लम्बी गर्दन और बड़ी, टेढ़ी नाक और उसके ललाट पर सटे हुए बालों के दो गुच्छों और सिर के पिछले हिस्से के साथ उसकी एक बहुत फैली हुई, बड़ी परछाईं दीवार पर खींच दी। आखिर जब सुबह की ठंडक अपना असर दिखाने लगी, वह ठिठुरता हुआ, शरीर और आत्मा से एकदम सुन्न होकर उठा, कुर्सियों के बीच पड़े पंखों वाले बिस्तर तक गया और बिना कुछ भी ठीक-ठाक किये, बिना मोमबती बुझाये, यहाँ तक कि बिना सिर के नीचे तकिया तक रखे, रेंगकर बिस्तर में घुस गया और इस तरह गहरी नींद में सो गया, जैसे दूसरे दिन ही फाँसी के तख्ते पर चढ़ाये जाने की सज़ा पाये हुए अपराधी !

८

दूसरी तरफ़ बेचारे सेल्डोनीमोव की शादी की सेज पर ईवान ने जिस कष्ट के साथ रात बितायी, उसकी समानता किससे की जाय? कुछ समय के लिए सिर के दर्द, कै और बदहज़मी के अन्य दौरों ने क्षण भर के लिए भी उसे न छोड़ा। ये नारकीय यातनायें थीं, लेकिन उसके मस्तिष्क में कौंध के रूप में जो चेतना आती, वह ऐसे आतंक-भरे काले, घृणास्पद चित्र उसके सामने चमका जाती कि उसे चेतना से भय आता, उसके मुकाबिले में बेहोशी उसे अच्छी लगती। अब उसके मस्तिष्क में अव्यवस्थता का ही राज्य था। वह सेल्डोनीमोव की माँ को पहचानता था, उसके उपदेश, कि 'धीरज रखो, बच्चे–धीरज रखो, मेरे प्यारे, जो अच्छा न हो सके, उसे बर्दाश्त करना चाहिए'—वह सुनता था, लेकिन उसके वहाँ होने का कोई तर्क-संगत कारण उसकी समझ में न आता था।

उसे सब तरह के सपने दिखायी देते। कई बार उसने सेमेन को देखा, लेकिन जब बहुत ध्यान से देखा, तो वह सेमेन नहीं, बल्कि सेल्डोनीमोव की नाक दिखायी दी। वह आज़ाद चित्रकार, वह अफ़सर और वह सुते हुए चेहरे वाली औरत—सब उसके सामने फड़फड़ाते हुए से उड़ गये। उसे सबसे ज्यादा दिलचस्प वह छत से लटका हुआ कलईदार छल्ला लग रहा था, जिससे तंज़ेब का पर्दा बँधा हुआ था। उसे वह मोमबत्ती के आखिरी हिस्से की धुँधली रोशनी में, जो अकेली कमरे में जल रही थी, बिल्कुल साफ़ दिखायी दे रहा था और वह बार-बार यह समझने की कोशिश कर रहा था कि उस छल्ले का क्या काम है ? वह वहाँ क्यों है ? उसका मतलब क्या है ? कई बार उसने उसके बारे में बूढ़ी औरत से पूछा, लेकिन जो वह कहना चाहता था, प्रगटत: उससे दूसरी बात कह जाता, क्योंकि जो बात वह पूछना चाहता था, बहुत कोशिश करने पर भी वह उसे समझा न सका। आखिर सुबह के करीब दौरा खतम हो गया, उसे नींद आ गयी और स्वप्न-रहित गहरी नींद में सोया रहा।

वह लगभग एक घंटा सोया रहा और जब जगा, तो वह करीब-करीब पूरे होश में था, सिर्फ़ उसके सिर में असह्य दर्द था और उसके मुँह और जीभ में बहुत बुरा स्वाद था। उसे लगता था, जैसे वह रात भर कपड़े चबाता रहा है।

वह उठ बैठा, उसने चारों ओर देखा और सोचने लगा। सुबह की धुँधली रोशनी झिलमिलियों की पतली चादर से आकर दीवार पर काँप रही थी। सुबह के सात बज गये

थे। लेकिन अचानक जब ईवान को वह सब याद आया, जो पिछली रात हो चुका था—खाने के समय की सब घटनायें, असफल पराक्रम, मेज़ पर का व्याख्यान—तब उसने भली-भाँति समझ लिया कि इस-सब का क्या फल होगा ! लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे और कहेंगे ! जब उसने चारों ओर नज़र घुमाकर आखिर देखा कि अपने मातहत की शान्तिपूर्ण सेज को उसने किस अनुचित हालत को पहुँचा दिया है, तो दूसरे क्षण उसके दिल को इतनी घातक शर्मिन्दगी और यातना हुई कि वह बिलख पड़ा और हाथों से अपना मुँह छिपाकर निराशा से तकिये पर गिर पड़ा।

दूसरे क्षण वह बिस्तर से कूद पड़ा, उसने देखा कि उसके सब कपड़े अच्छी तरह साफ करके, सफाई से तहाकर एक कुर्सी पर रखे हुए हैं। जल्दी से उन्हें उठाकर, चारों ओर जैसे किसी भयंकर बात के डर से, चौकन्ने होकर देखते हुए वह उन्हें पहनने लगा। उसका रोंयेदार खालवाला कोट, टोपी और पीले दस्ताने एक दूसरी कुर्सी पर रखे हुए थे। वह बिना किसी को देखे खिसक जाना चाहता था। लेकिन अचानक दरवाजा खुला और सेल्डोनीमोव की बूढ़ी माँ एक मिट्टी का बेसिन और जग लिये अन्दर आयी। उसके कंधे पर एक तौलिया लटक रहा था उसने बेसिन को नीचे रख दिया और उससे कहा कि वह बिना किसी तकल्लुफ़ के पहले हाथ-मुँह धो ले।

'इससे काम नहीं चलेगा, बत्युश्का (अब्बाजान), तुम हाथ-मुँह जरूर धो लो, बिना हाथ-मुँह धोये तुम नहीं जा सकते !" उसकी हिचकिचाहट को देखकर उसने अनुरोध किया।

उस समय ईवान ने अपने प्रति स्वीकार किया कि यदि संसार में कोई एक व्यक्ति ऐसा है, जिसके सामने उसे कोई शर्म नहीं और जिससे उसे कोई भय नहीं, तो वह यह बूढ़ी औरत है। तब उसने हाथ-मुँह धोया। एक ज़माने बाद, अपने जीवन के कठिन क्षणों में जब वह इस जागरण की सभी परिस्थितियों-द्वारा उत्पन्न अंतःकरण की ऐंठनों को याद करता, तो इस मिट्टी के बेसिन, ठंडे पानी से भरे हुए चीनी के इस जग, जिसमें बर्फ के टुकड़े तैर रहे थे, गुलाबी कागज में लिपटी अंडाकार, उभरे अक्षरों वाली साबुन की इस टिकिया (जिसकी कीमत जरूर पंद्रह कॉपेक होगी और जो प्रत्यक्ष ही दुलहिन के निमित्त थी, लेकिन जिसे ईवान को उपयोग के लिये देना पड़ा था) और अपने बायें कंधे पर बूटेदार रेशमी तौलिया लिये अपने पास खड़ी यह बूढ़ी औरत भी उसके सामने आती।

ठंडे पानी ने उसे ताज़ा कर दिया। उसने हाथ-मुँह पोंछे और बिना एक शब्द कहे, बिना इस दयामयी को धन्यवाद दिये, उसने टोपी उठायी, सेल्डोनीमोव की माँ-द्वारा दिया हुआ कोट कन्धों पर फेंका और गलियारे और रसोई के रास्ते से, जहाँ पहले ही से बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ कर रही थी और रसोई-दारिन अपनी तिनकों की चटाई पर लोभ-भरी उत्सुकता के साथ उसे देखने को उठ बैठी थी, जल्दी जल्दी बाहर निकल गया। आँगन से होकर वह सड़क की ओर भागा और गुज़रती हुई एक मामूली गाड़ी में घुस पड़ा।

सुबह कुहरेदार थी, जमा हुआ पीला कुहरा घरों के चारों ओर लटका हुआ था और हर चीज़ को धुँधला रहा था। ईवान ने अपने

कालर उठा लिये। उसे लग रहा था जैसे हर आदमी उसकी ओर तक रहा है, जैसे हर आदमी उसे जानता है, जैसे सब जानते हैं कि सेल्डोनीमोव के घर......

आठ दिन तक वह घर से बाहर न निकला और न दफ्तर में दिखाई पड़ा। वह बीमार था, कष्टसाध्य रोग से, लेकिन उसका रोग शारीरिक से अधिक नैतिक था। उन आठ दिनों में उसने पूरे जीवन का नरक भुगत लिया और इसमें कोई संदेह नहीं कि वे आठ दिन दूसरी दुनिया में उसके नाम जमा रहेंगे। ऐसे भी क्षण आये, जब उसने साधू हो जाने की सोची—हाँ ऐसे भी क्षण आये, क्योंकि उसकी कल्पना ने इस दिशा की ओर तेज़ी से मुड़ना शुरू कर दिया था। पृथ्वी के गर्भ के शान्त संगीत; खुले हुए ताबूत,नीरव निर्जन कोठरी, जंगल या गुफ़ा के जीवन के छाया-दृश्य उसके सामने आते, लेकिन ज्योंही वह स्वप्न से जगता, तुरन्त स्वीकार करता कि यह सब बेहूदा, व्यर्थ और बात को बढ़ा-चढ़ा कर देखना है और उसे इसके लिए शर्म आती। फिर उस शर्म और उसकी व्यर्थता के सम्बन्ध में नैतिक हमले शुरू होते। पर तुरन्त जैसे उन सबको जीतकर, जला कर उसकी आत्मा से फिर शर्म फूट पड़ती, जो सब-कुछ बिगाड़ कर रख देती। उसके दिमाग में जैसे ये तरह-तरह की तस्वीरें उभरतीं, वह कांप उठता। लोग उसके बारे में क्या कहेंगे? लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे? वह फिर अपने दफ्तर में कैसे प्रवेश करेगा? किस तरह की फुसफुसाहटें पूरे साल—दस साल—बल्कि पूरे

जीवन भर उसका पीछा करेंगी ? उसके सम्बन्ध में यह हास्यास्पद कहानी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहेगी। ऐसे भी क्षण आते, जब वह भीरुता की ऐसी स्थिति पर पहुँच जाता कि तुरन्त सेमेन के यहाँ जाने, उससे माफ़ी माँगने और उससे मैत्री की भिक्षा चाहने तक को तैयार हो जाता। वह अपने प्रति भी न्याय न करता, सब दोष अपने ही पर मढ़ लेता। वह अपने लिए (अपनी रक्षा के लिए) कोई बहाना न ढूँढ पाता और ऐसा करने पर वह फिर शर्मिन्दा हो जाता।

उसने तुरन्त नौकरी से त्यागपत्र देकर, कहीं शान्त एकान्त में रह, अपने को मानव जाति के सुख के निमित्त समर्पित करने की भी सोची। बार-बार उसके मन में आता कि जो हो, एक बात उसे ज़रूर करनी चाहिए, वह यह कि अपने सब परिचितों को बदल दे, और यह काम इस तरह करे कि उसकी सब स्मृतियाँ जड़ से नष्ट हो जायँ। लेकिन तभी दूसरा विचार आता कि यह सब बेकार है, कि अपने मातहतों के साथ दुगनी सख़्ती सब बातें ठीक कर सकती है। यह दूसरा विचार धीरे-धीरे उसके मन में बसने लगा। उसे फिर आशा बंधने लगी और उसका साहस वापस आने लगा। आखिर आठ दिनों की शंका और यातना के बाद उसे यह लगा कि यह अनिश्चितता अब उससे अधिक नहीं बर्दाश्त हो सकती, और एक सुहानी सुबह उसने दफ़्तर जाने का फैसला कर लिया।

घर में बैठे उसने हज़ार बार सोचा था। उसने हज़ार बार अपनी कल्पना में वह चित्र खींचा था कि जब वह दफ्तर में प्रवेश करेगा,

निश्चय ही दोअर्थी, श्लेषात्मक, फुसफुसाहटें सुनेगा, श्लेषात्मक चेहरे देखेगा और उसे निन्दापूर्ण मुस्कानों का सामना करना पड़ेगा। यथार्थ में जब यह कुछ भी न हुआ, तो वह बड़ा चकित रह गया। आदर के साथ उसका स्वागत हुआ, हर आदमी ने उसके सामने सिर झुकाया, हर आदमी गम्भीर रहा और अपने काम में लगा रहा। अपने निजी कमरे में पहुँचते-न पहुँचते उसका हृदय सुख से भर गया।

तुरन्त उसने काम देखना—रिपोर्टें और व्याख्याएं सुनना और निर्णय देना—शुरू कर दिया। उसे लगा कि उसने उस सुबह जितना ठीक तर्क किया या जितने बुद्धिमत्तापूर्ण या व्यावसायिक ढंग के निर्णय दिये, उतने उससे पहले कभी भी न दिये थे। उसने देखा कि लोग उससे संतुष्ट हैं, कि लोग उसके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बात को जान लेने वाला भी उसके मातहतों के व्यवहार में कोई अन्तर न पाता।

सब कुछ शान से चलता रहा।

अन्त में पेत्रोविच काग़ज़ों का बंडल लिये हुए प्रगट हुआ। उसके आते ही ईवान के दिल में क्षण भर के लिए कुछ चुभन-सी हुई, लेकिन केवल क्षण भर के लिए! उसने पेत्रोविच की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया, बड़े महत्वपूर्ण ढंग से बोला, उसे बताया कि बातें कैसे तय की जायें और करने के तरीके की व्याख्या की। उसे सिर्फ यही ख्याल हुआ कि पेत्रोविच की ओर जरूरत से ज्यादा देखने से उसने अपने को बचाया, या यह कहना बेहतर होगा कि पेत्रोविच ही उसकी ओर देखने से डरता रहा। आखिर पेत्रोविच ने अपना काम खत्म किया

और कागज़ समेटने लगा।

"एक और प्रार्थना है," उसने सूखे गले से कहा, "क्लर्क सेल्डोनीमोव ने आवेदन किया है कि उसका तबादला...विभाग में...हिज़ एक्सलेंसी सेमेन ने उसे एक जगह देने का वादा किया है। वह योर एक्सलेन्सी से दयालुतापूर्ण सहयोग की प्रार्थना करता है।"

"ओह! तो वह तबादला चाहता है," ईवान ने कहा और अनुभव किया कि उसके दिल पर से एक भारी बोझ हट गया है। उसने पेत्रोविच की ओर देखा और उस क्षण उनकी आँखें चार हुईं।

"क्यों नहीं...क्यों नहीं...जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अपना..." ईवान ने जवाब दिया, "मैं तैयार हूँ..."

निश्चय ही पेत्रोविच खिसक जाने को उत्सुक था, लेकिन अचानक ईवान ने सज्जनता के आवेश में बोलने का निश्चय कर लिया। उसे फिर प्रेरणा मिली थी!

"उससे बोलो," उसने सीधे पेत्रोविच की ओर अर्थ-भरी गहरी दृष्टि से देखकर कहा, "सेल्डोनीमोव से कहो कि उसके साथ मेरा कोई द्वेष नहीं, कि मैं उसका कोई नुकसान नहीं चाहता! इसके उल्टा मैं सब-कुछ भूल जाने को तैयार हूँ, हर बात भूल जाने को...हर बात..."

पेत्रोविच के आश्चर्यजनक व्यवहार से अचानक चौंक कर ईवान चुप हो गया। वह (पेत्रोविच) एक समझदार आदमी, किसी अनजान कारणवश एक महामूर्ख-सा बन गया। अंत तक ईवान की बात सुनने के बदले, वह शर्म से लाल हो उठा, मूर्खता की आखिरी सीमा तक शर्मा कर लाल हो उठा, और जल्दी में, बल्कि कहा जाय तो अभद्रता

के साथ हल्के-हल्के आगे को बार-बार सिर झुकाता हुआ, पीछे-ही-पीछे कदम रखता दरवाज़े की ओर जाने लगा। उसका अंग-अंग देखने से मालूम हुआ कि उसकी सिर्फ यही कामना थी कि धरती में गड़ जाय! अधिक ठीक-ठीक कहें तो यह कि अपनी डेस्क पर पहुँच जाय!

जब ईवान अकेला रह गया, तो एक अव्यवस्थित मनः-स्थिति में कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। आईने में उसने देखा, लेकिन उसे कुछ भी दिखायी न दिया। पेत्रोविच की मूर्खता पर वह क्रोध से लगभग अंधा हो गया।

'नहीं! सख्ती, सिर्फ कड़ी सख्ती!' करीब-करीब बेहोशी में वह अपने-आप फुसफुसाया। लेकिन दूसरे क्षण उसके मुँह पर—एक कान से दूसरे कान तक—लाली दौड़ गयी। वह अपने ही से शर्मिन्दा हो उठा। अपनी आत्मा पर उसने एक भारीपन महसूस किया, ऐसा कि उसने आठ दिनों की बीमारी के सबसे अधिक असह्य क्षणों में भी महसूस न किया था।

'कसौटी पर मैं खरा नहीं उतरा'—उसने अपने-आप कहा। और जैसे एकदम परास्त होकर वह कुर्सी में धँस गया।

मेरा बेटा मेरा दुश्मन

[अब्बास की कहानियों का नवीन-तम-संग्रह]

कुछ लोग कहते हैं अब्बास पत्रकार पहले है और कहानीकार पीछे, कुछ उसे पहले कहानीकार समझते हैं और बाद को पत्रकार, जिन्होंने उसका सफल फ़िल्म 'अनहोनी' देखा है, वे उसे सबसे ऊपर फ़िल्मकार मानते हैं।

वास्तव में अब्बास सब कुछ है—वह पत्रकार भी है, फ़िल्मकार भी और कहानीकार भी। उसके पत्रकार का योग उसके कहानीकार को सदा मिलता है और उसके कथाकार का पत्रकार को। ब्लिट्ज़ का अन्तिम पृष्ठ जो अब्बास हर हफ़्ते लिखता है, इसी कारण कहानी-का-सा रोचक होता है और इसी कारण उसकी कहानियां अपूर्व सामाजिकता लिये हुए होती हैं।

मेरा बेटा मेरा दुश्मन—पत्रकार, फ़िल्मकार, कहानीकार 'अब्बास' की उन कहानियों का अपूर्व संग्रह है जिसमें समाचारों की-सी-ताज़गी, फ़िल्मों की-सी दिलचस्पी और उत्कृष्ट कला-कृतियों-का-सा स्थायित्व है।

मेरा बेटा मेरा दुश्मन—की कहानियाँ आप समाचार पत्रों की तरह पढ़ कर फेंक नहीं देते और भूल नहीं जाते, वरन् ऊँचे दर्जे के फिल्मों की तरह वे फिर फिर आपकी आँखों के आगे आती रहती हैं और अपनी याद आपको दिलाती रहती हैं।